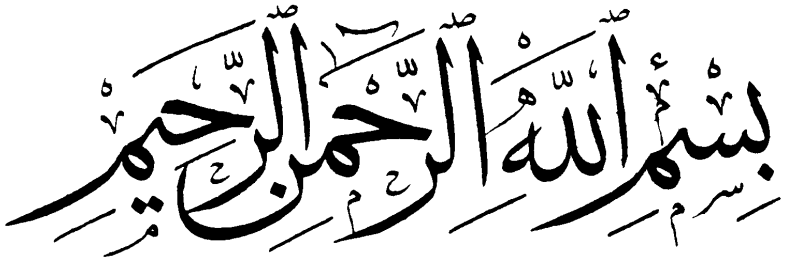

कुरआन और इल्म (साइंस)

यतीम वो नहीं जिसके माँ-बाप मर गए हो : बल्कि यतीम वो है जिसको कुरआन और इल्म हासिल न हो. - (कौले रसूल-ए-खुदा (स.अ))

लेखक

(नुसरत आलम शेख)

एहम अलफ़ाज़

हमारी यह किताब इल्म से लबरेज़ है जो की कुरआन की रौशनी में है जो अल्लाह पाक ने हमे आज से तकरीबन १४०० साल पहले ही हमारे नबी -ए- करीम (स.अ) पे उतारी थी. इस किताब में हमने तमाम दुनियावि इजादें और उनके एक्सपेरिमेंट जो आज तक चल रहे है उन्ही को लिखा है. और हमारा कोई ऐसा मकसद नहीं जिससे किसी इल्म वाले को या किसी साइंटिस्ट को या किसी धर्म के मानने वालो या उनकी धार्मिक आस्था को ठेस पोहंचे.

यह किताब आज कल के पढ़े लिखे नौजवानों के लिए है और खुसूसन उनके इल्म को और मज़बूत करने के लिए ही लिखी है. आज साइंस को पढ़कर कुरआन को समझना और आसान हो गया क्युकी साइंस कुरआन की हर आयत को सही साबित कर रही चाहे नमाज़ के बारे में हो चाहे रोजों के बारे में हो या फिर चाहे दुनिया की कोई भी बीमारीयों के बारे में हो.

आपका

(हज़रत नुसरत आलम शेख)

कुरआन और इल्म (साइंस)

इस किताब के जरिये हम सभी पढे लिखे और आम मुसलमानो को यह बताने की कोशिश कर रहे कि किस तरह सायन्स्दाँ (सायन्टिस्ट) कुरआन से इल्म हासिल करके उसे अमली जामा पहना कर अपनी खुद की इजाद का झूठा प्रोपोगेन्डा कर रहे है।

इसी सिलसिले में हम आपको कुरआन और इस्लाम के पैंगम्बरों और इमामो की उन रिवायतों को लिखकर खुलासा कर रहे है जिसको यह सायन्स्दाँ अपनी कामयाबी कहते हैं दरहकीकत यह कुरआन और इस्लामी दानिशवरों की नक्ल है।

दुनियाँवी सायन्स्दाँ ने इल्म (सायन्स्) को छः शाखाओं में बाँटा है जो इस तरह है:

१. इल्मे कीमिया (केमेस्ट्री)

२. इल्मे र्ताबय्यात (फिजिक्व्स)

३. इल्मे हैवानात (जूलॉजी)

४. इल्मे नबातात (बॉटनि)

५. इल्मे जमादात (मिनरल्स)

६. इल्मे हयातियात (बायोलॉजी)

इल्मे कीमिया में हर तरह के अनासिरों (ऐलिमेंटस्) जैसे सोना, चांदी, ताँबा, ऑक्सीजन , कार्बन, हाइड्रोजन वगैरह और मिक्सचरों (यौगिक) पानी, हवा, आग, मिट्टी, तेल वगैरह की मालूमात करते है।

इल्मे कीमिया में खुसुसन उन पाँच बुनियादी मिकसचरों का मुताला करते है

१. पानी : यह मिकस्चर है जो कि दो अनासिरों ऑक्सीजन और हाइड्रोजन से मिलकर बना है।

२. हवा : यह भी नौं अनासिरों ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, कार्बन, ओझोन, नाइट्रोजन, सल्फर वगैरह से बना मिकस्चर है।

३. आग : यह भी कई तरह के अनासिरों (तत्वों) जैसे, कार्बन, हाइड्रोजन, आँक्सीजन से बना मिकस्चर।

४. मिट्टी : यह भी एक तरह का मिकस्चर है जो कार्बन, सोना, चाँदी, लोहा, कॅल्शियम, सिलिकॉन से बना है।

५. आकाश : यह तमाम अनासिरों के जर्रो से बना मिकस्चर हैं।

गैर कौमें जेसे हिन्दु कौम के ग्रन्थो में और जितने भी बडे – बडे ऋषि मुनि पंडित सभी इस बात की गवाही देते हैं कि जब कोई हिन्दु इन्सान मर जाता है तो पंच तत्व में विलीन कर देना चाहिए यानी मरे हुए जिस्म को आग के सुपुर्द कर देना चाहिए। जब इन लोगो से मैंने पूछा की वह कौन से पंच तत्व हैं तो मुझे बताया गया हवा, पानी, मिट्टी, आग और आकाश।

आज के दौर में यह बात बिल्कुल साफ हो चुकी है की हवा कोई तत्व नही है, बल्कि नौं तत्वो का बना मिकस्चर है। अगर हम हजरत ईसा (अ.स) से पहले फिलॉसफर जनाब अरस्तू की बात पर गौर करें तो अरस्तु ने हवा को तत्व की संज्ञा दी थी इसी रिवायत से अरस्तू के इल्म का पता लगता है। जब की इस्लाम के दानिशवर और रहनुमा **हजरत इमाम जाफर सादिक (अ.स)** की बात पर गौर करे तो आपने कहा था हवा कई तरह के अनासिरों (तत्वों) से मिलकर बनी है और सभी हिस्से सांस लेने में काम आते हैं और (हवा में से एक टुकडां को खालिस हो उसको अलग कर दिया जाए तों यह लोहे को जला सकता हैं।आपने इस टुकडे (अनासिर) का नाम नहीं बताया)।

एक अंग्रेज सायन्सदाँ जिसका नाम **प्रिस्टले** था उन्होने इस खास अनासिर (तत्व) का नाम ऑक्सीजन बताया लेकिन वह इसकी खासियत नहीं बता सके। यह वाकिया सन **१७५० ई.**का है। तकरीबन **४५ साल** बाद एक अग्रेज सायन्सदाँ ने **१७९५ ई.** में इसका नाम **ऑक्सीजन** बताया और इसकी खासीयत भी गिनायी।

ऑक्सीजन एक यूनानी लफज है जिसका मतलब खट्टी करने वाली हवा।

अगर हवा में से सिर्फ ऑक्सीजन निकालकर फेफडो की पहुँचायी जाऍ तो लगातार पहुँचते – पहुँचते यह फेफडो का टेमप्रेचर इतना बढा देगी कि फेफडे जल जाएगे और सभी हैवानात बीमार होकर मरते रहेंगे क्योंकि **हजरत इमाम जाफर सादिक (अ.स)** ने पहले ही कहा है कि खालिस टुकडा (तत्व) इतना तेज होता है की लोहे को

जला दे इसलिए अगर किसी बीमार शख्स को ऑक्सीजन लगातार देते रहे तो वह घबराकर उसको निकालने की कोशिश करता है।

यानि अब यह बात साबित हो चुकी है की हवा में आक्सीजन के अलावा और भी अनासिर मौजूद है इसी वजह से इन्सान ताजी हवा ज्यादा पसन्द करता है।

हवा में सबसे भारी अनासिर ऑक्सीजन है अगर इसे कार्बन, हाइड्रोजन, हीलियम वगैरह न संभाले तो यह जमीन पर उगने वाली छोटी वनसपतियों पर बैठ जाए और यह सभी जल जाए क्योंकि पौधों को जिन्दा रहने के लिए कार्बन डाई ऑक्साइड की जरुरत पड़ती है यानि इन्सान और जानवर हवा अन्दर लेते है तो सभी अनासिर एक साथ पहुँचते हैं और यह मिकस्चर जिस्म में जाकर अलग – अलग अनासिरों में बंट जाता है। ऑक्सीजन का काम खून में पेवस्त होना है और जिस्म के हर सेल में पहुँचना है। ओझोन इस हवा की निगरानी करती है और ओझोन जब देखती है की सभी अनासिर अपना काम बराबर कर रहे तो ओझोन वापस निकल जाती है और कार्बन डाई ऑक्साइड भी शरीर के बाहर निकल कर पौधों तक पहुँच जाती है। कुरआन में अल्लाह तआला ने जिक्र किया है ***पारा नं: ९ आयत नं : १७२ सूरे अराफ कि मैंने (अल्लाह) आदम के बेटो की पीठो से उनकी औलादों को निकाला था और उनपर गवाह बना दिया। तो यही हर जानदार जिस्म के लिए भी है और पौधो के लिए भी है*** ।

आजकल का दौर तरक्की याफ्ता है इसके बावजूद इन गैर कौमों ने अपनी गलती नहीं सुधारी जब कि इसका खुलासा कुरआन में मौजूद है और सायन्स ने इसे साबित भी कर दिया लेकिन इसके बावजूद दुसरों को दकियानूस कहने वाले खुद दकियानूसी काम कर रहे हैं जबकि ये साबित हो चुका है कि आग, पानी, हवा, मिट्टी व आकाश सब यौगिक हैं फिर भी अपने पूर्वजों की गलती को मानने को तैयार नहीं। ***कुरआन मे इसलिए अल्लाह ने पारा नं.२ सूरे बकरा की आयत नं. १७१ में फरमाया ये बहरे हैं, गूंगे है, अंन्धे है, पस वे समझ नहीं सकते बेशक इन्हें मालूम हो चुका है फिर भी सच से मुँह मोडते है***।

पौधों में खाना इस तरह बनता है

$$6CO_2 + 6H_2O \xrightarrow[\text{क्लोरोफिल}]{\text{सुरज की रौशनी}} \underset{\text{(ग्लूकोज)}}{C_6H_{12}O_6} + 6O_2$$

अल्लाह तआला फरमाता है कि जब कयामत का दिन होगा तो समुन्दर में आग लग जायेगी क्योंकि उस दिन पानी में मौजूद ऑक्सीजन और हाइड्रोगन अलग – अलग हो जायेंगे और इसका (पानी) एक मॉलिक्युल जब जलेगा तो **6667 oC** के बराबर टेम्प्रेचर पैदा होगा और जब पानी के बेशुमार कण अलग – अलग हो जाएँगे तो कितने करोड डिग्री का तापमान (हरारत) उस दिन होगा। इसलिए लोग कहते हैं कि सूरज सवा नेजे पर होगा क्योंकि इतने फासले पर सूरज में इतनी ही हरारत (तापमान)होगी। इसका जिक्र *कुरआन के* ***पारा नं: ३० सूरे तकबीर आयत नं. ६ में अल्लाह इस तरह फर्माता है – व अजिल बिहारु सुज्जिरत*** *तरजुमा* ***और दरिया में आग लग जायेगी।***

$$2H_2O \quad 2000^0C \quad 2H_2+O_2$$

हाईटम्प्रेचर

ऊपर दिये गये सबूतों (दलीलों) ने यह साबित कर दिया की इन्सान पंच तत्वों का नहीं बना है बल्कि अनेक तत्वों से मिलकर बना है लेकिन अब यह देखना है की अल्लाह इन लोगों को कब तक अन्धेरे में रखेगा, या यह खुद कब तक अन्धेरे में रहना पसन्द करेंगे।

अब हम आसमान (आकाश) की बात करते है कि आसमान किस तरह के अनासिरों से मिलकर बना है तो मालूम हुआ, यह तो किसी तरह का यौगिक (मिक्स्चर) भी नहीं है। तत्व (अनासिर) तो दूर की बात है यह तो जमीन से निकलने वाली किरणे है जो सूरज की रोशनी की वजह से तितर – बितर (स्कॅटर्ड) हो जाती है कि नीले रंग की शक्ल में आसमान लगता है। लिहाजा पाँचवे तत्व का आसमान में विलीन होना कतई गलत है। हाँ, हम यह मान सकते हैं कि रुह (आत्मा) जो की जिस्म से परवाज कर चुकी है वह आसमान के उस पार **आलमे अरवाह (बर्जख)** में जा पहुँचती हैं। इसका आसमान में विलीन (मिलन) होने की कोई दलील नहीं है।

इस तरह पाँचो नाम (आग, हवा, पानी, मिट्टी, आकाश) में कोई भी तत्व नहीं है यह ऊपर साबित कर दिया है और अगर अभी भी इन गैर मजहबों को यकीन नही है इन पाँचो मिक्स्चरो की जाँच कर सकते है।

इसी मौजू को आगे बढाते हुए हम दुनियाँ की बात करते हैं कि दुनियाँ और हरारत (तापमान) में कौन पहले बना? यह सवाल आज तक नहीं सुलझ पाया । सायन्सदाँ की पहली थ्योरी के मुताबिक हरारत पहले बनी

लेकिन बाद में यह थ्योरी बनायी गयी की दुनियाँ सबसे पहले बनी और उसके बाद हरारत (तापमान) बनी और आज तक सायन्स् के माहिरों की एक राय नहीं बन सकी है।

अब हम कुरआन और सायन्स की रौशनी में यह बताने जा रहे हैं कि कौन पहले बना और कौन बाद में बना। अल्लाह तआला ने अपने नूर के दो टुकडे किये तो दुसरा टुकडा अल्लाह के चारो तरफ चक्कर काटने लगा जो कि एक मोती की शक्ल में था और जब इस मोती पर अल्लाह ने अपनी जलाली निगाह डाली (जलाली निगाह का मतलब होता है गुस्से वाली और गुस्सा मतलब गर्मी या हरारत (तापमान)) तो यह मोती पिघलने लगा और पिघल कर पानी की शक्ल इख्तियार कर ली।

इस तरह इस्लामी थ्योरी ने यह बताया की गर्मी (हरारत) पहले पैदा हुई। अब यह देखना है कि कौन सा तत्व इस हरारत का ज़िम्मेदार था और साथ में हल्का भी था तो मालूम हुआ की इस कायनात (दुनियाँ) में सबसे हलका तत्व जो की गैस की शक्ल में मौजूद है उसे हाइड्रोजन कहते है। और सायन्स् के माहिर भी यह बता जान चुके हैं कि हाइड्रोजन सबसे गरम और हलकी गैस है इस तरह खुदा की जलाली निगाह में हाइड्रोजन की शक्ल में हरारत मौजूद थी जो की मोती पर पड़ते ही मोती को पानी-पानी कर दिया। अब हमें यह भी मालूम हुआ की पृथ्वी पर सबसे पहले पैदा होने वाला अनासिर (तत्व) हाइड्रोजन ही था। हाइड्रोजन को सायन्सदानों ने **"H"** के सिम्बल् में दिखाया है।

अब हम इस्लाम के बिल्कुल शुरु मे पहुंचे की दुनिया को अल्लाह ने अपने हबीब के लिए बनाया तो यह बात अब साबित होती है कि सायन्सदानो ने हबीब ना लिखकर उसको शॉर्ट फॉर्म में **H** लिखकर दुनिया वालो को हाईड्रोजन के नाम से पहचान करवायी ।

अब हम अगर इस बात की और गहराई में जाए की दुनिया बनाने के पहले सिर्फ अल्लाह ही अल्लाह था लेकिन अल्लाह को अल्लाह कैसे पहचनवाया जाए इसके लिए अल्लाहतआला ने अपने नूर के दो टुकडे किये और जैसे ही यह अलग हुआ इसके चारों तरफ ऑर्बिट में गश्त लगाना शुरु हो गया । अगर किसी चुम्बक के दो टुकडे कर दिये जाये तो चुम्बक के S आर N इलाहिदा होते ही N और S अपने आप फौरन बन जाता है यानि

दोनों टुकड़ों में कोई फर्क नजर नहीं आता है उसी तरह हबीब यानि सायन्स की बोली में **H** में पाये जानेवाला एक जर्रा Pऔर एक जर्रा E इलेक्ट्रॉन बना जिसे हम इस तरह दिखा सकते है ।

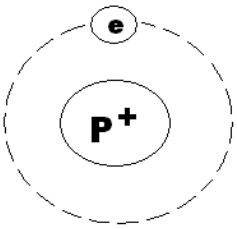

हाईड्रोजन अटम **H**

इस तरह प्रोटॉन के चारों तरफ इलेक्ट्रॉन चक्कर लगा रहे है यानि गर्दिश कर रहे है । इलेक्ट्रॉन पर (-) नेगिटिव्ह चार्ज मौजूद है जब की प्रोटॉन पर (+) पॉजिटीव्ह चार्ज मौजूद होता है । प्रोटॉन अपनी जगह पर महदूद है इसके अलावा हम यह भी जानते है कि जब भी किसी तत्व (अनसिर) को दूसरे अनासिर से मिलाना होता है तो ही अलेक्ट्रॉन (ग्रीक जबान में ए के बजाये अ से दिखाते है) मदद करने के लिए भेजे जाते है जैसे पानी में देखिये –

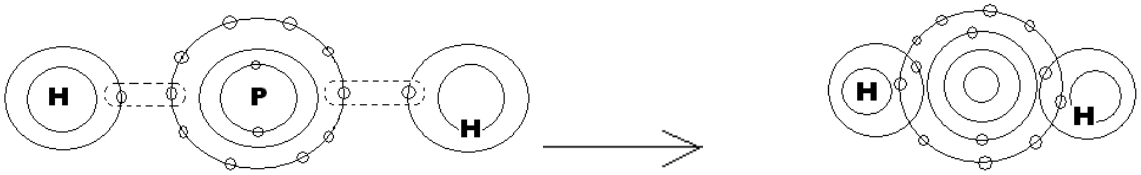

H_2O

(H_2O) पानी का मॉलिक्यूल

इस तरह हमने देखा की इलेक्ट्रान जो कि आर्बिट में चक्कर लगा रहे है वही मदद के लिए इस्तेमाल होते है यानि कभी जान है या पहुँचना है तो इलेक्ट्रॉन ही मदद करते है । प्रोटॉन अपनी जहग से नही हिलते या मदद नहीं करते अगर हम इलेक्ट्रीक करन्ट में देखे तो इलेक्ट्रॉन करन्ट में देखे तो इलेक्ट्रॉन ही धारा दौड़ते है ।

अब अगर हम इलेक्ट्रान को “Ahmed” और प्रोटॉन को पालनेवाला (यानि अल्लाह) नाम दें तो सायन्स ने यह साबित कर दिया के अल्लाह महदूद है यानि पालनेवाला जिसका नाम प्रोटॉन रखा और उसी तादाद में इलेक्ट्रॉन यानि अहमद (ह: मोहम्मद स.अ.स.) गर्दिश कर रहे है और दोनों के बीच बॅलन्स बराबर बना हुआ है ।

इसमें एक खास बात और साफ है कि प्रोटॉन जो की अपनी जगह पर महदूद है और इसका मतलब होता है (पहले) प्रथम और खुदा पहले है और इलेक्ट्रॉन बाद में बना यानि अहमद (A) जो कि बनते ही चक्कर लगाने लगा यानि इबादत में लग गया था एक पल भी नहीं ठहरता ।

गैर मजहबों में ऐसा कहा जाता है की, जब हम ईश्वर को मदद के लिए पुकारते है तो ईश्वर खुद आकर हमारी मदद करता है । अगर इनसे इस बात का सबूत मांगे तो नहीं दे सकते लेकिन इस्लाम ने यह साबित कर दिया कि ईश्वर (खूदा) अपने बन्दो की मदद करने के लिए अपने पैगम्बरों (सेवकों) को भेजता है जो की इलेक्ट्रॉन की शक्ल में खुदा की चारों तरफ तवाफ कर रहे है जैसे की हमने देखा की पानी (H2O) में इलेक्ट्रॉन ही आपस में मिलकर एक दुसरे की मदद करते है प्रोटॉन यानि (पालनेवाला) खुद अपनी जगह पर महदूद है वह कभी रिॲक्शन में हिस्सा नहीं लेता है ।

लिहाजा यह बात बिल्कुल बेबुनियाद है कि ईश्वर अपने बन्दों की मदद के लिए खुद हाजिर होता है। ईश्वर (पालनेवाला यानि प्रोटॉन) अपनी जगह जहाँ पर वह एक बार विस्थापित (महदूद) हो गया उस जगह से सिर्फ अपने हुक्म भेजता है और उसी के मुताबिक हर पैगम्बर (सेवक) को उस बतायी हुई राह पर चलना पड़ता है।

अब यहाँ थोडा बहुत अल्लाह के हुक्म और अल्लाह के बनाए हुए इलम की बात करते हैं जैसे की अल्लाह ने हरारत (तापमान) बनाया और यह आज तक मौजूद है जो कि सूरज की शक्ल में गर्दिश कर रहा है यानि वह हरारत जो अल्लाह की जालाली निगाह से निकली जिससे मौजूद है यही हाइड्रोजन आज सुरज में मौजूद है जो कि करोडो डिग्रीसेण्टीग्रेट की हरारत दे रहा है। लेकिन इन्सानी जिस्म अल्लाह ने नहीं बनाया यह बात सुनने में काफी अटपटी लग रही होगी और शायद कुफ्र भी, लेकिन इसकी दलील यह हैं की जो भी चीज अल्लाह बनाता है वह कयामत से पहले तबाह नही हो सकती इसलिए इन्सानी जिस्म अगर अल्लाह ने बनाये होते तो इनका मिटना मुमकिन ही नहीं था। अब हम यह बात भी बिल्कुल साफ कर रहे हैं कि अल्लाह ने आदम को खुद नहीं बनाया था बल्कि फरिश्तों को हुक्म दिया, जाओ जमीन से हमवार और नाहमवार मिट्टी लाओ और उसको पाक करो फिर उसका खमीर बनाओं अब पुतला बनाओ (इस तरह अल्लाह ने हुक्म दिया और आदम का पुतला बनाकर तैयार हो गया)। इसके बाद जैसे की कुरआन शाहिद है कि अल्लाह तआला ने अपनी बनाई हुई रुह डाली और आदम बोलने लगे। अब यह बात बिल्कुल साफ हो चुकी की अल्लाह की बनायी हुई रुह थी जोकि जिस्म को छोड़ने के बाद भी फनाह नही होती जिन्दा रहती है और यह बात हर मजहब मानता है।

कुरआन के पारा नं. ३ सूरे बकरा की आयत नं.२८४ में अल्लाह तआला फरमाता है जो कुछ आसमानों में है और (जो कुछ) जमीन में है (सब) अल्लाह ही का है।

इस्लाम ने यह बात आज से १४०० साल पहले बयान कर दी थी लेकिन अब सायन्स के माहिर इस बात की तसदीक कर रहे है जैसे अगर हम आसमानों में उन छितरे हुए मॉलिक्यूल (ज़र्रात) की जाँच करे जो की जमीन पर भी मौजूद है तो उसमे भी न्युकिलियस के चारों तरफ इलेक्ट्रॉन चक्कर काट रहे हैं और प्रोटॉन अपनी जगह पर विराजमान है। आसमानो पर फैली हुई ओझोन भी ऑक्सीजन के तीन मॉलिक्युल से बनी होती है। जिस तरह जमीन पर मौजूद ओझोन ऑक्सीजन के तीन जर्रो से मिलकर बनी है अल्लाह के ९९ नामों में दो नाम ऐसे भी हैं जो कि अल्लाह की न्यूनतन स्थिति एवम् उच्चतम सिथित को बताते हैं। ***जैसे अल्लाह का एक नाम है या लतीफो इसका अर्थ है हे सूक्ष्मदर्शी***। अब हमें ऊपर दिये गये नाम में अल्लाह की निम्नतम सिफत दिखायी देती है या लतीफो आज से १४०० साल पहले कुरआन में लिखा गया। आज सायन्सदानों ने सुक्ष्मदर्शी को बना लिया। इसके जरिये छोटी चीजो की जानकारी हासिल होती है जो कि खुली आँखो से नही दिखती। आज हमारे जिस्म में बहने वाले खून में मौजूद वायरस जिसकी वजह से बड़ी – बड़ी बिमारियाँ पैदा होती है जिनका इलाज आज तक नही हो सका, इसलिए अल्लाह ताआला को सुक्ष्मदर्शी कहा जाता है कि वह छिपी से छिपी बातो को जानने वाला है यानि सुक्ष्मदर्शी का काम है जर्रे के अन्दर मौजूद इलेक्ट्रॉन और प्रोटॉन की मौजूदगी मालूम करना और वह किस तरह अपने दर्जे में रहकर चक्कर लगा रहे हैं।

कुरआन में अल्लाह ने फरमाया है कि हमें अपने अदना से अदना बनाई हुई मखलूक का खयाल है और हम उन्हें रिज्क पहुँचाते है। अल्लाह तआला की इस सिफत को पढकर इन सायन्स के माहिरों की अक्लो ने सुक्ष्मदर्शी को खोजा। इसीलिए कहा जाता है कि अल्लाह कण-कण में मौजूद है क्योकि हर कण प्रोटॉन से मिलकर बना होता है।

अल्लाह का एक नाम रब्बुल आलमीन है इसका मतलब होता है पूरे आलम का रब यानि इतना बड़ा जिसकी कोई हद नही सुबहानल्लाह। अल्लाह की यह सिफत भी आज से १४०० साल पहले इस्लाम ने बता दी थी। मतलब यह हुआ की अगर अल्लाह चाहे तो इतना बड़ा हो जाए और अगर चाहे तो इतना छोटा हो जाये जिसकी कोई हद नहीं।

जबकी गैर कौमें, जैसे हिन्दु कौम के मुताबिक ईश्वर बहुत विशाल है, जिसकी बड़ी – बड़ी आँखे, बडे – बड़े हाथ – पैर और एक नही सेंकडों हाथ पैर और बहुत लम्बा के आसमान के बराबर लम्बाई और वह भी इसलिए

की वह कुछ अपने हाथ पैर से करता है और वह सोता भी है, खाता भी है। तो यह है ग़ैर कामो का मसनवी खुदा जिसकी आज तक कोई दलील नहीं दे सके। अगर खुदा की यही खुभी होती तो जिस खुदा वन्दे कुद्दूस ने खुदा की यही खूबी होती तो जिस खुदा वन्दे कुद्दूस ने खुद कितने ही खतरनाक शैतान बनाये जो कि विशाल होते हैं और दिखने में बदुसुरत भी तो क्या फर्क रह जाता ईश्वर और शैतान की बनावट में और अगर इन कामो से ऐसे ईश्वर की सही तस्वीर माँगी जाए तो सैंकडों किस्म की तस्वीरें पेश कर देंगे, यानि एक रुप नही पेश कर सकते। इस कायनात में मौजूद जर्रान जिस में न्युक्लिअस के चारों तरफ इलेक्ट्रॉन चक्कर लगा रहे हैं और यह सूरज अपने परिवार (ग्रहों) के साथ आकाश गंगा के केन्द्र का चक्कर लगा रहा है। आकाश गंगा में कई करोड़ सुरज के परिवार हैं इस तरह १ करोड़ आकाश गंगा को एक निहारिका कहते हैं। वह पूरी निहारिका भी अपने केन्द्र का तवाफ कर रही है। अब तक तकरीबन १ करोड से ज्यादा निहारिकाओं की खोज हो चुकी है। तो यह है सूबुत रब्बुल आलमीन का, सुबहानल्ला !

इस्लाम जब इस कायनात में फैल रहा था तो उस वक्त जहालत का दौर था और लोगो ने कल्पना से अपने खुदाओ के बुत वगैरह बना रखे थे जिसका कोई भी मॉझी नही था। इसके बावजूद वह इन बुतों को पूजा करते थे और इन्ही बुतों से अपनी मन्नत माँगते थे तो उस दौर में अगर कुरआन की आयतों में सायन्स के मुताबिक इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, आक्सीजन, हाइड्रोजन का जिक्र करते तो लोग नही समझ सकते थे इसलिए अल्लाह ने कुरआन में इन अनासिरों का बन्द अल्फाजों में जिक किया कि कयामत के दिन पानी में आग लग जायेगी मतलब यह हुआ कि पानी में मौजूद अनासिर आग की तरह जलने वाले हैं और इस जुमले की जब तहकीकात शुरु हुई तो सबसे पहले इस्लाम के आला दानिश्वर और ***इमाम हजरत जाफर सादिक अ.स.*** ने इस तरह कहा पानी के अन्दर मौजूद एक टुकड़ा है अगर इसको अलग कर लिया जाए तो बहुत फायदेमंद साबित होगा हजरत ने इसका नाम और फायदा नहीं बताया।

गैर मजहबों के दानिशवरों ने पानी को अनासिर कहा। यह दानिश्वर **सुकरात** और **अरस्तु** थे और इन लोगों की वजह से तरक्की के रास्ते बन्द हो गये और कोई भी इनकी थीअरि के खिलाफ नही बोल सकता था।

इन गैर मजहबों के दानिशवरों की वजह से सायन्स की तरक्की काफी साल पीछे लुढक गयी लेकिन इस्लाम के दानिश्वरों की थीअरि को पढकर सायन्सदानों ने इस पानी को टुकड़ो में करने की कोशिश की और **२७ मई १७६६ ई.** को हेनरी ने हाईड्रोजन की खोज की और इसे " **अतिशगीर हवा** " कहा जिसका मतलब

होता है आग पैदा करनेवाली हवा और आज हाईड्रोजन से सबसे पावरफुल बम बन चुका है जिसे हाईड्रोजन बम कहते है यह बम हिलियम (He) के मरकज (नाभिक) को तोड़कर बनाया गया है ।

हाईड्रोजन का मतलब पानी बनाने वाली गैस अब एक बात बिल्कुल साफ हो गयी की इस्लामी दानिश्वर हः इमाम जाफर सादिक (अ.स.) ने पानी के इस टुकड़े को अलग करने का तरीका क्यों नही बताया था ? क्योंकि आप जानते थे कि आने वाली पीढीयाँ इसका गलत इस्तेमाल करेगी जो कि इन्सानी जमातों को खत्म करने में कोई कसर नही छोड़ेगी, क्योंकि इस्लाम हर उस हथियार के खिलाफ है जिससे बेगुनाह लोगों के दौर में सिर्फ उन्ही लोगों पर हमला किया जो लोग जंग करने आते थे, और निहथ्थे लोगों, बच्चों, बुढों, औरतों, बीमारों पर हमला ना करने की ताकीद थी ।

इस तरह इस्लाम में हथियार मौजूद होने के बावजूद उसका इस्तेमाल नहीं किया जबकि गैर कामों ने इस तरह के तबाहकुन हथियारों का इस्तेमाल किया और अपने को अमन (अहिंसा) का पुजारी कहते है । अगर मुस्लमान चाहता तो कब का इन बताहकुन हथियारों का सौदागर बन गया होता, लेकिन मुसलमान अल्लाहतआला की बनायी हुई शरीयतों पर चलनेवाला और मजहबे इस्लाम के तौर तरीको पर अमल करनेवाला और इन्सनियत को प्यार करनेवाला मजहब है ।

कुरान के पारा नं ३० में एक सुर: है जिसे सुरतुन्नाबीआ के नाम से जान जाता है इसकी आयत नं ६ और ७ में अल्लाह फर्माता है क्या हमने जमीन को फर्श नही बनाया ? और पहाड़ों को (उस पर) मेखे (कीले) नही बनाया ?

इस आयत का मतलब है की अल्लाहतआल ने जमीण बनायी और इस जमीन को बनाने के लिए अल्लाह रब्बुल इज्जत ने पानी को पैदा किया फिर इस पानी में बादे अकीम हवा को गुजारकर फेटने का हुक्म दिया यह हवा पानी में घुलमिलकर एक म्पोगे परत का रुप अख्तियार करने लगी और कई सौ बरस तक यह हरकत होती रही तो ऊपरी परत जमने लगी । लेकिन इस परत के नीचे मौजूद पानी की वजह से और पानी के थपेड़ो की वजह से ऊपरी परत हिलती रहती थी । इसको रोकने के लिए अल्लाह ने पहाड़ो को बनाकर इस जमीनी पर त पर किलों की तरह ठोक दिया इससे जमीन का हिलोरे खाना रुक गया तो इस तरह पृथ्वी ग्रह के फॉरमेशन में सबसे अहम हिस्सा पानी का हुआ कायनात में तो अब जितने भी ग्रह मौजूद है सभी में सबसे पहले पानी पहुँचा और इसी के जिरए जमीन की पैदाईश हुई और वह इस तरह साबित होता है कि **अल्लाह ने कुरआन में**

फर्याया है कि, जो कुछ भी आसमानों में है और जो कुछ भी जमीनो में है सब अल्लाह का बनाया हुआ है । इस आयत से एक बात बिल्कुल साफ है कि अल्लाह अपनी मखलूको, आपनी हर चीज जो की एक जैसी हो और वह इस कायनात में जहाँ भी मौजूद हो उनमें किसी भी तरह का भेद-भाव नहीं करता, इसलिए हम यह कह सकते है कि इस कायनात में जितने भी ग्रह मौजूद है सब पर पहले पानी पहुँचा और इसकी वजह से वहाँ झाँग बना और फिर जमीन ।

आज तक सायन्सदाँ यह बता पाने में असमर्थ है कि मंगल ग्रह पर पानी है कि नही, जबकि वहाँ पर पहाड़ों के मौजूद होने का जिक्र हो चुका है । कुरआन पहले ही बता चुका है कि जितने भी ग्रह है सब पर पानी मौजूद है ।

आजतक सभी यह मान कर चल रहे है कि चाँद भी एक ग्रह है । जबकि चाँद किसी सितारे का टूटा हुआ एक हिस्सा है जो कि आवारा की तरह भटक रहा था । और जब यह अर्थ (पृथ्वी) के ग्रॉविटि में आया और उसी वक्त से इसने पृथ्वी के चक्कर लगाने शुरु कर दिये । हम यह भी जाने है कि जितने भी ग्रह है सब में एक से ज्यादा चाँद मौजूद है जैसे की ज्यूपिटर में सबसे ज्यादा चाँद मौजूद है ।

अल्लाह रब्बुल इज्जत ने जितने भी प्लॅनेटस बनाये सबकी अपनी वजह है और सभी अल्लाह की ईबादत में लगे है और चक्कर काट रहे हैं । सुरज जो कि सबको रौशनी दे रहा है अल्लाह पाक ने इसे इतना बड़ा बनाया कि हम जिस दुनिया को विशाल समझते है ऐसे १०९ दुनियाँ मिल जाए तो सुरज का डायमिटर कहलाये यानि पृथ्वी ग्रह कुछ भी नही हम किस अंधेरे में खोये हुए है ?

सुरज (तारा) का हलका

सूरज पर अल्लाह ने करोड़ों की तादाद में हाईड्रोजन के पहाड़ बनाये है और यह पहाड़ वक्त-वक्त पर फटते रहते है । ऐसा ही एक पहाड़ १९८१ ई.में सुरज पर फटा जिसकी धमक इतनी तेज़ थी कि सूरज अपनी (axis) जगह पर हिल उठा था । आज सायन्स्टीस्ट यह पता लगा चुके है की हाईड्रोजन का एक छोटा सा

गोला इस पृथ्वी को नेस्तनाबूद करने के लिए काफी है जो अगर हम उस फटे हुए हाईड्रोजन के पहाड़ की गर्मी जो कि हम से करोड़ो मील की दूरी पर है जब धरती पर पहुँच जाएगी तो क्या हशर होगा अल्लाह बेहतर जाने ।

कुरआन में इसीलिए सुरे रहमान की आयत न: ३७ में अल्लाह फर्माता है फिर (कयामत के दिन) जब आसमान फटे और तेल की तलहट की मानिन्द लाल हो जाए ।

अल्लाहतआला का बनाया हुआ सूरज जिसे दुनियाँ के कोने – कोने में बसे लोग देखते और उसकी गर्मी को महसूस करते है । यही सुरज चाँद को भी अपनी हरारत और रोशनी से नवाजता है लेकीन चाँद में यही सुरज हर ६ घंटे बाद निकलता है इसलिए हर ६ घंटे बाद चाँद पर शदीद गर्मी और शदीद ठण्ड़ पड़ती है । इस सूरज के आलावा भी लातादाद सुरज और ग्रह मौजूद है लकिन वह एक दुसरे से इतनी दूर है कि एक की रोशनी दुसरे तक नहीं पहुँच पाती ।

अब हम गैर मज़हबो पर और उनके दानिश्वरों पर गौर करें तो अरस्तु और सुकरात का मत है कि सुरज एक देवता है जिस वजह से इसके अन्दर से प्रकाश निकल रहा है ।

हिन्दुओं के दानिश्वरों ने तो हद कर दी । इनके मुताबिक एक बार हिन्दुओं के बन्दर शक्ल हनुमान ने सुरज को मीठा फल समझ लिया तो हनुमान ने सूरज को अपने मुँह मे निगल लिया इस वजह से इस दुनिया पर अन्धेरा छा गया जितने भी देवता वगैरह थे सब के सब बहुत परेशान हुए और हनुमान के पास पहुँच कर उनसे दरख्वास्त करने लगे की मेहरबानी करके आप सुरज को अपने शरीर से आज़ाद कर दें वरना लोक वासियों को सदा (हमेशा) अन्धेरे में ही रहना पड़ेगा फिर हनुमान मान गये और उन्होने अपने बैतुलखला की जगह से सुरज को आजाद कर दिया इसी वजह से बन्दररो के मुँह और बैतुलखला की जगह लाल होती है ।

अब हम इनकी बातों पर यकीन करे तो कैसे, क्योंकि इन हिन्दु दानिश्वरों का एक मत यह भी है कि हनुमान ने शादी ही नही की यानि कुँवारे थे । तो जब उनका जीवन कुँवारा (ब्रहमचारी) गुज़रा तो उनके जिन बिना संभोग किये हुए कैसे दुसरे बन्दरों में पहुँचे ? इसका भी कोई जबाब नहीं है । इस तरह हम यह देख रहे है की उनके खूद के मत ही आपस में टकरा रहे है क्योंकि सायन्स की तरक्की आफ्ता रफ्तार यह साबित कर चुकी है कि बिना पीढ़ी के पढ़ाये माँ-बाप के गुण होने वाली औलाद के अन्दर मौजूद नही हो सकते, तो जब हनुमान ने शादी ही नही की तो उनके गुण दुसरे बन्दरों तक कैसे पहुँचे ? और कोई भी इन्सन हो या जानवर वह अपने समर्थ के हिसाब से ही किसी भी चीज को निगल सकते है उसके ऊपर नहीं । आजकल के बच्चे अगर इस कहानी को सुनें या पढ़े तो यही कहेंगे की इतनी बड़ी गप मुझे तो हजम नही हो रही है क्योंकि आज के बच्चे

भी जानते है की इतनी तरक्की कर चुकी सायन्स ने आजतक सुरज के करीब जाने की भी कोशिश नही की क्योंकि इसके अन्दर और चारों तरफ मौजूद हाईड्रोजन जो की आग उगल रही है तो ऐसी हालात में कैसे मुमकिन है कि हनुमानजी सुरज निगल सकते है । हाँ यह और बात है की हनुमानजी के वक्त सूरज एक टेनिस की गेंद के मानिन्द छोटा होगा । हिन्दू मजहब ने जनाब हनुमान के बारे में एक बात और बतायी की सूरज जो की इस मजहब के देवता है तो उन्होने जब यह देखा की हनुमान जी उनके (सुर्य) के करीब आ रहे तो सुर्य ने अपने को सिकुड कर छोटा कर लिया और हनुमान ने निगल लिया, जब की सायन्स यह साबित कर चुका है कि सुरज एक सख्त अनासिर (तत्व) से बना गोल शक्ल है और इसके चारों तरफ बेशूमोर डिग्री सेण्टीग्रेट तापमान (हरारत) मौजूद है ।

हमारा यह दावा है कि अगर इस पृथ्वी पर मौजूद कोई भी जानदार चाहे वह जानवरों में हो या इन्सानों में हो, सूरज को निगल जाता तो उसकी मृत्यु नामुमकीन थी यानी वह हमेशा जीवित रहता । क्योंकी आज सायन्स यह भी बता चुका है कि इन्सानी जिस्म १०० डिग्री सेन्ट्रग्रेड की हरारत को बर्दाश्त नहीं कर सकता यानी मौत निश्चित है जब की सूरज की हरारत कई करोड़ डिग्री सेण्टीग्रेट है ।

इस सरजमी पर एक सायन्सदाँ हुए है **गैलिलीयो** । यह दौर था **१७०० ई**. का तो इनसे पहले गैर मज़हबो के लोग चाँद की पूजा करते थे, और यह कहते थे की इस चाँद के अन्दर रात के वक्त एक दिया जलाया जाता है जिसकी वजह से इससे रौशनी निकलती है । लेकीन जब गैलिलियो ने अपनी तालीम के दौरान यह कोशिश करनी शुरु की, कि दुर की चीज पास दिखे तो इस सायन्सदाँ ने टेलीस्कोप की खोज की और चाँद को इसके जरिए देखा तो उसे चाँद के अन्दर पहाड़, गड्ढे और जमीन दिखाई दिऐ जेसे की अर्थ पर मौजू है । तो इसने अपनी किताब में लिखा की चाँद भी हमारी पृथ्वी की तरह है । इसमें भी अपने जैसी आबादी होगी यह कोई देवता नही है और रोशनी की वजह यह है कि इसमें भी सूरज की रोशनी पहुँचती हे जिसकी वज़ह से यह चमकता है । अब सवाल यह उठता है कि यह गैर मजहब कब सुधरेंगे, क्योंकि आज भी यह लोग सुरज और चाँद की पूजा कर रहे है । जब इन लागों से पूछा जाता है कि सायन्स ने इसे झुठला दिया है तो कहते है कि यह हमारी धार्मिक भावना है अगर हम इस पर अमल नही करेंगे तो धर्म से निकाल दिये जागेंगे ।

गैलीलियो ने अपनी खोज ह: मोहम्मद (स.अ) के उन अल्फाज़ो को पढ़कर शुरु की जिसमें आप ने कहा था इन्सानी आँखो से कोई रौशनी नही निकलती बल्कि इस पर मौजूद चीजों की इमेज हमारी आँखोपर आकर

पड़ती है यानि चीजों में से हमारी आँखो के पर्दे पर उनकी तस्वीर बनती है और अगर हम कोई ऐसी चीज बना ले जिससे बहुत दुर की चीज़े नज़दीक और साफ दिखाई दे तो कितने ही ऐसे सितारे है जो हमारी आँखो से पर्दे पर उनकी तस्वीर बनती है और अगर हम कोई ऐसी जीज बना ले जिससे बहुत दुर की चीजे हमें नजदीक और साफ दिखाई दे तो कितने ही ऐसे सितारे है जो हमारी आँखो से काफी दूर है । उन्हें हम देख सकते है । जब आपसे किसी सहाबी ने दुनिया यानि जमीनी रास्तों के बारे में दरयाफ्त किया तो आपने कहा की मै जमीनी रास्तों को मुकाबले आसमानों के रास्ते ज्यादा अच्छी तरह जानता हूँ। गैलीलियों ने रसूले खुदा (स.अ.स) के इन्ही अल्फाजों को बुनियाद बनाकर टेलीस्कोप (दूरबीन) की खोज की।

अल्लाह के नबी (स.अ.स) ने अपने वक्त में यह तस्दीक की, जमीन (पृथ्वी) जो कि एक ग्रह है और इसके आलावा जितने भी ग्रह हैं यह सभी सूरज के गिर्द तवाफ कर रहे हैं और जिस जमीन पर हम रह रहे हैं वो अपनी ही जगह पर घूम रही है जब की गैर कौमो और दानिश्वर यह कहते थे कि सूरज चक्कर लगाता है जमीन नहीं। लेकिन आज के दौर में सायन्स यह साबित कर चुका है कि सूरज अपनी जगह पर मौजूद रहता है और बाकी जितने भी ग्रह हैं सब के सब सूरज का तवाफ (परिक्रमा) कर रहे है अपनी मुकर्रह्हदो में। **कुरआन के २३ वे पारे के सुरे यासीन की आयत नं.३८ और ३९ में अल्लाह फर्माता है सूरज अपने ठहरे रास्ते पर चलता रहता है, यह उस जोशवर व बाखबर का साधा हुआ है और चाँद के लिए हमने मंजिले ठहरा दी यहाँ तक की फिर ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी।**

कुरआन की इस आयत में अल्लाह पाक का यह फर्माना की सूरज अपने ठहरे रास्ते पर चलता रहता है इस कोड का खुलासा हमारे ख्याल से यह हुआ की सूरज को अल्लाह पाक ने एक जगह पर महदूद कर दिया है और यह अपनी जगह पर ही घूम रहा है इसका मतलब यह हुआ की सूरज की भी अपनी एक घुरी (Axis) है जिसकी वजह से सूरज अपनी जगह पर ही घूम रहा है और इस कोड में जोशवर और बाखबर जैसे अल्फाज अल्लाहतआला की सिफात बयान करते है कि सूरज को मुकर्रर उस जोशवर (अल्लाह) ने ही किया है और सूरज अपनी मुकर्रर जगह पर अपना काम पूरी तरह अन्जाम दे रहा है या नही, इसके लिए कुरआन में बाखबर का इस्तेमाल किया गया है की सूरज की गर्दिश पर अल्लाह खबर रख रहा है। **आयत न: ३९ में अल्लाह पाक का यह बयान करना की, चाँद की मंजिले ठहरा दी** का मतलब यह हुआ कि चाँद जो कि एक सितारे का

टूटा हुआ टूकडा है और जब यह अपने ग्रह से टूटकर अलग होकर गर्दीश करने में मश्गुल हुआ तो यह अर्थ (पृथ्वी) के मॅग्नेटिक इलाके में पहुँच गया और अल्लाह ने इसकी मंजिल जमीन तय कर दी और इस आयत में यह कहा की यहाँ तक कि फिर ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी इसका मतलब यह हुआ की यह भी जमीन का तवाफ (परिक्रमा) कर रह हैं और इसको सूरज से मिलने वाली रौशनी (नूर) हमेशा कम ज्यादा होती रहती है जिसकी एक सूरत यहाँ तक पहुँचती है कि जैसे खजूर के पेड़ की पुरानी शाखा और यह हम हर महीने देखते है और कुरआन में यह आयत आज से १४०० साल पहले बयान हो चुकी है और अब सायन्स के माहिर इसे तसलीम कर चुके हैं और कहते है कि चाँद २७ १/२ दिन में पृथ्वी (जमीन) का एक चक्कर पूरा करता है इसलिए चाँद का दूसरा दिन की मोटाई तकरीबन २ इंच चौड़ी दिखती है । लेकिन गैर से देखने पर चाँद की गोलाई की रौशनी नजर आती है यानि सुरज की रौशनी सिर्फ इतने ही हिस्से पर पड़ रही पड़ती इसलिए इसे फुल मून (full moon) पूरा चाँद कहते है। इस तरह हमने यह देखा कि अल्लाह ने अपने कमाल में आयतों के जरिये सूरज, चाँद, सितारे सब का खुलासा कर दिया है। सिर्फ जरुरत है तो अल्लाहतआला के दिये हुए दिमाग में मैजूद फाइलो के पढ़ने की, कुरआन का एक एक लफ्ज़ साइंस के तराजू में खरा उतर रहा है जब की गैर मजहब आज भी चाँद, सूरज और तारों को अपना भगवान मानकर उसकी इबादत में मशगूल हैं। अल्लाह इन्हें अक्ल दे।

गैर कौंमे कयामत के बारे में यकीन नही रखती। इनका यही मानना है कि जब कोई इन्सान मर जाए तो यह उसकी कयामत हो गयी। जब कीकुरआन फर्माता है कि कयामत के दिन सिंफ एक जोर की आवाज होगी और सब धरा के धरा रह जाएगा। आइए कुरआन का कौन-कौनसा कोड (आयत) कयामत का तरीका और तबाही बयान करता है।

१) कुरआन के पारा नं. २३ में सूरे यासीन की आयत नं ४९ और ५० में अल्लाह फर्माता है कि यह आपस में लड - झगड रहे हो और एक जोर की आवाज इनको आ दबोचे, फिर न तो कुछ वसीयत ही कर सकेंगे और न अपने घरवालों में ही लौटकर जा सकेंगे।

२) कुरआन के पारा नं. ३० में सूरेह ज़िल्जलाल की आयत नं. १ में अल्लाह तआला फर्माता है कि जब जमीन अपने भूचाल से हिलायी जाएगी और जमीन बोझ निकाल फेकेंगी।

३) कुरआन के पारा नं.३० में सूरेह कारिआ की आयत नं.३ से ५ में अल्लाह फर्माता है कि वह खड़खड़ाने वाली क्या चीज है ? जिस दिन आदमी बिखरे हुए पतिंगों की तरह होंगें और पहाड़ धुनी हुई रगी ऊन के मानिन्द हो जायेंगे।

४) कुरआन के पारा नं. ३० मे सूरेह इन्शेकाक की आयत नं.१,३, और ४ में अल्लाह बयान करता है कि जब आसमान फट जाएगा और जब जमीन तान दी जायेगी और जो कुछ उसमें हैं बाहर डाल देगी और खाली हो जाएगी।

५) कुरआन के पारा नं. ३० में सूरेह इन्फितार की आयत नं.२ और ३ में अल्लाह फर्माता है कि जब सितारे झड़ पड़ेगे और समुद्र बह चलेगे.

कुरआन में ऊपर दिये गये कोड़ (आयतें) को जो.की कयामत के लिए बयान किये गये है और पहले कोड मे यह बयान करना की एक जोर की आवाज इनको आ दबोचेगी मतलब यह हुआ की कयामत के दिन एक धमाका (जोरदार आवाज) होगा और किसी को भी मोहलत नहीं मिलेगी कि कोई भी ान्सान ना तो वसीयत कर सकेगा और न ही घर वापस लौट सकेगा यानि किसी को पल भर का भी मौका नहीं मिलेगा और सबके सब मौत के मुँह में समा जायेंगे। अगर हम सायन्स की लैब मे ंआयत (कोड़) नं. २ और ३ सूरे रुन्फितार में उस दिन (कयामत) समुद्र बह चलने का मतलब बहना नहीं क्योंकि समुद्र और नदियाँ.तो हमेशा ही बहा करती हैं, यहाँ पर इसका मतलब यह निकलता है के उस दिन हरारत (तापमान) इतना बढ़ जाएगा की पानी जो की हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से जुडा हुआ है उस दिन गर्मी इतनी ज्यादा हो जाऐगी के पानी, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से अलग – अलग हो जायेगा और जैसे ही यह अलग होगा यह दोनो अनासीर धमाके के साथ फटने लगेंगे क्योकि जमीन के नीचे भी पानी मौजूद है और पहाड़ के अन्दर भी पानी के चश्मे मौजूद है इसलिए पहाड़ भी फट जाएँगे और फिजा धुनी हुई ऊन की तरह रेजा – रेजा होकर उडेंगे और इन्सानी जिस्म इन धमाकों की ताकत की वजह से कीड़ो (पतिंगो) की तरह हवा में उड़ जाएँगे जैसे की (RDX) जैसे बम जो की इन्सान के चिथडे कर मीलो दूर फेंक देते हैं और आसमान फट जाएगा यानि बादलों में मौजूद पानी भी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में अलग हो जाएँगे यानि आसमान भी फट जाएगा। सायन्स की लैब में यह बात साबित हो चुकी है कि पानी को 2200०C पर जलाओ तो हाइड्रोजन और ऑक्सीजन अलग हो जाते हैं यह खअेज १७६६ ई. में हैनरी ने की थी और पानी के एक जरें को अलग होते ही 6667०C की हरारत (तापमान) पैदा होती है और इस दिन जब अनगिनत पानी के मॉलिक्युल्स् जो की आसमानों, जमीनों में और जमीन के अन्दर भी जब एक साथ अलग – अलग होंगे तो धमाके को नापना नामुम्किन ही होगा । लिहाजा जब असमान फटे जब जमीन धमाकों के साथ फटे तो इस कायनात में मौजूद तारे भी तबाह हो जायेंगे और पहाड़ो को फटने की आवाजों की वजह से खड़खड़ाने वाली आवाज पैदा होगी और यह खड़खड़ा देने वाली आवाज ही कयामत की निशानी है ।

इस तरह अल्लाह ने कुरआन में इन आयेतों (कोड) के जरिए इन्सान को कयामत के मन्जर खुलकर बता दिये ताकि यह नादान इन्सान को कयामत के मन्जर खुलकर बता दिये ताकि यह नादान इन्सान संभल जाए और अल्लाह के बताये हुए सीधे रास्ते पर चल सके । कयामत का आना कोई दकियानूसी बात नही बल्कि एक सायन्स है और इन्ही कुरआनी कोडों की मदद से इन्सान ऐसे

धमाकेदार बम बना चुका है । जिसका वजन सिर्फ १०० ग्राम है दुनिया को बर्बाद (नेस्तनाबूद) करने को बस है । इसलिए जब यह दिन आयेगा तो कोई भी देखने वाला जिन्दा न बचेगा वैसे भी इन्सानी ईजाद जो कि बमों की शक्ल में हो चुकी है और हर मुल्क इसे आपनी हिफाजत के हिसाब से रखे हुए है तो यह कहना मुनासिब होगा की इन्सान खुद मौत के बमों पर बैठा हुआ है और इन्तेजार है एक वक्त का बस् ।

इन्सानी जिस्म

अल्लाह रब्बुल इज्जत ने अपनी पाक किताब कुरआन जों की अपने हबीब ह: मोहम्मद (स.अ.स) पर उतारी उसमें (कुरआन) अल्लाह फर्माता हैं कि मैने इन्सान को मिट्टी से बनाया। इस मिट्टी को पाक किया और फिर फरिश्तों को हुक्म दिया की इसका पुतला बनाओ और जब इस पुतला-ए आदम के सारे एजा (अंग) बन गए तो अल्लाह ने दिल की हिफाजत करने के लिए पसलियों का पिंजरा बनाने को कहा तो फरिश्तों ने पहले बायीं पसली बनाई फिर दायीं पसली, जब दायी पसली बन चुकी यानि आदम का पुतला पूरी तरह से बन कर तैयार हो गया तो दायीं पसली से बची हुई मिट्टी से हव्वा बनी और फिर इन दोनों को अल्लाह ने जन्नत के बहतरीन बागों से निकालकर इस कायनात में भेज दिया और इन दोनों की पैदा हुई औलादें आज पुरी दूनियाँ मे फैली हुई है।
आज गैर कौमें यह कह चुकी है की इन्सानी जिस्म अनासिरों (तत्वों) से मिलकर बना हैं लेकिन उनकी गिनती बताने में नावाकिफ हैं लेकिन इस्लाम के दानिश्वर **हजरत इमाम जाफर सादिक (अ.स)** यह बता चुके थे कि इस मिट्टी में मौजूद है। मलब बिल्कुल साफ हो चुका की इन्सान का जिस्म अनसिरों से मिलकर बना है। आपने यह भी बताया की इस जिस्म में सबसे ज्यादा ४ अनासिर पाँए जाते हैं, उसके बाद ८ अनासिर हैं जो ४ अनासिरों के मुकाबले कम पाये जाते हैं, उसके बाद ८ और अनासिर हैं जो पहले वाले ८ अनासिरों से भी कम तादाद में मौजूद हैं। इस तरह इस्लामी दानिश्वरों ने २० अनासिरों को उनके नाम तो नही दिये थे लेकिन उनकी पहचान बता दी थी और साथ में यह भी कहा इसके अलावा और अनासिर हैं जिनकी तादाद कई गुना ज्यादा ,मौजूद है लेकिन उनका फि-सादी (प्रतिशत) काफी कम है। हजरत इमाम जाफर सादिक (अ.स) ने जिन २० अनासिरो के बारे में जिक्र किया था उनके वजन भी बताये थे और यह कहा था कि अगर एक इन्सान का वजन

१०० किलो है तो पहले ४ अनासिरो की मिकदार इस तरह होगी। इन पहले ४ अनासिरो को आज के सायन्सटिस्टस् के हिसाब से नाम है-

ऑक्सीजन (O) वजन १६ किलो

हाइड्रोजन (H) वजन १.७८० किलो

नाइट्रोजन (N) वजन ०.९६० किलो

कार्बन (C) वजन ०.२७८ किलो

इन दूसरे ८ अनासिरों को आज के सायन्सटिस्टस् के हिसाब से इनके नाम हैं-

१.मैगनीशियम (Mg) २. कॅलिशयम (Ca)

३.पोटेशियम(K) ४. सोडियम (Na)

५. फॉस्फोरस (P) ६. सल्फर (S)

७. लोहा (Fe) ८. क्लोरिन (Cl)

बाद के इन ८ अनासिरों को आज के सायन्सटिस्टस् इस नाम से पुकारते है।

१.मोडियम (Mo) २. फोरियम (Fo)

३.मैगनीज (Mn) ४. जिंक (Zn)

५. कॉपर (Cu) ६. लेड (Pb)

७. निकल (Ni) ८. रेडियम (Ra)

इन १६ अनासिरों की इन्सानी जिस्मो में मिकदार (मात्रा) माइक्रोग्राम में मौझूद है। लेकिन आजकल के सायन्सदाँ मिट्टी में इतने अनासिरों की मौजूदगी को नहीं खोज पा रहे हैं। इन के हिसाब से लोहे की खाने अलग है, सोने की अलग, चाँदी की अलग, कार्बन की अलग तो यह सब मिट्टी में कैसे मिल सकती है? इस वक्त जब मैं यह खुलासा कर रहा हूँ १०७ तत्वों (अनासिरों) की खोज हो चुकी है जब की इन अनासिरों की तादाद इससे

कई जयादा हैं और आनेवाले सालो में एक ऐसी लॅबोरेटरी बनेगी जिससे कब्रस्तान से लायी गयी मिट्टी की जाँच हो सकेगी और मौजूद १०७ अनासिरों से ज्यादा अनासिर मौजूद होने की बात साबित हो जायेगी। यह वादा है आने वाली पीढियों से "शेख नुसरत आलम" का। इन्शाअल्लाह उस दौर में इस्लाम की थ्योरी इस जहान के बचे – बच्चो तक पहुँच जायेगी, आमीन!

इस्लाम के अलावा गैर मजहब जैसे हिन्दु लोगों के मुताबिक मनु नाम का एक शख्स इस सरजमी पर प्रकट हुआ और उस वक्त चारो तरफ पानी ही पानी था। अगर यह बात मान भी ली जाए तो सवाल उठता हैं कि एक मनु की वजह से आज इतनी तादाद कैसे मुमकिन है? फिर और कहानियाँ बतायी गयीं कि एक भगवान हुए कर्ण और इनकी पैदाइश कान से हुई इसके बाद एक और भगवान अँगूठे से पैदा हुए और कुछ दिनों के बाद एक और पैदाईश हुई दछिची की और कहा यह घड़े से पैदा हो गये। अगर इन हिन्दुओं की कहानियों और किस्सो की आज के आधुनिक (सायन्स) दुनिया के सायन्स नाम की लॅब में जाँच की जाए या सायन्स नाम के तराजू में तोला जाए तो मालूम पड़ जाएगा कि यह सभी बातें बेबुनियाद है। अगर इस्लाम के अन्दर हः ईसा (अ.स.) की पैदाइश की बात पर रौशनी डाली जाए तो हः ईसा (अ.स.) की माँ जिनका नाम मरियम था अल्लाह ने इनके अन्दर अपनी रुह को भेजा और आप (ईसा) भी आम पैदा होने वालों की तरहा ही अपनी माँ के पेट में रहे और मुकामें कारुरा से दुनियाँ में तशरीफ लाए इसके अलावा अगर हम औरत की बच्चेदानी का कनेक्शन देखें, सायन्स की मदद से बच्चेदानी ना तो कान से सीधी जुड़ी है और न अँगुठे से, तो यह सब दकियानूसी मत इस सायन्स के जमाने में नहीं चल सकते क्योकि आज का इन्सान काफी तरक्की कर चुका है।

अभी भी मौका हैं इस हिन्दु कौम को अपनी मान्यताओं को दुरुस्त करने का, वरना बहुत देर हो जाएगी।

अल्लाह तआला जो की इस कायनात का मालिक है उसने अपने कलाम में आसमानों से लेकर जमीन के बीच जो कुछ भी है उसका जिक्र पारा नं. २४ की सूरेह जुमर की आयत नं. ६३ में इस तरह फरमाया है आसमानों और जमीन की कुँजियाँ उसी (अल्लाह) के पास है।

पारा नं.२३ की सुरे सॉद की आयत नं.६६ में अल्लाह फर्माता है आसमानों और जमीन और उन चीजों का परवरदिगार है जो आसमानो और जमीन के बीच है वह बेहद जोरावर बड़ा बख्शने वाला है।

ऊपर दी गयी दोनो आयर्तो का खुलासा करने से पहले मैं यह बताना चाहँगा की अल्लाह ने इन आयतों का इस्तेमाल शार्टकट में किया है और वह भी इसलिए की अल्लाह ने इन्सान को बनाते वत्त उसके सर के अन्दर मौजूद मेमरी बॉक्स में इन शॉर्टकटस् या कोड़स् की तफ्सील डाल दी है उसी तरह जैसे की कमप्युटर के अन्दर हजारों फाइलस मौजूद कर देते हैं और इन सब फाइलस को उनके कोड के नाम के साथ एक फेहरिस्त बनायी जााति है और जब भी किसी फाइल को खोलना होता है तो पहले कमप्युटर में मौजूद फेहरिस्त को चेक किया जाता है फिर अपनी मन चाही कोड को किलीक करते हैं और कोड का खुलासा पल में नजर आता है। अल्लाह रब्बुल इज्जत ने कुरआन को अपनी फेहरिस्त बनाया और इस फेहरिस्त में आयतों की शक्ल में ६६३६ (छे हजार छे सौ छत्तीस)कोडस् डाल दिये। अब बात बिल्कुल साफ हो चुकी की अल्लाह ने इन्सान के दिमाग के अन्दर इन ६६३६ कोडस् की तफ्सीस डाल दी और यह हिदायत कर दी की कुरआन मुसलमान का ईमान है और अपने ईमान की हिफाजत करो, नही तो शैतान तुम्हे बहका देगा और शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है जिसने कसम खायी है कि मैं तेरे बनाये हुए बन्दो को सिरातल मुस्तकीम (सीधे रास्ते) से भटका दूँगा और *कुरआन के पारा नं. २३ में सूरे सॉद की आयत नं ७१ से ८१ में अल्लाह फर्माता है कि (ऐ पैगम्बर इनसे बयान करो) जब तेरे परवरदिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक आदमी पैदा करता हूँ, तो जब मैं उसे पूरा कर लूँ और अपनी रुह फूँक दूँ तो तुम सब उसके आगे सज्दे में गिर पड़ना.. फिर सब फरिशतों ने उसे सज्दा किया, मगर इब्लीस ने गुरुर किया और वह काफिरों में था (अल्लाह ने इब्लीस से) पूछा कि ऐ इब्लीस जिसको मैंने बनवाया उसको सज्दां करने से तुझे किसने रोका । यह तूने घमण्ड किया या तू (इनसान से)दर्जे में बड़ा है? (इब्लीस) बोला मैं उससे कई बेहतर हूँ। मुझको तूने आग से बनाया और उसको तूने मिट्टी से बनाया है। (अल्लाह ने) फर्माया तो तू यहाँ से निकल, तू फिटकारा हुआ है और आखिरी न्याय के दिन तक तुझ पर मेरी फिटकर है। बोला (इब्लीस) ऐ मेरे परवरदिगार मुझको उस दिन (यानि कयामत) तक की मोहलत दे जबकि मुर्दे दुबारा उठा*

खड़े किये जाएँगे। (अल्लाह ने) फर्माया, तुझको मोहलत उस वक्त के दिन तक जो मुकर्रर है (तो इस तरह इस कोड़ (आयत) मे अल्लाह ने इन्सान को आगाह किया इस शैतान की शक्ल में मौजूद वायरस को जो की अगर कमप्युटर के अन्दर घुस जाए तो सभी फाइल्स् को खा जाता है। उसी तरह अगर कोई अल्लाह का बन्दा अपने दीमाग में मौजूद कुरआन के कोड़स् की तफ्सील को महफूज करना चाहता है तो शैतान को अपने करीब नही आने देगा और इसकी हिफाजत के लिए अल्लाह ने हमे नमाज की शक्ल मे हथियार दे रखे है जो की पाँच बार एक दिन में हमें शैतान से बचाने के लिए पॉवर देती है और यह शेतान हमें सीधे रास्ते पर चलने से रोक नही सकता। इस तरह आज इस नये जमाने की खोज जिसे कमप्युटर कहते हैं कुरआन के इन कोड़स् में इसकी जानकारी है इसलिए इस तरक्कीआफ्ता इन्सान ने कुरआन में मौजूद कोड़ को क्लिक किया और दिमाग में मौजूद फाइल ने पूरी जानकारी बयान कर दी।

इसकी मिसाल हम यहाँ बयान कर रहे हैं की अल्लाहरब्बुल इज्जत ने कुरआन में आयत (कोड़) में लिखा कि ऐ आदम तुम जन्नत के बाग में रहो, खाओ और पियो लेकिन इस पेड़ के करीब मत आना।

अल्लाह ने आदम को साफ कहा की पेड़ के करीब मत जान, शैतान (इब्लीस) जिसने अल्लाह की यह हिदायत सुन रखी थी उसने अपनी अक्ल चलायी और जन्नत मे जहँ पर ह: आदम (अ.स) और हव्वा रहते थे अपना भेस बदल कर आया और ह: आदम (अ.स.) से कहने लगा कि जिस पेड़ के करीब आपको जाने मना किया गया है वह तो एक फायदेमन्द फल से लदा है अगर आप उसे खा लेते तो हमेशा हमेशा आप जिन्दा रहेंगे। तब ह: आदम (अ.स.) ने इन्कार किया – की मैं अल्लाह के हुक्म को मानता हुँ और मैं हरगिज बेहुक्मों में शामिल नही हो सकता। तब शैतान (इब्लीस) ने कहा; लेकिन आदम, अल्लाह ने तुम्हारी जौजा हव्वा को तो मना नही किया और न उस पेड़ के फल खाने को मना किया तो हम तुम्हारे हमर्दद होने के नाते तुम्हे एक सलाह देते है कि हव्वा उस पेड़ के पास जाएँ और फल ले आएँ फिर तुम दोनो उसे खा लो इस तरह अल्लाह का हुक्म भी नहीं टूटेगा और तुम हमेशा इस जन्नत में आराम से रहोगे और ह: आदम (अ.स.) ने ऐसा ही किया। हव्वा ने उस पेड़ से फल तोडे और दोनो ने उसे खा लिया। शैतान अपनी कामयाबी पर बड़ा खुश हुआ कि मैंने आखिरकार अल्लाह के बनाए हुए बन्दों को बहका दिया। फिर अल्लाह ने दोनों को जन्नत से बाहर कर दिया।

अगर ह: आदम (अ.स.) अल्लाह के ऊपर दिये कोड़ का अपने दिमाग में मौजूद फाइल में, इसका खुलासा पढ़ते तो ऐसी गलती नहीं करते क्योकि दिमाग मे मौजूद इसकी तफ्सील कहती है यह पूरा पेड़ तुम्हारे लिए नुकसान देने वाला है और इस पेड़ का जूज इसका फल है अगर यह फल खाओगे तो नुकसान उठाओगे। तो पेड़ के करीब न जाने का मतलब ही यह था क्योकि जो कोई भी किसी फलदार पेड़ के करीब पहुचँता है तो उसके दिल में यह लालच पैदा होती है कि किसी तरह इसका फल हमारी जुबान को जायका पोहंचाए और वह उसे हासिल करने पर आमादा हो जाता है तो अल्लाह का पेड़ के करीब मत जान मतलब यही था कि फल मत खाना।

अल्लाह पाक ने कुरआन में कोड़स् से बात की ताकि हर इन्सान अपने दिमाग में मौजूद फाइल्स् के पन्ने पढ़े और अल्लाह की इताअत करें । जिन लोगों ने भी अपने दिमाग में मौजूद फाइल्स् के बताये तरीको पर अमल किया आज वह दुनियाँ के दानिशवरों में मुकाम रखते हैं।.

(ग्रॅव्हिटोन)

इस दुनिया में जितने भी मजहब हैं सबने अपने हिसाब से अपने – अपने खुदा बना लिए हैं और यह मान कर चल रहे है कि हमारे इन भगवानों में कोई न कोई ताकत मौजूद है और इसी सिध्दान्त को अपनाते हुए काफिरों की कौम है जो की पत्थरों में कोई शक्ति मौजूद है और इसी से अपनी मन्नते माँगते हैं, एक कौम ऐसी है जो जानवरों की पूजा करते हैं और इनके भगवान बने हाथी, शेर, साँप और आधा जिस्म शेर, आधा जिस्म इन्सान इस तरह काफिरों की कौम इनकी इबादत करते हैं और अपनी मन्नते माँगते हैं और आज तक इसी यकीन पर टिके हैं।

एक और कौम है जिसे पारसी कहते हैं इन्होने अपना खुदा आग को बना रखा है और इसकी इबादत करते हैं।

इनका विश्वास है कि इस आग के अन्दर ही ताकत है और ये लोग इसी में लिप्त है, कुछ गैर मजहब ऐसे भी है जो पेडों की पूजा करते हैं और इसलिए यह बरगद का पेड़, पीपल का पेड़, और तुलसी के पेड़ों की इबादत

करते हैं और इन काफिरो का ऐसा मानना है की इन पेड़ो में ताकत मौजूद है इनके हिसाब से इनकी मन्नते इन्ही पेड़ो से पूरी होती है। इस तरह जितने भी गैर मजहब हैं इन सबने अपने लिए अलग-अलग खुदा बना लिये हैं और हिन्दु मजहब है जिसने हाड मास के बने इन्सान को देवता और भगवान मान लिया है और इन्ही लोगो से अपनी मन्नते माँगते है और इन्सानी जिस्म से पैदा हुऐ भगवान इनके पालने वाले हैं- माज अल्लाह! यह हम अच्छी तरह जानते हैं कि जितनी भी मखलूकें हैं वह सभी अपनी ही मखलूक का साथ देगी चाहे उसका फिसद ५१ और ४९ ही क्यों न हो और मोहब्बत भी करेगी, जैसे अगर कोई इन्सान अपने पास बिल्ली पालता है और वह उसे अपने बच्चे की तरह प्यार करता है; लेकिन अगर कोई ऐसा वक्त आ जाए की इस बिल्ली के हिस्से में आती हो और एक दूसरा इन्सान भी वहाँ पर पहुँच जाए और हालत ऐसे हो जाए की वह रोटी इन्सान को न दी जाए तो मर जाए और यही हालत उस बिल्ली को हो जाए जिसे वह बेहद प्यार करता है, तो यह मालिक किसे रोटी दे? थो यहाँ पर इन्सान – इन्सान को बचाने के लिए रोटी का चौथाई हिस्सा बिल्ली को दे और दो तिहाई इन्सान को देगा, इस तरह जानवर, जानवर को प्यार करेगा यानि पक्ष लेगा और पहाड़ , पहाड़ का, पेड़, पेड़ का, शैतान, शेतान का, फरिश्ते का पक्ष लेगा और जिन्न, जिन्न का फेवर करेंगे।

अगर इन मखलीकों में किसी को खुदा बना दिया तो इस कायनात में उन पत्थरों के अन्दर मौजूद कीड़ों का क्या हाल हो, समन्दर में मौजूद मछली को कौन गिजा पहुँचाऐगा ? यह एक ऐसा सवाल है जो बिना लिखे रह नहीं सकता। इसलिए इस्लाम ने इन सभी खुदाओं को नकारा और कहा हमारा खुदा तो ऐसा है जो किसी के साथ भेद-भाव नहीं करता वह पत्थर में मौजूद सुक्ष्म और विशाल से विशाल मुखलूक को अपनी खुदाई में रखता है और जमीन और आसमान में मौजूद सूक्ष्म से सुक्ष्म और इन्हें पालता है और परवरिश करता है चाहे वह जंगलो मे रहने वाली मखलूक हो या समुन्दर के तल पर बसने वाली जड़ी बुटियाँ हो। वह सब को देख रहा है कोई भी मखलूक उसकी पहुँच से बाहर नहीं है । आज सायन्स के लोग यह कह रहे हैं की एक बहुत बड़ी पॉवर इस कायनात में मौजूद है जिसे **"ग्रॅव्हिटोन"** कहते है। ग्रॅव्हिटोन का मतलब है खींचने की ताकत और इसकी चाल २० लाख मिलियन लाइट इयर एक सेकंड में और यह ग्रॅव्हिटोन इस कायनात के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैला है। सायन्सदानों का खयाल है इसकी चाल ३ लाख किलोमीटर पर सेकण्ड और इतना पॉवरफूल है कि इसके गुजरते वक्त कोई बाधा पैदा नही हो सकती। यह मोटी से मोटी फौलाद से बनी हुई दीवार के पार भी जा सकती है और समुन्दर के सतह तक पहुँच जाती है और यह जर्रा बराबर भी अपना रास्ता नहीं बदलती। लेकिन

इन सायन्स के माहिरों ने इसके केन्द्र (सेन्टर) की जगह नही बतायी यानि इसकी खोज यहीं पर बन्द हो गयी और आगे इसकी खोज नहीं कर सके कि इस पावर का जखीरा किधर मौजूद है।

कुरआन इस पावर के बारे में पहले से ही खुलासा कर चुका है की अल्लाह जो एक नूर है यानि पॉवर यह लतीफ (सुक्ष्म – सुक्ष्म) और रब्बुल आलमीन (विशाल से विशाल) तक पहुँच रहा है और इसकी कोई हद नहीं और इस कायनात का मालिक नूर है वह गैर मजहबों की तरह (उनके अपने खुदाओं की बनावट) नहीं बना है क्योकि इस कायनात का मालिक किसी मखलूक के साथ भेद – भाव नहीं रखता वह हर शय को अपनी खुदायी में पनाह देता है और परवरिश करता है, सुबहानअल्लाह। गैर मजहबों, जैसे हिन्दु मजहब की एक मॅथोलॉजी यह भी है कि उनके भगवान शंकर एक बार भाँग के नशे में चूर थे। इसी दरमियान एक फरियादी मदद् के लिए आता है, उनकी जौजा पार्वती उनको जगा रही है लेकिन भगवान मदहोश पड़े हैं तो यह कैसे भगवान् है ? अपने भगतो की मदद करने के बजाय नशे में मदहोश पड़े है और अगर हम इस्लाम के एक पैगमबर का किस्सा सुनाए की जब की एक बार रसूले खुदा (स.अ.स) फतह होकर अपने जेहादीयों के साथ वापस लौट रहे थे और लोगों को माले गनीमत बाँट रहे थे, एक गुँगा शख्स यह सब देख रहा था कि मेरी आवाज नबी (स.अ) तक कैसे पहुँचे इसलिए उसने एक कंकर उठाकर नबी पर फेंका, सहाबियों ने फौरन तलवार खीच ली कि किसकी जुर्रत ? तब ही नबी ने कहा तलवार उठाने की कोई जरुरत नहीं है। यह पत्थर का टुकड़ा उस पेड़ पर मारा गया है जिस पर फल लदे हुए हैं और कंकर फेकने वाला भी अपना हिस्सा चाहता है और फिर नबी (स.अ) ने सहाबियों से कहा यह जितना भी माँगता है इसे दे दिया जाए। इस तरह हमने फर्क देखा की हिंन्दु भगवान सो रहे है और अल्लाह का हबीब मदद कर रहा है।

ग्रॅव्हिटोन एक सेकण्ड में १० लाख मिलियन लाइट ईयर की दूरी तय करता है और वापस अपने मरकज में पहुँच जाता है यानि एक सेकण्ड में २० लाख मिलियन लाईट एअर हुई। इस तरहा इसकी चाल २० लाख मिलियन लाइट इयर हुई अब हम यह कह सकते हैं कि न्युटन ने जब इस ग्रॅव्हिटोन के बारे में पहली बार जिक्र किया कि इस कायनात में एक ऐसी पॉवर मौजूद है जो कि एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचने में इक सेकण्ड लेती है और

यह इस १ सेकण्ड में ३ लाख मिलियन लाईट ईयर का सफर तय करती है या कुछ ज्यादा भी हो सकता है। जब कि हम खुलासा कर रहे हैं कि यह लाइट (नूर) १ सेकण्ड में २० लाख मिलियन लाइट ईयर का सफर तय करती है या आने वाले वक्त में यह सफर और लम्बा हो सकता है। जिस तरह गैर मजहबों ने मुखतलीफ-मुखतलीफ ताकतों (पॉवर) को अपना खुदा मान लिया उसी तरह मजहबे सायन्स के मानने वालो ने ग्रॅव्हिटोन को अपना खुदा मान लिया, लेकिन अपने खुदा का मरकज खोजने में नाकामयाब रहे। अब अगर हम गैर मजहबो की किताबो जैसे गीता, रामायण, महाभारत, अथरवदे, ऋग्वेद, सामवेद और यजूर वेद या महावीर या बुध्द के मानने वालों या पारसियों की किताबों में इस ग्रॅव्हिटोन के बारे में मालुमात करना चाहे तो नही मिलता लेकिन जैसे ही इस्लाम की पाक किताब कुरआन में देखा तो ग्रॅव्हिटोन का जिक्र अल्लाह ने १४०० साल पहले ही कर दिया था लेकिन सिर्फ इसके गुण और करामात ही बयान किये क्योंकि जिस वक्त कुरआन उतर रहा था अगर इस अंग्रेजी नाम का जिक्र किया जाता तो कोई भी नहीं समझता।

कुरआन के पारा नं. २ सूरे बक्ररा की आयत नं. २८४ में अल्लाह फर्माता हैं कि जो कुछ आसमानों में और (जो कुछ) जमीनो में हैं (सब) अल्लाह ही का है। और (लोगों) जो तुम्हारे दिल में है अगर उसको जाहिर करो या उसको छिपाओ, अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा फिर वह जिसको चाहे बख्शेगा और जिसको चाहे सजा देगा और अल्लाह हर चीज पर काबू रखता (रिमोंटकन्ट्रोल) हैं।

ऊपर दी गयी आयत में अल्लाह ने साफ कर दिया की उसका नूर (पॉवर) ग्रॅव्हिटोन जमीन से लेकर आसमानों में मौजूद नामालूम सितारो तक उसके इशारो पर पहुँचता है। तब ही तो अल्लाह पाक ने फर्माया मेरे काबू में है यानि इस ग्रॅव्हिटोन का मरकज अल्लाह का नूर है।

(कुरआन के पारा नं. ३ सुरे आले इमरान की आयत नं.२ में अल्लाह फर्माता है कि (अल्लाह) के आलावा कोई इबादत के लायक नहीं, जिन्दा और कायनात को सभांमने वाला है)।

इस आयत में बिल्कुल साफ है कि अगर किसी मशीन का काम रौशनी देना है तो अगर वह जिन्दा हो यानि उसमें पॉवर मौजूद होगा तब ही रौशनी दे सकेगी और जो भी उसकी हद मुकर्रर होगी उस हद को अन्धेरे से महफूज (संभालेगी)। इसलिए इस आयत का मतलब यह हुआ कि ग्रॅव्हिटोन जिन्दा है और अल्लाह के कन्ट्रोल में है और यह ला हद है। इस आयत में "संभालनेवाला" का मतलब है कन्ट्रोल करने वाला।

आज के नये दौर में हर मजहब की इस सिध्दान्त पर एक राय है कि खुदा एक नूर है या उसमे से लगातार प्रकाश निकल रहा है।

अल्लाह रब्बुल इज्जत ने इस कायनात में जितने भी बन्दे भेजे सबके दिमाग में इल्म भरा और जो कुछ भी इस कायनात में होने वाला है वह भी भरा। अब इन्सान को अपने दिमाग मे बेशुमार मौजूद पन्नों को पलटना बाकी है और अल्लाह तआला ने इसलिए इस इन्सान को सभी मख्लूको पर अफज़ल किया और कहा यह इनसान अशरफुल मख्लुकात है ।

हमने उपर यह लिखा कि यह नूर बहुत ताकतवर है तब एक सवाल और पैदा होता है कि इतनी ज्यादा ताकत रखने के बावजूद यह हवा की तरह बड़े – बड़े पेड़ों को, इन्सानो को, गाडियों को और घरो को क्यों नही उडाता ? इस सवाल के हल के लिए हमें कुरआन की आयतो को पढ़ना पड़ेगा।

कुरआन के पारा नं. २० सूरे कसस में अल्लाह फर्माता है कि हजरत मूसा (अ.स) अपनी जौजा को मदयन् से वापस मिस्र ला रहे थे तो ह. मूसा (अ.स) को पहाड़ पर एक आग दिखायी दी। तो उस आग को पाने के लिए आप पहाड़ पर गये तो यह आग जो कि एक पेड़ से निकल रही थी जैसे ही उसके करीब गये तो पेंड़ रुपी आग पीछे हटती चली गयी। तो ह.मूसा (अ.स) वापस लौटने लगे तो यह पेड़ ह. मूसा (अ.स.) के पीछे हो लिया तो आप घबरा कर तेज दौड़ने लगे तब ही एक आवाज आई, ऐ मूसा मैं खुदा हुँ, तुम्हें घबराने की जरुरत नही तब ह. मूसा (अ.स) रुक गए ।

अगर हम कुरआन की आयत पर गौर करे कि वह एक अजीब आग (रौशनी जो की लाल रंग की थी) जिसमें इतनी ताकत की एक इतने बड़े पेड़ को उड़ा रही थी।

इस तरह एक बार नबी – ए- करीम (स.अ) सहाबियों को खुतबा दे रहे थे कि अल्लाह फर्माता है कि मोमिन का मर्तबा काबे से भी ऊँचा है कि अगर सच्चा मोमिन इस कोहे सफा को हुक्म दे तो यह अपनी जगह से चलकर आता है। अभी यह अल्फाज पूरे ही हुए थे कि कोहे सफा आप के पास चलकर पहुँच गया। तकरीबन उस वक्त आपके पास ३० सहाबी मौजूद थे। सब ने रसूल का मौजिजा देखा तब ही रसूल ने कहा की ऐ कोहे सफा तुझको

हमने आने का हुक्म नहीं दिया यह सुनते ही कोहे सफा अपनी जगह पर जा पहुँचा, लेकिन सायन्स के माहिर यह तो मानते हैं कि कोहे सफा एक बार अपनी जगह से जरुर हटा है।

ऊपर दिये गये दोनो किस्सों को आज के दौर में मौजूद उस लाइट यानि रौशनी (नूर) को देखे अगर यह रौशनी किसी आदमी पर पडें तो आदमी कई किलोमीटर दूर जा गिरे और पहाड़ पर यही रौशनी डाली जाए तो पहाड़ को रेजा-रेजा कर दे या कितने ही दूर जा गिरे। इस रौशनी को लेजर लाइट कहते हैं कुरआन ने इस नूर यानि लाइट के नमुने बयान कर दिये और सायन्स ने इस रौशनी को ढूंड कर अपना बनाया हुआ नाम दिया। इस तरह इस्लाम की सारी रिवायतों को सायन्स प्रॅक्टिकल करके दुनियाँ को दिखा रही है, जब कि गैर कौमो की सारी रिवायतें गलत साबित हो रही है।

अल्लाह का एक कोड (आयत) यह की जमीन और आसमान के बीच जितनी भी चीजें है उसकी कुन्जियाँ उस (अल्लाह) के पास है। मतलब यह हुआ की अल्लाह ने जमीन से लेकर आसमानों तक नामालूम खजाने भर दिये हैं क्योकि कुन्जियाँ बहुत किमती चीजों की होती है और उसके खोलने का तरीका भी अल्लाह ही जानता है तो अल्लाह तआला इन खजानों का खुलासा कर रहा है। अगर हम उसी ग्रॅव्हिटोन को फिर याद करें जो कि दुनियाँ के बडे बड़े सायन्स के माहिर जिक्र कर चुके हैं लेकिन उसका कन्ट्रोल कहाँ से हो रहा है यह बताने में नाकामयाब रहे , लिकिन अल्लाह पाक का यह कहना की कुन्जियाँ हमारे पास है यह साबित होता है कि ग्रॅव्हिटोन का मरकज (centre) अल्लाह के पास मौजूद है।

अगर हम कुरआन के दुसरे कोड को अपने दिमाग में मौजूद फाईल पर क्लिक करे तो मालूम यह होता है कि ग्रॅव्हिटोन काफी ताकतवर है क्यांकि कोड़ (आयत) में जोरावर का लिखना इस बात का सुबूत है और जो रोशनी (नूर) जोरावर है वह कहीं भी पहुँच सकती है उसके जाने और आने वाले रास्ते में कोई भी ताकत हायल नहीं हो सकती है जैसे की लेजर लाइट इसके रास्ते में जो भी चीज हायल होती है वह बार्बद हो जाती है और उसे रास्ते से हटना पडता है। अल्लाह ताआला के इस जोरावर के और करीब जाएँ तो मालूम यह पड़ता है की यह नूर एक मीटर चौड़े फौलाद की चादर को पार कर जाता है और दुनिया के दानिशवरो ने इसका नाम गामा किरणे रखा है, लेकिन सिर्फ १ मीटर ही उससे ज्यादा नहीं। अगर हम यह जानना चाहें की किरने लोहे को कैसे पार कर गयी तो मालूम हुआ की कुदरत ने जर्रो के बीच जो खाली जगह है उसके अन्दर से होकर यह गामा रेज पार हो जाती

है और इससे मोटी चादर को पार नहीं कर सकती। इसके आलावा एक और किस्म की किरने (नूर) सायन्सदानों ने खोज निकली है जो की अगर इंन्सानी जिस्म पर ड़ाली जाए तो गोश्त को तो पार कर जाती है लेकिन हडिड़यों को पार नहीं कर सकती और इसका नाम रखा गया एक्स रे इसके अलावा और भी कई तरह की रौशनियाँ हैं, जैसे अल्फा बीटा यह जितने भी नूर (किरणें) हैं सब की अपनी हदें कायम है और सायन्स के माहिरों ने यह साबित भी कर दिया लेकिन ग्रॅव्हिटोन की कोई हद नहीं, यह करोड़ों मीटर लम्बे फौलाद के पहाड़ को भी चीरते हुए निकल जाएगी। क्योंकि यह अल्लाह का नूर है जो इस कायनात के जर्रो-जर्रो तक पहुँच रहा है कोई भी जर्रा उसकी (अल्लाह) निगाहा से ओझल नहीं।

शायन्स के माहिरों ने १७०० ई. में नूर के बारे में खोज करनी शुरु की लेकिन मजहबे इस्लाम के पैगम्बर और अल्लाह के हबीब ह. मोहम्मद (स.अ.स) ने सबसे पहले ६२६ ई. में नूर के बारे में ज़िक्र किया की इंसानी आँखों से किसी भी तरह का नूर नहीं निकलता बल्कि जो चीजे हमारी आँखों के सामने से होकर गुज़रती है यह उन चीजों का नूर है जो हमारी आँखों पर अपनी तस्वीर बनता है । आपने इसका सबूत यह दिया की अगर हमारी आँखो में नूर होता तो अंधेरे में भी हमें जरुर दिखाना चाहिए जब की ऐसा नहीं हो रहा है। अलबत्ता, खुदा ने कुछ जानवर जैसे शेर, साँप, चीता, भेडियाँ, बिल्ली और हिरन की आँखों में नूर पैदा करने वाली कुवत दे राखी है और जानवर दिन के मुकाबले कई गुना बेहतर रात में अपना शिकार करते हैं और अगर हम दिन के वक्त शेर की आँखो पर गौर करे तो यह अपनी ऑखे न के बराबर खोलते है वह इसलिए की सूरज से निकलने वाला नूर इनकी आँखो से निकलने वाले नूर से ज्यादा पॉवरफूल इसकी वजह से इनकी ऑखों का नूर कमजोर पड़ जाता है.। पैगम्बरे इस्लाम ने एक और खुलासा किया की चाँद और दुनिया में कोई नूर मौजूद नहीं है। जब सूरज की किरनें इन पर पड़ती हैं तो रिफ्लेक्ट होकर यह रौशनी हमारी आँखों तक पहुँचकर तस्वीर बनाती हैं और कभी हमने चाँद को एक इंच मोटा भी देखा तो कभी पूरा चाँद और कभी आधा चाँद वह इसलिए की चाँद के जिस हिस्से पर रौशनी पड़ती है तो उसके उतने ही हिस्से पर रिफ्लेक्शन होता है जो हमारी आँखों तक ही पहुँचता है। इसका मतलब बिल्कुल साफ की सूरज की रौशनी इन चाँद व ग्रहो पर गिरती है जो कि हमारी आँखो तक पहुँचकर उसकी तस्वीर पैदा करती है और इस चाँद और ग्रहो के पास कोई नूर मौजूद नहीं है।

आखिर यह ग्रॅव्हिटोन क्या है ?

ग्रॅव्हिटोन को समझने के लिए सायन्स की कुछ थ्योरी को बताना पडेगा जो की थोडी बहुत मदद करेगी।

१. वेव्ह थीअरि : वेव्ह का मतलब लहर (तरंग) होता है। हम अगर किसी ठहरे पानी में कोई कंकर फेंके तो उस जगह जहाँ पर कंकर से दबाव बना उसके चारों तरफ लहरे पैदा होती है और यह पैदा हुई लहरें जब तक अपने किनारो पर न पहुँच जाए चलती रहती है और सायन्स ने अपनी इस थ्योरी की दलील में यह कहा कि इन तरंगो का पैदा होकर फैलना इसलिए हुआ क्योंकि पानी पध्दार्थ है और यही लहरों को आगे बढ़ाने का मीडियम बना यानि अगर पदार्थ ना होता तो तरंगें आगे नहीं बढ़ती।

२. सूरज से निकलने वाली किरणों को जमीन तक पहुँचने में हवा जो की पद्वार्थ है उसकी वजह से किरणे हवा के माध्यम के सहारे हमारी जमीन तक पहुँचती हैं।

यह दोनो थ्योरी सायन्सदानों ने बनायी। थ्योरी नं.२ जिसमें हवा को मीडियम बताया गया सही साबीत नही होती क्योंकि जिस सूरज का जिक्र किया गया है वह तो करोड़ो मील की दुरी पर मौजूद है जब की हवा की मौजूदगी समन्दर के तल से बहुत से बहुत १०,००० फीट होगी उसके बाद खला (vaccum) है, तो यह करोड़ों मील की दूरी पर मौजूद सूरज से निकलने वाली किरनों को १०,००० फिट ऊँचा हवा के माध्यम छोड़ दें तो कौन सा माध्यम इन किरणो को हम तक पोहंचानी में मदद करता है ? और सायन्सदानों ने यह भी साफ कहा है कि वाक्युम में कोई भी चीज चल फिर नही सकती तो फिर यह शुआएँ और तारों से निकलने वाला नूर किस मीडियम के जरिए जमीन तक पहुँच रहा है ? सायन्स के माहिर यहाँ पर खामोश हैं।

जब कोई कंकर ठहरे पानी में फेकते है तो पानी के जर्रे में व्हायब्रेशन पैदा होता है और यह अपनी जगह से नहीं हटते बल्कि अपने करीबी अणुओं को ताकत के जोर से एक दुसरे को हिलाते जाते हैं और यह सिल्सिला आखरी अणु तक पोहंच कर ख़तम हो जाता है इस क्रिया में कोई भी अपनी जगह से नही हटता बल्कि एक दुसरे को पुश

करते रहते है; इसीलिए लहर काफी तेजी से बढ़ती है। इसी तरहा इलेक्ट्रिक तार जितना लम्बा हो या छोटा हो अगर इस तार के किनारे पर एक बल्ब लगा है और स्विच से इस बल्ब की दूरी अगर १०,००० मीटर हो या १० मीटर हो बल्ब को जलने में एक ही वक्त लगेगा क्युकी जैसे ही करंट पास किया जानता है वैसे ही तार में मौजूद अणु एक दूसरे को पॉवर दे देते हैं और पालो के अन्दर बल्ब तक करंट पोहंच कर उसे रौशन कर देता है. इसी तरह इस पुरी कायनात में अल्लाह रब्बुल इज्जत ने दुनियावी नाम ग्रॅव्हिटोन की शक्ल में फरिश्तों को अणुओं की शक्ल में फैला रखा है जैसे की कुरआन में जिक्र है कि अल्लाह फमार्ता है **कुन** और वह हो जाता है बस अल्लाह ने अपने पास रखे रिमोट को जैसे ही हुक्म दिया और वह काम हो जाता है।

अल्लाह ने हर शख्स का एक वक्त मुकर्रर कर दिया है जैसे की दिन जुमा, वक्त २ बजकर २५ मिनट २ सेकन्ड महीना आठ साल १४२३ तो इस वक्त पर जिन-जिन लोगो की रुहें कब्ज करनी हैं तो इन सब लोगो को एक सर्किट में जोईन्ट कर दिया जाता है। इसी तरह अनगिनत सर्किट अल्लाह पाक ने तैयार कर रखे हैं लेकिन कौन सा सर्किट कब पुरा करना है वह अल्लाह ही को मालुम है और मलाकुल मौत सिर्फ अल्लाह के हुक्म का इन्तेजार करते हैं, जैसे ही अल्लाह तआला ने फरमान जारी किया उसी वक्त लाखों रुहें एक साथ कैद कर ली जाती हैं जिन्हें सिर्फ पलभर लगता है अल्लाह तला ने अपने इन सर्किटस् को दुनियाँ बनाने से पहले लौहे महफुज में लिख चुके हैं। तो मलकुत मौत पलभर में अपना काम अन्जाम देकर अगले पल दूसरे सर्किट में मौजूद रुहों को अल्लाह के हुक्म से कैद करने पहुँच जाते हैं।

गैर मजहब जैसे की हिन्दु कौम में एक कहानी बहुत मशहुर हैं "सती-सावित्री" इस कहानी में सावित्री अपने शौहर सत्यवान को (जो की मर चुका था) यमराज जो कि एक भैंसे पर बैठकर आते हैं और सत्यवान की अत्मा को लिऐ जा रहे हैं।सावित्री यमराज का पिछा कर रही है और अपने पति को वापस माँग रही है यहाँ तक की यमराज थकहार कर सावित्री की मोहब्बत देखकर एक वरदान माँगने को कह देते है। बस् सावित्री फौरन वरदान मिलते ही अपने शौहर सत्यवान को वापस माँगती है और बेचारे यमराज सत्यवान को मजबूरी में वापस भी कर देते हैं और सत्यवान को दुबारा जिन्दा कर देते हैं इस तरह यह पूरी कहानी को चलते-चलते तकरीबन २०-२५ मिनट का वक्त तो लगा होगा क्योंकि यमराज आगे-आगे भैंसे पर बैठकर चले जा रहे हैं और सावित्री उनका कई

मील तक पिछा करते हुए चली जा रही थी। जब कि यह हुआ की उन २०-२५ मिनटों तक कोई भी नही मरा होगा। जबकि यह बात बिल्कुल साफ है कि हर पल लाखों लोगो की रुहें कैद हो रही हैं और लाखों लोग हर पल (सेकन्ड) पैदा हो रहे हैं। इस तरह वे बे सिर- पैर की कहानियाँ सिर्फ हिन्दु कौम को गुमराह कर रही हैं और हिन्दु लोगो को दूसरे मजहब कुबुल करने पर मजबुर कर रही है।

इस तरह ग्रॅव्हिटोन का खुलासा हो गया है कि ग्रॅव्हिटोन अल्लाह के बनाये हुए फरिश्ते हैं जो की पीरी कायनात में मौजूद हैं और अल्लाह के हुक्म का इन्तेजार करते रहते है और इनकी नजदीकियाँ चॉंदी के तार में दौडने वाले इलेकट्रॉन्स से कई गुना ज्यादा है।

इस तरह हमने यह देखा की किसी भी तरंग को या करन्ट को चाल देने के लिऐ एक माडियम की जरुरत पड़ती है और यह माडियम पदार्थ (matter) का बना होता है अब यह देखना है कि यह इतना मॅटर कहाँ से आ रहा है और यह देखना है कि इसका सूत्र (source) क्या है क्योकि अभी तक सायन्टिस्टस् यह पता नहीं लगा पाए की सूरज कैसे बना, लेकिन पृथ्वी के बारे में अपनी थीअरि दे चुके है कि जब सुरज के चारों तरफ एक ग्रह चक्कर लगा रहा था तो यह ग्रह सुरज की ग्रॅव्हिटी में आने से सुरज से टक्कर खाता है और सुरज का एक हिस्सा अलग हो गया। इसमे मौजुद हाइड्रोजन अहिस्ता – अहिस्ता खत्म होती रही और जब सारी हाइड्रोजन खत्म हो गयी तो यह टुकडा ठंडा पडा और फिर इसमें वनस्पती वगैरह शुरू हुई और फिर इसमें छोटे छोटे living creatures पैदा होने लगे। इसमें तरक्की होती गई और यह पृथ्वी के नाम से पुकारा जाने लगा। अब अगर सायन्टिस्टस की इन थीअरी को माना जाँए की हाइड्रोजन खत्म हो गया जो हिलियम बनकर इस टुकडे को धहकाते थे तो अब जो हाइड्रोजन और पदार्थ पैदा हुए तो यह कैसे मुम्किन हुआ कि चीज खत्म हो चुकी वो दुबारा कैसे जिन्दा हो गयी ? इसका जबाब इनके पास आज भी नही। अगर सायन्टिस्टस् यह खोज कर ले की सुरज किस तरह बना तो हम यह कहेंगे की दुनिया २ लाख साल आगे पहुँच गयी या यही तय कर ले कि अब पदार्थ कहाँ से पैदा रहे हैं ? यह ऐसे उलझे हुए सवाल है जिनका जवाब इनके पास नही है लेकीन मैं आपको सुरज और पदार्थो के बारे में बताने जा रहा हुँ।

हम यह अच्छी तरह से जानते हैं कि सुरज से निकलने वाली रौशनी हम तक पहुँच रही है। जब की सुरज कराडों किलोमीटर की दुरी पर मौजुद है। लेकिन अगर हम एक खुले समतल मैदान मैं एक मोमबत्ती को रोशन

कर दे और २ कि. मी. की दुरी पर खड़े होकर देखना चाहे की मोमबत्ती जल रही है या नही तो हम अपने से २ कि. मी.की दुरी पर जलती हुई रौशनी नही देख पाएँगे। इसका मतलब यह नहीं हुआ की मोमबत्ती से निकलने वाला नुर कमजोर है बल्कि उस नुर (रोशनी) को देखने के लिए हमारी आखों में वह कुवत नही है जो की मोमबत्ती से निकलने वाले नुर को देख सके। आज कितने ही तारे कायनात में मौजूद है जिनकी रोशनी हम तक नहीं पहुँच पा रही है। मोमबत्ती से निकलने वाला नुर हमारे जमीनी सिस्टम के बाहर निकलते हुए व्हक्युअम को पार करती हुई सुरज तक पहुँचती है लेकिन सुरज का नुर बहुत ज्यादा होने की वजह सें यह मोमबत्ती की रौशनी अपना रास्ता बदल देती है यह दुसरे सितारे पर जा पहुँचती है लेकिन वहाँ भी यह टकरा कर किसी तीसरे स्टार, फिर चौथे और पाँचवे स्टार से टकरा कर व्हक्मुअम में मौजुद ब्लॅक होल में जमा होती रहती है, इसी तरह जो हर पल अपना नुर निकाल रहा है, वह भी टकरा टकरा कर व्हक्मुअम में मौंजुद ब्लॅक होल के इर्द गिर्द इकट्ठे होकर पदार्थ यानि मॅटर की शक्ल अरिव्यतार कर रहे हैं और जब यह ब्लॅक होल इन पदार्थो से पुरी तरह भर जायेगा और इस पर इन पदार्थो का दबाब हद से बढ जाएगा तो यह ब्लॅक होल भी सुरज की तरह बिखेरने लगेगा, तो यह हुआ पदार्थो पैदा होने का तरीका। इस तरह यह निकलने वाला नुर कभी कमजोर नहीं पडता, इसी तरह ह. आदम (अ.स.) से होता हुआ ह. ईसा (अ.स). तक और फिर जनाब अब्दुल मुत्तलिब से जनाब अब्दुल्लाह और फिर आखरी नबी तक जैसे ही यह नुरे इलाही पहुँचा वैसे ही इस्लाम का सुरज बनकर पुरी दनियाँ पर छा गया और जो कायनात की हयाती तक अपने नुर से सब को सराबोर करता रहेगा इन्शाअल्लाह!

अब सुरज की बात करते है कि सुरज का एक टुकडा टुटकर अलग हो गया तो दुनिया बन गयी। यह बात सायन्टिस्टस् अपनी थीअरि में कह चुके है इसी कायनात में जितने भी ग्रह मौजुद है उन सबको मिला दिया जाए और उसके १०० हिस्से किये जाए फिर इन १०० हिस्सों में से १ टुकडे के १४०० हिस्से किये जाए तो इन १४०० टुकडों का १ टुकड़ा पृथ्वी है और सूरज का डायमिटर के १०९ पृथ्वी जैसे प्लानेट । तो अन्दाजा लगा लिजिए की सूरज कितना बड़ा है इसकी दुनिया में कोई पैमाना मौजूद नहीं है और यह हाइड्रोजन हीलियम की शक्ल बदलकर आग पैदा करती रहती है और यह रौशनी की शक्ल में इस पूरी कायनात को जगमगाती रहती हैं।

ग्रॅव्हिटेशनल फोर्स और इनका मरकज (केन्द्र)

हम यह देखते है कि अगर कोई फल पेड़ से टूटकर गिरा तो जमीन की तरफ, अगर कोई चीज को अपने हाथों से ताकत की जोर से आसमान की तरफ उछाला तो कुछ ऊचाँई पर जाने के बाद फिर जमीन की तरफ वापस आ जाति है। कभी आसमान पर उड़ता हुआ जहाज खराब होकर जमीन की तरफ गिरता है, तो आखिर ऐसे क्यों होता है ? सायन्स के दानिशवरों ने इसकी जॉच पड़ताल की और कहने लगे की यह एक तरह की ताकत है जो की हर चीज को अपनी तरफ खीचंती हैं और इसका एक मरकज है और इसका नाम ग्रॅव्हिटेशनल फोर्स। लेकिन सवाल यह है कि दुनियाँ को बने आज करोड़ों साल हो गये लेकिन इस फोर्स की एनर्जी आज तक कायम है। जैसे पहले इसकी खींने की पॉवर ९.८ मीटर/सेकण्ड थी वही रफ्तार आज भी कायम है नातो यह बढ़ा और ना ही घटा।

अब अगर हम जमीन पर खड़े होकर एक पत्थर को १० किमी/घंटा की रफ्तार से कायनेटिक एनर्जी देकर उछालते है तो ऊपर उठते – उठते इसकी कायनेटीक एनर्जी कम होती जायेगी फिर एक मौके पर यह जीरो होकर पोन्शल एनर्जी में बदल जायेगी क्योंकि इनर्जी तो खत्म नही होती, अब यह पत्थर ऊपर से गिरते हुए पोटेन्शल एनर्जी को कायनेटिक इनर्जी में बदल कर ग्रॅव्हिटेशनल फोर्स की वजह से जमीन पर गिरते ही जमीन पर उतना दबाव डालेगा और अपनी पूरी एनर्जी जमीन को दे देगा और यह एनर्जी दुबारा जमीन में मौजूद ग्रॅव्हिटेशनल सेन्टर पर इकट्ठा हो जाएगी, मतलब यह हुआ की एनर्जी एक साइकल के तहत दुबारा फिर सेन्टर पर पहुँच जाति है इस तरह ग्रॅव्हिटेशनल सेन्टर की एनर्जी वापस वहीं पहुँच गयी, इसलिए आजतक एनर्जी खत्म नही हुई, लेकिन सायन्सदाँ आज तक दुनियाँ में मौजुद ग्रॅव्हिटेशनल कोर्स मरकज की जगह का पता नहीं लगा सके। लेकिन हम आप को बताएँगे की यह फोर्स क्या है और सेन्टर कहाँ है ? और यह किस तरह पूरी दुनियाँ को अपनी ग्रव्हिटी की वजह से संभाले हुए है।

जब दुनियाँ बननी शुरु हुई तो सबसे पहले मक्का की सर जमीन की मिट्टी बनी और यह आहिस्ता – आहिस्ता पूरी दुनिया के चारों तरफ बनती चली गई यानि मक्का इसका मरकज बना और इसके चारें तरफ रेड्यिस की शक्ल में जमीन बनती चली गई। यहाँ तक की मक्का की सर जमीन के नीचे भी रेड्यिस से मिट्टी बनती चली गयी। तकरीबन ५ लाख कि.मी.की रेड्यिस इस मक्का से शुरु हुई। यह जमीन के नीचे भी और आसमानों तक जहाँ चाँद मौजूद है और एक गोलाकार शक्ल इख्तियार करके फैली यानि इस पृथ्वी का डायमीटर ८ लाख

किलोमीटर हुआ। यूँ समझिए की अगर दुनियाँ को एक गेंद समझा जाए तो गेंद के अन्दर एक बीचो – बीच में हलका मरकज होगा उसी तरह मक्का दुनियाँ के बिल्कुल बीच में मौजूद है। अब इस बात की दलील के लिए मक्का के करीब मुल्कों पर गौर करते है। जैसे – जैसे हम मक्का से दुर जाते हैं तो हम एक खास बात देखते हैं की तेल के कुएँ और गैस या तो हम एक खास बात देखते है की तेल के कुएँ और और गैस या तो बिल्कुल नहीं या फिर एक दो जगहों पर ही तेल के कुएँ मिलेंगे। नॉर्थ अमेरिका को देखे तो जो हिस्सा मक्के के करीब पड़ता हे वहाँ तेल के कुएँ मिलेगें। जैसे गल्फ में मेक्सिको, एटलांटा और सैंट झोन इसी तरह साउथ अमेरिका में देखे जैसे वेनुज़ुएला में तेल के कुए मिलेंगे फिर हम युनाइटेड स्टेट में देखें तो नॉर्थ डॅकोटा, पलेरिडा, सैन एनटोनियो जो कि गल्फ आफ मैकसिको के पास है। इन कुछ जगहों पर ही तेल के कुएँ मौजूद हैं। इसी तरह यूरोप में देखें तो मक्का के करीब और ब्लैक सी के पास बोचारेस्ट में तेल के कुए हैं और नार्थ सी में कुछ - कुछ मिलेंगे। इसी तरह ऐजटबाजास, यूकेन, कजाकिस्तान, टर्की में ही तेल के कुएँ मिलते हैं अफ़्रीकी मुल्को को देखे जो के मक्के के करीब पड़ते हैं यहाँ पर भी सबसे ज्यादा तेल मिस्र में मौजूद है । फिर लीबिया, अल्जिरिया, गैबन और अंगोला में तेल के कुएँ मौजूद है लेकिन जितना हम मक्का से दूर जा रहे हैं तेल के कुओं की लादाद भी कम हो रही है इसी तरह इन्डीयन ओशन की तरफ ऑस्ट्रेलिया में भी कुछ तेल के कुएँ मिलते हैं लेकिन मक्के की पूरी स्टेट में तेल के कुएँ मौजूद हैं। इसके आलावा ओमन, कुवैत, इर्राक ईरान में सबसे ज्यादा तेल के कुएँ मौजूद हैं फिर जितना हम मक्के से दूर होते जाते हैं तेल के कुओं की तादाद भी कम होती जाति है और आखरी मुकाम तक कुछ भी नहाँ रहती। अब अगर हम रुस में देखें तो तेल के कुएँ है लेकिन तादाद बहुत कम है। चाइना, जर्काता, बुनई और गुआना में तेल के कुएँ कम होते मिल रहें है।

मक्के के चारों तरफ जितने भी अरब मुल्क है सब के अन्दर तेल बहुत बडी तादाद में मौजूद है और जूँ-जूँ मक्का के चारों तरफ दूर बढ़ते जाते हैं तेल के खजाने कम-कम और कम होते जारहे है। इसकी क्या वजह हो सकती हैं? क्या कभी सायन्स के दानिशवरों ने इसकी अनॅलिसिस् की है और क्यों मक्का के ऊपर हवाई जहाजों को उडना मना है कभी इसके बारे में सोचा है या नहीं? हाँ! अक्सर लोग जहाज की उड़ान की मनाई को यह जरुर कहते मिलेंगे की यह मक्के के अदब की वजह है; लेकिन २३,००० – ३४००० फिर ऊँचाई पर उड़ने वाले जहाज से बे-अदबी कैसे हो सकती है? जब की जहाज बादलों के बीच छिपा रहता है। आईए हम आपको बताते

हैं और इसकी वजह मजहवे इस्लाम की एक रवायत के जिक्र के जरिए करते हैं। कि जब खुदा ने फरिशतों को हुक्म दिया कि जाओ और जमीन से मिट्टी लानी थी तो अल्लाह ने फरिशतों से कहा जमीन की उस जगह से मिट्टी लाओ जो सब से पहले बनी थी यानि अल्लाह का घर काबा, जैसे ही फरिशतों ने काबे की मिट्टी को खींचा तो इस जगह पर एक बहुत बड़ा और गहरा खड़डा बन गया, जैसे की हम जानते हैं कि ह. आदम (अ.स) और ह. हव्वा (अ.स.) का डील डौल काफी बडा था। इसी हिसाब से मिट्टी भी निकाली गयी। फिर इस खड़डे को अपनी जगह भरनी थी इसके लिए मिट्टी ने खिसकना शूरु किया और यह खिसकना काबे की चारो तरफ यानी गोले के आकार में खिसकती गई और आखिर कार यह खड्डा भर तो गया लेकिन ग्रेविटेशनल फ़ोर्स की वजह से फ़ोर्स जब चारो तरफ से आता गया तो वोह काबे की जगह पर एक मरकज़ की शकल में महदूद रह गया । अब जब भी जमीन के ऊपर कोई चीज गिरे या इसके ऊपर कोई भी यंग वगैरह चल फिर कर गिरता है दूनियां.के सभी हिस्सो से ये ग्रॅव्हिटेशनल फोर्स अपने सेन्टर यानि काबे पर पहुँच जाता है इस तरह काबे के नीचे चार लाख किलोमिटर और काबे से चाँद की तरफ चार लाख कि.मी. इसी तरह पूरी कायनात में ये रेडियस की शक्ल में काम कर रहा है और सारा का सारा ग्रॅव्हिटेशनल फोर्स अपने मर्कज पर इकट्ठा होरहा है। इसकी मिसाल इस तरह से है के अगर कोई शख्स आसमान से गिरता है तो उसकी रफ्तार हर सेकण्ड मे बढ़ती जाती है, वजह है ग्रॅव्हिटेशनल फोर्स का खींचना और जैसे ही यह शख्स जमीन पर गिरता है उसके टुकडे – टुकडे हो जाते हैं तो इसकी जितनी भी गतिज ऊर्जा है वह सब पृथ्वी में मिल गयी और अपने मर्कज तक पहुँच गयी। सूरज से गिरने वाली किरने सबसे ज्यादा इसी मर्कज पर गिरती है और काफी गर्म होती है। काबे के आस पास जितने भी मुलक़ हैं जैसे पूरा सऊदी, दुबई, ईराक, कुवैत, ईरान, मस्कत ये सभी मुल्क काबे के काफी करीब मौजूद हैं और सबसे ज्यादा गमी भी यहीं पड़ती है। इसके अलावा दुनियाँ के जितने भी तेल के कुएँ है उन तेल के कुओं का ९५ % यही मौजूद है उसकी यही वजह है। ग्रॅव्हिटेशनल का मकर्ज होने की वजह से यहाँ पर मिलने वाले पानी में ये ग्रॅव्हिटेशनल फोर्स घुल जाता है जिसकी वजह से पेट्रोलियम में मॅटर्स बहुत तादाद में पाए जाते हैं। बचे हुए ५% तेल के कुएँ इसके इस सेन्टर के एक तरह से सब- सेन्टर हैं, लेकिन यहाँ पर तेल की तादाद महदूद है इसलिए यहाँ पर जितना तेल मौजूद है उसका एक बक्त मुकर्रर है लेकिन अरब मुल्कों में तेल बराबर पैदा होता रहता है।

दुनियाँ के बाकी हिस्सों में मौजूद ५ तेल कुएँ में मौजूद ५% क्यों हुआ? इसके लिए हम आपको एक और वजह बता रहे हैं।

जब मक्के की आस पास जमीन गोले की शक्ल में बढ़ती चली गयी तो यहाँ पूरी दुनियाँ एक मैदान बन गयी और जमीन के अन्दर अन्दर कुदरती तौर पर नालियाँ बन गयीं। जो कि अरब में बनने वाले तेल के ओव्हरफ्लो होने पर इन ही नालियों के जरिए इन ५ प्रतिशत हिस्सों तक पहुँच गये और जब तक ये पूरी पृथ्वी हिस्सों में नहीं बँटी हुई थी उस वक्त तक ये पैदा हुआ तेल ओव्हरफ्लों के जरिए बह बहकर इन जगहों पर पहुँचता रहा लेकिन जब इस पृथ्वी पर आसमान से आग के गोले जिन्हे हम उल्कापिण्ड कहते हैं गिरना शुरु हुए तो ये पॅथ्वी हिस्सों में बँटना शुरु हुई, तो अब जमीन के अन्दर बनी हुई नालियाँ टूट गयी और उनके रास्ते बन्द हो गये। तो ये तेल का रिसाव अरब तक ही महदूद रह गया और जितना तेल पहुँच चुका था बस उतने ही हिस्से में मौजूद है लेकिन अरब मुल्को में और उनके नजदीकी मुल्कों में फोर्स ऑफ ग्रॅव्हिटेशन की वजह से बराबर पैदा हो रहा है और ऐसा ही मुस्तक्बिल में होता रहेगा जब तक दुनियाँ कायम है। इसलिए कुरआन में होता रहेगा जब तक दुनियाँ कायम है। इसलिए कुरआन में ये कहना कयामत के रोज पानी में आग लग जायेगी जिसकी वजह से इस कायनात का टेम्प्रेचर २००० OC से ऊपर पहुँच जायेगा और हाइड्रोजन और ऑक्सीजन पानी से टुट जाएँगे, और खुद ही जलने लगेगे, फोर्स ऑफ ग्रॅव्हिटेशन का मर्कज काबा है और इस फोर्स की वजह से चाँदभी इसकी गिरफ्त में मौजूद है और दुनिया के जितने ऊँचे नीचे पहाडों पर इन्सान चल फिर रहा है लेकिन गिरता नहीं यही एक फोर्स है जो सबको अपने हिसाब से बॅल्इन्स में रखे हुए है और कुरआन का ये कहना ऐ *इन्सानों तुम दुनियाँ में कहीं भी हो नमाज के वक्त अपना मुँह काबे की तरफ कर लिया करो और जिन्दगी में एक बार काबा पहुँच कर हज व तवाफ करो इसमें तुम्हारी भलाई है* इसलिए जब मुसलमान काबे के पास पहुँच जाते हैं तो वो सेन्टर के सबसे नजदीक और करीब होते हैं और उन्हें वहाँ पर एक नयी ताकत मिल जाती है और जब इन्सान काबे के चक्कर लगा रहा होता है तो सिंफ उसके दरमियान अल्लाह का और सिंफ अल्लाह का घर होता हैं बिल्कुल सीधे पॉवर सेन्टर (मर्कज) और बन्दा और तवाफ करने से उसके जिस्म को ईमान की एक तरोताजा ताकत (नूर) मिलती हैं और शायद इसीलिए यह कौल कहा गया है कि हज और तवाफ (परिक्रमा) करने के बाद इन्सान बिल्कुल वैसा ही हो जाता है जैसे वह एक पैदा हुआ बच्चा (क्योंकि हम यह जानते हैस कि पैदा वह हुआ बच्चा अपनी ताकत का ९८ हिस्सा जिस्म की सेल्स् को बनाने में खर्च करता है और सेल में मौजूद माइटोकॉन्ड्रिया (पॉवर हाउस) की ताकत को बढ़ाता है और २ दूसरे कामों में खर्च करता है यानि अब इसका ईमान पूरी तरह से मुकम्मिल हो रहा है और हमने यह भी देखा की दुनिया के सारे मुसलमानों को सिर्फ काबे का तवाफ़ करने का हुकुम और कहीं भी नहीं लेकिन हमने गैर कौमो में देखा वह कई मुकामों पर परिक्रमा करते है और इस परिक्रमा की सबसे ताजा

रिवायत हिन्दु मजहब के दानिशवरों ने अपनी भोली भाली कौम को अयोध्या में पंचकोसी परिक्रमा के लिए उसका रहे जब इनके दानिशवरों से पूछा गया की इसका क्या मतलब तो उन्होने जवाब दिया कि हमारे भगवान राम जी की नगरी में चप्पे-चप्पे पर मंदिर मौजूद हैं तो हर मंदिर में जा जाकर अलग-अलग परिक्रमा (तवाफ) करनी होती है तो इन भक्तो की आसानी के लिए पाँच कोस के घेरे में जितने भी मंदिर है सबकी परिक्रमा हो जाती है और जब काफी वक्त गुजर गया पंचकोसी परिक्रमा करते हुए तो इन हिन्दुओं के नये ठेकेदारों की अक्लो में शैतान ने फुतुर पैदा करना शुरु किया कि कहीं कयामत के दिन ऐसा न हो की यह हिन्दु अपनी जान को जहन्नुम की आग से बचने के लिए यह न कहे कि ऐ खुदा हमनेकाबे कि परिक्रमा तो नहीं की लेकिन मस्जिद तो आपका ही घर है और उस पंचकोसी परिक्रमा में बाबरी मस्जिद नाम का एक घर है हमने तो उसी घर की परिक्रमा की थी हमने अपने दिल में उसकी नीयत की थी आप मुझे जहन्नुम की आग से बचाइये।

तब इन भोले भाले सीधे और अहिंसा की इबादत करने वाले हिन्दु कौम को बाबरी मस्जिद को शहीद करने के लिए उकसाया और भोले भाले हिन्दुओं को झुठी कहानियाँ बयान करनी शुरु की यह तो रामजी की पैदाइश की जगह थी जिसे बाबर नाम के एक मुगल ने तोड़ कर मस्जिद तामीर कर दी और यह पूरी हिन्दु कौम पर एक कलंक है लिहाजा इसको तोड़ा जाए और इसके लिए बाकायदा इस अहिंसा मानने वाली कौम के हाथों में हथियार देकर मुसलमानों के खिलाफ नफरत के बीज बोये गये और एक दिन मौका मिलते ही बाबरी मस्जिद शहीद करदी गयी.।

इस तरह बाबरी मस्जिद को हटाने के लिए पंचकोसी परिक्रमा का गलत इस्तेमाल किया। अब इन ठेकेदारों को कौन समझाए की पांचकोस लम्बे घेरे में वहाँ के रहने वाले भी हैं जो हिन्दु भी है मुसल्मान भी है। इस घेरे में कितने गंदे जानवर जैसे सूअर, कुत्ते और ना जाने कितने मल मूत्र के मुकाम और नापाक औरते और उनके घरो में पलने वाले पालतु जानवर सभी इस पांचकोसी के घेरे में आते है जो भगवान के नाम पर इन सभी की हो रही है और मुकाबला करते है काबे का जिसका मक्सद है ताकत (नूर) का पाना और सायन्स के तराजू में तोला जाए तो हमेशा पल्ला भारी रहने वाला है । अल्लाह से यही दुआ है कि अल्लाह भोले भाले हिन्दुओं को मजधार से निकालने वाले मसीहा भेजे ताकि इनकी आंखों पर पडे पर्दे उठ जाए, आमीन !

अब जब की श्री रामजी का ज़िक्र निकल आया है तो क्यों न राज का पर्दा उठा दिया जाए। आज से ५००० साल

पहले राम की पैदाइश मिस्र में हुई थी और इस जगह का नाम अयोध्या ही था और यह जगह चार पहाड़ों से घिरी है। जब यह अपने कबीले के सरदार बने तो इनकी जंग एक दूसरे कबीले से हुई और यह हारा हुआ कबीला काफी ताकतवर था और काफी बड़े हिस्से में इसकी कबिलाई फैली थी। उस वक्त मिस अरब, हिन्दुस्तान, ईरान अफगानिस्तान यह सभी आपस में जुड़े थे इसलिये अगर कोई कबीला कामियाब होता तो वह अपने आपको पूरी दूनियाँ जीता समजता था। तो इसी कड़ी में राम अपनी सेना के साथ घोडे पर आये (जब कि घोडा हिन्दुस्तान की पैदाहाश नही है) और हिन्दुस्तान पहुँचकर लंका के करीब पहुँच गये। उस वक्त लंका की बादशाहत रावण नाम के एक इन्सान के हाथ में थी। यहाँ पर राम और रावण में जंग हुई और इस जंग में रावण हार गया और राम इस हिन्दुस्तान में रहने लगे। यह एक नेक इन्सान थे।इन्होने कभी भी बुतों की पुजा नही की, इसके अलावा यह एक ऐसे बादशाह हुए जिन्होने अपनी अवाम के लिए काफी काम किये और उस दौर में यह एक प्रथा (चलन) थी कि राजा को लोग अपना पालनहार समझते थे। इन लोगों का ऐसा सोचना था कि जो हमारी रक्षा (हिफाजत) करे और जो हमारी रोजी रोटी का इन्तेजाम करे वही हमारा भगवान है। इसलिए राम को लोगों ने बतो की शक्ल में ढ़ालकर उनकी पडूजा करने लगे जबकी राम के किसी भी लेख में बूतों की पूजा करने लगे जबकी राम के किसी भी लेख में बूतों की पूजा का कोई जिक्र नहीं है। हिन्दुओं के ठेकेदारों को यह मालूम होना चाहिए की अयोधॅया का मतलब होता है जिसे जीता ना जा सके जब की हिन्दुस्तान की अयोध्या को बाबर ने जीता और हुकुमत की; लेकिन हाँ मिस् की अयोध्या आज भी वैसे ही है और उस पर किसी ने कब्जा नहीं किया और आज भी इस जगह पर इस नेक इन्सान के मानने वाले मौजूद है और वही उनकी पैदा होने की जगह है।

राम की पैदाइश मिस्र में अयोध्या नाम की जगह पर हुई थी।

परिक्रमा के बीच में बाबरी मस्जिद आती थी इसलिए इसे शहीद किया गया और यह कह कर बहाना किया कि राम की पैदाइश की जगह हैं, यह कहाँ का इन्साफ है? लेकिन इन गैर कौमों को परिक्रमा जैसी रवायतों की वजह जानना कोई अहमीयत नहीं रखता इनका काम तो सिर्फ सरजमीन पर फसाद फैलाना है क्योंकि अल्लाह ने मना किया है बस इसलिए।

इस तरह हमने आपको ग्रॅव्हिटी का मरकज बताया जो कि अब तक सायन्सदाँ नही ढूँढ़सके और तवाफ का सायन्टिफिक रीजन भी बतलाया और हमारी यह कोशिश है कि हर मजहब के लोग सच्चे और सीधे रास्ते पर चले, आमीन.!

रौशनी (नूर) पहुँचाने का तरीका

कुरआन में जैसे की लिखा है कि अल्लाह ने फमार्या अपने फरिश्तो से कि में दुनियाँ में अपना नायाब (खलीफा) भेजने वाला हूँ और अल्लाह ने ह.आदम (अ.स.) और ह. हव्वा (अ.स.) को दुनियाँ में सीधे तौर पर भेजा और हिदायत दी कि ऐ आदम दुनियाँ में लोगो को सीधे राह पर चलना सिखाओ और नेक रास्ते पर ले जाओ। जैसे की हम सभी जानते हैं अल्लाह ने वह सभी जरुरी बाते जो इल्म वाली थी ह. आदम (अ.स) को समझा दी थी और ह. आदम (अ.स.) के अन्दर सुल्बे मोहम्मदी मौजूद कर दिया था। इस तरह ह.आदम (अ.स.) के बाद जितने भी पैगम्बर दुनियाँ में तशरीफ लाये सब में सुल्बे मोहम्मदी मौजूद था। अल्लाह तआला ने सीधे तौर पर वह ईमान का नूर सभी पैगम्बरों में उतारा ताकि मखलूक को यह कुरआन जो की अल्लाह तआला की नूरानी आयतों (कोड़स्) से भरा है पहुँच सके और गैर कौमों का यह कहना की यह आयतें अल्लाह ने हम पर क्यों नही उतारी र्सिफ ह. मोहम्मद (स.अ.स) पर ही क्यों उतारी ? अल्लाह रब्बुल इज्जत ने जूबूर उतारी तो ह. दाऊद (अ.स.) पर जो की पैगम्बर हुए, तौरैत उतारी तो उसके वक्त ह. मुसा (अ.स) थे जिन्हें तौरैत की आयतें सौपी गयी और ह. ईसा (अ.स) के दुनियाँ में तशरीफ लाने के पहले और ह. मूसा (अ.स.) के बाद जितने भी पैगम्बर आये सबने तौरैत की आयतों को लोगो तक पहुँचाया और इस्लाम मुकम्मल होने को आया तो अल्लाह ने फरमाया की अब हम इस दुनियाँ पर आखरी नबी भेज रहे हैं और अल्लाह ने ऐसा ही किया। जब आज से १४०० साल पहले हुजुरे अकदस (स.अ.) को इस सर जमीन पर भेजा और आप जब इस सर जमीन पर अपनी पैगम्बरी का ऐलान करते हैं तो मुशरिकों ने आपको पैगम्बर मानने से इन्कार किया और आपको दीवाना और शायर कहा और यह भी कहा कि यह आयतें (कोडस्) हम (आम इन्सान) पर क्यों नही उतारी गयी, र्सिफ ह. मोहम्मद (स.अ) पर ही क्यों उतारी गयी ? जो कि हम जैसा ही एक आम इन्सान है, जो की हमारे बुतों को बुरा भला कहता है और हमारे बाप दादा के जमाने से चल रही रिवायतों को करने से मना कर रहा है इस तरह यह जहालत का दौर था।

अल्लाह पाक ने पहले अपनी नूरानी ताकत (पॉवर) सीधे पहुँचायी, लेकिन यह देखने में आया की जब यह नूर जहाँ से निकलता है तो बहुत तेज होता है लेकिन जब यह बेशुमार दूरी पर पहुँचता है तो यह काफी धीमी रौशनी देता है। मतलब यह हुआ की डायरेक्ट करन्ट (DC) आगे बढ़ते – बढ़ते रौशनी कम करता जाता है लेकिन अगर उसको नंगे हाथ से छुए तो उतना ही करण्ट लगता है जितना कि शुरु की जगह जहाँ से निकलता है, यानी करन्ट की ताकत में कोई कमी नहीं है। मतलब यह हुआ की अल्लाह का दिया हुआ नूर जो की अल्लाह के बन्दों तक इमान की शक्ल में पहुँच रहा था उसकी रौशनी कम हो जाती थी इसलिए अल्लाह ने इस नूर की ताकत को बढ़ाने के लिए बनी इसाईल पर तौरैत की आयतों को अपने बन्दो तक पहुँचाने के लिए एक साथ सैकड़ों पैगम्बर भैजे। अब देखना है कि पैगम्बर को अल्लाह ने कौन सी ताकत बख्शी जो आम बन्दे को सीधे तौर पर नही पहुँचायी जा सकती थी फिर हमने इसके लिए कुरआन की इस आयत (कोड़) को देखा जो कि *पारा नं. २८ में सुरतुल हश की आयत नं.२१ में अल्लाह फमार्ता हैं कि ऐ पैगम्बर अगर हमने यह कुरआन किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता की अल्लाह के डर के मारे झुक गया और फट गया होता और हम यह मिसालें लोगों के लिए बयान फमार्ते हैं* शायद वह तवज्जो दे ऊपर दी हुई आयत में अल्लाह ने अपने कलाम की ताकत को बहुत दूर की बात है अगर किसी भारी भरकम पहाड़ पर ही उतारते तो यह पहाड़ इसके नूर (करन्ट) को नही बरर्दाशत कर सकता, इसको र्सिफ पैगम्बर ही संभाल सकते हैं और पैगम्बर ही इसे आम बन्दों तक पहुँचा सकते हैं।

आज के इस नये जमाने में हम एक रौशनी देखते है जिससे हमारे घरों में चिराग होता है। पहले पहल यह बिजली हमारे घरों तक पहुँचते – पहुँचते काफी कम रौशनी देती थी, फिर इसके बाद यह तय पाया की अगर हम इसे सीधे तौर पर न पहुँचा कर कुछ सब स्टेशनों के जरिए पहुँचाऐ तो इसकी पावर आखरी मुकाम तक एक जैसी रहने वाली है और इसके लिए जगह जगह पर ट्रान्सफॉर्मर बनाये गये। इनका काम यह है की हर इलाकें में उसकी ताकत के हिसाब से बिजली पहुँचायी जाए। इसकी मिसाल ऐसी है कि अगर किसी घर में आधा अॅम्पीयर का मीटर हो और उसमें अचानक पॉवर बढ़ जाए तो घर में रखे हुए बल्ब, टी.व्ही, फिज्र वगैरह खराब हो जाते है क्योंकि इनको इनकी ताकत बरर्दाश्त करने से ज्यादा करन्ट पहुँच गया। इसके अलावा अगर कोई सेल से बजने वाला रेडियो है और अगर उसके अन्दर सीधी तौर पर इलेक्ट्रि क करन्ट से जोड़ दे तो रेडियोच फौरन जल जागा (बर्बाद हो जाएगा) और अगर इस रेडियो को अॅडॉप्टर के जरिये करण्ट पहुँचाते तो ऐसा नही होता क्योंकि अॅडॉप्टर इस हाई व्होल्टेज कोकम करके लो व्होल्टेज में तब्दील कर के रेडियो में भेजता और इससे

किसी भी अॅडॉप्टर में ट्रान्सफॉर्मर मौजूद है और वह करुरत के हिसाब से पॉवर ाप्लाई करता है। अब हम एक और तरह की ताकत के बारे में गुफ्तगू कर रहे हैं, जैसा की हम जानते हैं कि अॅडॉप्टर में ट्रान्सफॉर्मर मौजूद है और वह जरूरत के हिसाब से पॉवर सप्लाई करता है। अब हम एक और तरह की ताकत के बारे में गुफ्तगू कर रहे हैं, जैसा की हमने ऊपर देखा की घरो तक पूरी रौशनी पहुँचे उसके लिए सब – स्टेशन बनाये गए। अब देखना यह है कि यह कन्सेप्ट कहाँ से ली गयी तो अगर जेहन पर जोर डालें तो ऊपर हमने पैगम्बर का हवाला दिया है और उसके आगे फिर बयान करते हैं कि अल्लाह तआला ने नबी ह. मोहम्मद (स.अ) को भेजने के पहले दुनियाँ में आने वाले सभी पैगम्बरों से आपकी तस्दीक करवाते रहे की ह. मोमद (स.अ) को सबसे आखिर में भेजा जाएगा, और जब ह. ईसा (अ.स) को भेजा गया तो आपने कहा की मेरे बाद एक और पैगम्बर आने वाले है और उसका नाम अहमद होगा (आसमानो में ह. मोहम्मद स.अ.स. का नाम अहमद है) और दुनियाँ में तशरीफ लाने वाले आखरी पैगम्बर होंगे। और जब आप दुनियाँ में आए और अपनी नबुव्वित का ऐलान किया और कुरआन जो आप पर उतरा जो कि हिकमत और नूरानी आयतों से भरा हुआ है उस नूर को लोगों तक पहुँचाते रहे। अल्लाह पाक यह पहले बयान कर चुके थे कि ह. मोहम्मद (स.अ) के बाद अब कोई पैगम्बर आने वला नहीं तो यह नूरानी आयतें जिसमे ईमान की ताकत (पॉवर) लबालब भरी हैं यह पूरी की पूरी ताकत नबी के बाद मखलूक तक कैसे पहुँचाई जाए इसलिए अल्लाह पाक ने सब – स्टेशन ऑफ पावर का इन्तेजाम किया और नबूव्वत के बाद खिलाफत के दौर में खलीफाओं के जरिए ईमान का पॉवर सप्लाई होता रहा। फिर इमामत का दौर शुरु हुआ और इमामों ने यही काम किया और जब ईमामत का दौर परदाऐ गैव मे हुआ तो वलीअत का दौर शुरू किया और वलियत के जरिए आज तक मखलूके इन्सान को ईमान के पॉवर की सप्लाई पहुँच रही है, जो कि कयामत तक पहुँचती रहेगी।

इस तरह हमने देखा की कुरआन के इसी को आज के नये कॉन्सेप्ट को आजके नए जमाने के सायन्स के माहिरों ने इलेक्ट्रिक पॉवर में इस्तेमाल किया जो आज हमारे घरों तक पहुँच रही है जिसे AC करन्ट यानि अल्टरनेट करन्ट कहते हैं जिसका मतलब निकलता है. एक के बाद दूसरा और इसमें पॉवर का सही इसतेमाल होता है यानि पूरी रौशनी घरों तक पहुँचती है जितनी उनको जरुरत होती हैं।

आज के इस दौर में कीमती चीजों की हिफाजत किस तरह की जाए जो हर पल उसकी खबर देती रहे तो सायन्सदॉनों ने इसके लिए हिडेन कैमरों की खोज की जिससे की यह उस जगह के हर आने जाने वालों की पूरी खबर उसकी हरकतों के साथ दे सके और उसने क्या-क्या किया और क्या-क्या बोला और इसकी एक पूरी कैसेट बनती रहती है जो पल-पल की खबर रखती है और उस कीमती चीज को अगर चुराए तो पकडे जाते हैं और सुबूत के तौर पर व्हीडियों कैसेट पेश की जाति है लेकिन चुराने वाले को इसका एहसास भी नहीं होता की उसका गुनाह कैमेरे में कैद हो चुका है। अब हम यह बताएँगे कि इन सायन्स के माहिरों ने कुरआनी किन आयतों को पढ़कर इसकी ईजाद की। कुरान के पारा नं. २४ सूरेह हामीम अस सज्द की आयत नं. २० में अल्लाह फरमाता है कि यहाँ तक कि उसके पास जमा होगे तो जैसे – जैसे काम लोग (दुनिया) में करते रहते है उनके कान और उनकी ऑखें और उनके जबडे उनके मुकाबले में गवाही देंगे। अल्लाह फर्माता है कि हम बन्दे के शह रग से भी ज्यादा करीब हैं और हम उसके दिल के राज जानते हैं यानि मतलब यह हुआ की हमारे जिस्म में कुछ इस तरह की हिकमत मौजूद है जो अल्लाह पाक को हर तरह की जानकारी पहुँचा रही है। उसी तरह जिस तरह अगर हम किसी इन्सान के जिस्म में कोई ट्रान्समीटर लगा दे तो यह ट्रान्समीटर जहाँ पर इसका सेन्टर मौजूद है वहाँ पर पूरी जानकारी पहुँचाता रहेगा जो कुछ भी यह बात चीत करेगा वह सेन्टर को पल-पल की खबर देता रहेगा।

अब सायन्सदॉनों ने इन्सानी जिस्म की तहकीकात शुरु की और यह पाया की इन्सानी जिस्म बेहिसाब सेल्स (कोशों) से मिलकर बना है और हमारे जिस्म में यह हमारे नक्श (फोटो) का काम करता है। हर सेल में जान है इसका अपना खुद का पॉवर हाऊस है और इसे माइटोकॉन्ड्रीया के नाम से जानते हैं इसमें एक न्युक्लिअस् (मर्कज) है जो पूरी सेल में मौजूद हिस्सों को अपने काबू में रखता है। यह काफी महीन है, इसमें सेन्स होती है और अभी कुछ महीन पहले ही एक भेड़ के खून में एक अच्छे नस्ल की भेड़ की सेल को ट्रान्सप्लान्ट किया गया और जब यह भ्रूण मेमने में तब्दील होकर अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ तो इस भैड़ की शक्ल अपनी पैदा करने वाली माँ जैसी न होकर उस भेड़ जैसी शक्ल व सूरत और सेहतमन्द थी जिसका सेल इसके भ्रूण मे डाला गया था और सायनसदॉनों ने इसका नाम क्लोन रखा। तो यह बात साबित हो गयी की जानदार चीजों का नक्श उसकी सेल में मौजूद हैं और यह बेहिसाब की गिनती में मौजूद है लेकिन यह क्लोन नाम की खअेज भी इस्लाम

ने १४०० साल पहले कर दी थी जब ह. मोहम्मद (स.अ) ने एक दिन और एक ही वक्त में ४० जगहों पर पहुँच कर सहाबियों को हैरत में डाल दिया था।

अब सायन्स के माहिर लोगों ने इन इन्सानी सेल्स की बारीकी से जाँच पडताल की तो लामूम यह हुआ की यह हमारी आवाज और हरकत भी हर पल कैद करती रहती है जिस तरह हमारे कान और आँखें करती हैं। आज के दौर में जब यह सब जानकारी हासिल कर ली तो कैमरे, ऑडियो, व्हिडियो, कैसट, खुफिया कैमेरा और टेप मशीन जैसे नायाब इन्सानी जरुरीयाती सामानों की एजाद की, जिसका लोगों को बेहद फायदा मिल रहा है।

अब कुरआन की उस आयत जिसमें अल्लाह ने साफ फर्मा या कि यहाँ तक की जब (कयामत के दिन) उसके पास जमा होंगे तो जैसे-जैसे काम लोग करते रहे उनके कान और उनकी आँखे और उनके चमड़े (बगैराह) उनके मुकाबले में गवाही देंगे पारा नं. २४ सूरेह हामीम अस सज्द आयत नं. २० में अल्लाह ने एसा ही खुलासा

आज से १४०० साल पहले किया तो कुरान की इन्ही आयतों का मुताला करके सायन्स के माहिरों ने इन्सानी आराइशों की चीजों को ढूँढ़ निकाला जब की गैर कौमों के पास ऐसी कोई हिकमतवाली किताब मौजूद नही हैं सिवाई दकियानूस कहानियों जैसे एक बार समुद्र को फेटा जा रहा था (मथंन किया जा रहा था) तो समुद्र से अमृत निकल पड़ा, तो उसको पाने के लिए राक्षसों और देवताओं में जंग छिड गयी और आखिर में राक्षसों की हार हुई और अमृत देवताओं को पीने को मिला।अब अगर इस पर खूब माथा पच्ची की जाए भी तो उसके बावजूद कुछ मिलने वाला नहीं। इस नये जमाने के इन्सानों को इसका कोई फायदा नहीं। इस नये जमाने के इन्सानों को इसका कोई फायदा नहीं मिलने वाला। लेकिन अल्लाह ने इसी पानी के अन्दर एक खूब ठण्डी हवा जिसे बादे अकीम कहते हैं उसको जब पानी में मिलाया गया तो मथंन शुरु हो गया और इससे म्पोगे किस्म का फेना पैदा हुआ और अल्लाह रब्बुल इज्जत ने इसी फैनाए से दो दिन में सात आसमानों को बनाया। इसी आयत से झाग पैदा होता है और जब हवा एक खास किस्म की हो तो उसका झाग भी अनोखा होगा जो की तमाम अनासिरों (तत्वों) से मिलकर बना होगा जो कि आसमानों में मौजूद है और जिस तरह झाग बिल्कुल मुलायम किस्म का होता है उसी तरह यह आसमान भी बिल्कुल नरम होता है तब ही तो आकाश पर उडने वाले यंत्र आसानी से बादलों में घुस जाते हैं और गायब (नही दिखते) हो जाते हैं और आसमानी परवाज करने वालों को जरा भी नुकसान नहीं पहुँचाते हैं।

कुरआन की हर छोटी आयत (कोड) और बडी से बड़ी आयत (कोड) में हिकमत छिपी हुई है जो दुनिया के लोगो के लिए फायदेमंद साबित हो रही हैं। इसलिए हमारा मजहबे इस्लाम एक माडर्न और ब्रॉड मज़हब है और लोगो के लिए आसानी पैदा करने वाला मजहब है।

ऊपर की आयत (कोड) नं. २० की जो की सूरेह हामीम अस सज्द में मौजूद है यह इस बात की गवाही देती है कि जो कुछ भी इन्सान दुनियाँ में अच्छे और बुरे काम कर रहा है और अगर इन्सान कयामत के दिन अपने गुनाहों को झुठलाने की कोशिश करेगा तो अल्लाह पाक हमारे कान, आँखे और हाथ – पॉव में मौजूद वह खुफिया कैमरों को अपने पास मौजूद नूरी रिमोट के जरिए उस शख्स की पूरी व्हीडियो कैसेट दिखा देगा की अब खुद अपनी नजरों से देखो कि तुमने दुनिया में क्या-क्या किया और क्या नहीं किया, तब यह इन्सान अपनी गर्दन को शरम से झुका लेगा । तो इस आयत ने जो खुलासा किया वह नेक और ईमान पर चलने वालों के लिए एक सबक है और गुमराह लोगों के लिए एक डर जो इतना गिर चुके हैं कि यह इनकी सोच से काफी दूर है क्यों कि अल्लाह फर्माता है हमने ऐसे गुनाहगार काफिरों के आखों पर पर्दा ड़ाल रखा है और कानों में पिघला सिसा जिस वजह से यह सही और सीधे रास्ते से भटक चुके हैं और यह आँखें होते हुए भी अन्धे और कान होते हुए बहरे हैं और अल्लाह काफिरों को इनकी गुमराही की सजा देने वाला है इसके लिए जहन्नुम की दहकती आग तैयार है। उस दिन इनका कोई मदद्गार नहीं होगा। जिसकी यह पूजा किया करते थे वह भी इनसे अपना मुँह मोड लेंगे।

कुरआन के पारा नं. २६ की सूरे काफ की आयत नं. १६ में अल्लाह ने अपने बन्दे के नजदीक होने का जिक्र किया है। आइये इस आयत को देखें और मुताअला करें और हमने आदमी को पैदा किया है और हम उसके दिल में आने वाले खयालो को जानते हैं और हम उसके दिल मे आने वाले खयालो को जानते हैं और हम इसके जिस्म की धड़कती शेह रग से ज्यादा उसके नज़दीक हैं । कुरआन के पारा नं. २५ की सूरेह जसिआ की आयत नं. २९ में अल्लाह तआला फर्माता हैं कि यह हमारा दफ्तर (कन्ट्रोल रुम या मकर्लज) है जो तुम्हारे कामों का सच्चा हाल बतलाता है जो कुछ तुम करते थे हम उनको लिखवाते जाते थे।

ऊपर हमने कुरआन की दो आयतो (कोड्स) को लिया है। कोड़ १६ अ में अल्लाह रब्बुल इज्जत ने खुद को बन्दों की शयरग से भी ज्यादा करीब बताया है इसका मतलब सीधे तौर पर यह निकलता है कि हमारे जिस्म में

मौजूद दिमाग जो की कन्ट्रोल रुम का काम करता है और आज सायन्सदॉनों ने इसे साबित भी कर दिया की दीमाग ही, जिस्म में मौजूद सभी हिस्सों को अपने तरीके से चलता है और जिस्म में मौजूद नसों का बिछा हुआ एक तंत्र जिसे नरव्हस सिस्टम कहते हैं इस काम के लिए मदद करते हैं। यानि दीमाग से निकलने वाले पैगाम को जिस्म के मुखतलीफ हिस्सों में पहुँचाते हैं। लिहाज जो कुछ भी इन्सान अच्छे और बुरे मन्सूबे सोचता है सब इन्सान के मेमरी बॉक्स में रेकार्ड हो जाता है और इस पूरे दिमाग की मेनलाइन का कनेक्शन अल्लाह तआला के दफ्तर से होता है और कयामत के दिन जब बन्दा अपने गुनाहों को झूठलाऐगा तो अल्लाह तआला उसकी रेकार्ड की गई आवाज को खोलकर सुना देगा, इसलिए इस आयत में अल्लाह का कहना है की मैं बन्दों के उसकी शह रग से भी ज्यादा करीब हूँ क्योंकि जैसे ही बन्दा अल्लाह को दिल में याद करता है ईल्लाह उसकी तरफ मुतवज्जों होता है और ऊपर की आयत (कोड) में अल्लाह ने अपने दफ्तर की तफसील बयान की, और बन्दे को होशियार किया की तुम अब भी संभल जाओ और सीधी राह पर चलो अपने दिल में बुग्ज न करो, बूरे मन्सुबों को मत बनाओं क्योंकि समन्दर की तह में भी जो तुम बूरे काम करते हो वह सब अल्लाह के दफ्तर में लाइव टेलीकास्ट हो रहा है और यही तुम्हारी पकड़ हैं। अगर हम इसकी और गहराई में जाए तो यह किताब पूरी नहीं पड़ेगी और किताबे लिखनी पडेगी। क्योंकि यह आयत (कोड) की तफसील पूरे इन्सानी जिस्म के खुफिया एजाओं (parts) को खोलकर बयान कर रही है लेकिन हम इतना और कहना चाहेंगे की अल्लाह निहायत बख्शने वाला है तब ही वह इन्सानों को साफ साफ बयान कर रहा है कि अब सुधर जाओं। कहीं ऐसा ना हो की तुम्हारी नमाज पढ़ी जॉए और वक्ते कयामत तुम्हारे सिर गुनाहगारों की तरह झुके हों। अल्लाह हम सब को गुनाहों से महफूज रखे **आमीन**!

इन्सान के किए गये आमाल खुदा तक कैसे पहुँचते हैं ?

सायन्स के माहिरों ने एक थ्योरी ईजाद की के इस कायनात में जितने भी मॅटरर्स (पदार्थ) हैं चाहें वह जानवर, इन्सान, पेड़-पौधे या वह चीजें जिन में जान नहीं होती और जो गर्म होते हैं इन सभी में से हर पल एक वेव्ह

(लहर) लगातार निकलती रहती है। सायन्सदॉनों ने इस तरंगो को किजमी या रिकटिम वेव्ह कहा हैं लेकिन जब इन सायन्सदॉनो ने ये देखा कि नॉर्थ पोल (उत्तरीधृव) से भी ये तरंगे निकल रही हैं तो इन्होने अपनी थ्योरी को बदला और ये कहा सभी लिविंग और नॉनलिविंग गर्म और ठण्डी सभी में से रिकटम वेव लगातार निकलती रहती है लेकिन आज तक वो ये नहीं बता सके कि इसकी निकलने की वजह क्या है? आज के सायन्सदृानों ने टम्प्रेचर को ० से नीचे लाने के लिए काफी कोशिश की लेकिन २२० तक ही पहुँच सके। जब कि इनकी कोशिश थी अगर हम ३०० तक पहुँच जाएँ तो इन पदार्थो के मॉलिक्युलस में क्या बदलाव आयेगा।

अब इसके अअगे की थ्योरी आप लोगों को नुसरत आलम शेख खुद बता रहे हैं कि रिक्कम वेव्हज पैदा होने की क्या वजह है और टम्प्रेचर (-३००) तक पहुँच जाएँ तो मॉलेक्युलस में क्या बदलाव होगा।

ये तो हम जानते ही हैं कि मॉलिक्युल्स के अन्दर नुक्लिउस में प्रोटोन मौजूद रहता है और इलेक्ट्रॉन ऑरबिट में चक्कर लगा रहे हैं। अगर इन मॉलिक्युल्स को -३०० पर ले जाएँ तो इलेक्ट्रान चक्कर लगाना बन्द कर देंगे और अब इसके अन्दर से निकलने वाली रिक्कम वेव्ह बन्द हो जायेगा।

इसका मतलब ये हुआ की इलेक्ट्रॉन की मौजुदगी की वजहसे रिक्कम वेव नहीं निकलती है बल्कि इलेक्ट्रॉन के चक्कर लगाने की वजह से रिजक्कम वेव्ह निकल रही है जो कि इलेक्ट्रॉन के चक्कर न लगाने की वजह से अब निकलना बन्द हो चुका है। अब अगर -३०० का टेम्प्रेचर पानी में डाला जाए तो इसके इलेक्ट्रॉन जम जाते हैं जबकि यह भी देखा है कि ० पर बर्फ जमती है और जैसे ही यह बर्फ साधारण वातावरण में आती है पिघलना शुरु हो जाती है लेकिन -३०० पर पानी के टुकडे को अगर जलती हुई आग में डाल दिया जाए तो भी वो नहीं पिघलेगा, इस टुकडे को अगर हथोड़ों से पिटा जाए तो भी यह जरा भी टस से मस नहीं होगा।

इसी तरह जितने भी लिविंग और नॉन लिविंग मॉलेक्युल्स हैं उनके अन्दर से रिक्कम वेव्ह निकलती रहती है लेकिन जो नॉन लिविंग हैं जैसे की अगर कोई इन्सान मर जाए या किसी पेड़ को काट कर डाल दिया जाये तो इसके अन्दर से रिक्कम वेव्ह्ज आहिस्ता निकलना कम हो जाती है।

अब अगर हम इसे ट्रान्समीटर की शक्ल में देखें जैसे कि हम जानते हैं रेडियोंम टी.व्ही, फोन वगैरह के अन्दर ट्रान्समीटर फिट रहते हैं और इनका काम है अपने सेन्टर से निकलने वाली वेव्हज् को कैच करना और इसको सुनना। जैसे कि हमारे पास मौजूद रेडियो जिसके अन्दर ट्रान्समीटर लगा हुआ है और इसका कनेनश्न ऑल

इन्डिया या फ.एम चैनल से किया हुआ है तो जब तक इन रेडियो स्टेशनओ से एक से एक मुकर्रर वक्त तक ट्रान्समीशन होता रहेगा वह हमारा रेडियों कैच करके हमें गाने वगैरह सुनाता रहेगा और जैसे ही रेडियो स्टेशन से टॉन्समीशन बन्द हो जायेगा हमारा रेडियो भी खामोश हो जायेगा क्योंकि उसको अब कनेक्टेड ट्रान्समिशन से वेव्ह नहीमिल रही है इसलिए हमारे रेडियो पर आने वाले गाने बन्द हो गये उसी तरह अल्लाह तआला ने हर जिन्दा और मुर्दो, हर पहाड़ और पेड़, हर समन्दर और दरिया के अन्दर रिक्कम वेव्हज् के जरिए उनके अन्दर पनपनेवाले या वो गुनाह या नेकियाँ अल्लाह तक चौबिसों घंटे पहुँचते रहते हैं। जैसे कुरआन मे लिखा है के अल्लाह तआला ने इसके लिए अर्श पर दफ्तर या कन्ट्रोल रुम बना रखा है वहाँ पर इंसान या जानवर के किये गए आमाल दर्ज हो रहे है और इन्सानी जिस्म के अन्दर जो बेहिसाब अरबो-खरबो की तादाद में सेल्स मौजूद हैं इन सेल्स के अन्दर ट्रान्समीटर मौजूद है और इसकी मिसाल ये है कि कुरआन की एक आयत में ये भी लिखा है कि कयामत के रोज अल्लाह तआला इन्सान के मुँह को बन्द कर देगा और वैसा ही उसके हाथ और पैर बोलना शुरु कर देंगे और गवाही देंगे कि हमने कौन-कौन से गुनाह किये थे क्योंकि ये हम पहले की कह चुके हैं कि हमारे साथ वो खुफिया कैमेरे भी हमारे जिस्म में मौजूद हैं जो अल्लाह के दफ्तर में लाईव्ह टेलीकास्ट कर रहे हैं। आज के सायन्सदॉनों ने इन्ही रिक्कम वेव्हज् का फायदा उठाया और एक दूरबीन ईजाद की जो की जंगो के दरमियान काफी मददगार साबित हुई। जैसा की हम जानते हैं जब दुशमन की फौजे रात के अंधेरे में हमला कर रही होती है तो उडते हुए हवाई जहाज को बर्बाद करने के लिए अपने टँकरों को खडा करके उसके ऊपर पेड़ वगैरह काट के डाल दिये जाते हैं और पहाडों और खाइयों के अन्दर अपनी फौज को छिपाकर उनके ऊपर कटे हुए घास फुस डाल देते हैं ताकि दुशमन को इनके छिपे होने का एहसास न हो और जैसे ही दुशमन की फौज इनके घेरे में आ जाए फौरन हमला कर दे। लेकिन अब कयोंकि वह दूरबीन बन चुकी है जिससे की रिक्कम वेव्ह बहुत तेज निकल रही है लेकिन कुछ जगहों पर ना के बराबर निकल रही तो यह समझ जाते हैं कि यहाँ पर कोई चीज छिपी हुई है और यह पेड़ कटे हुए है और इनपर बमो से हमला करके खत्म कर देते हैं और वो भी देखते हैं कि जिस जगह फौज है वहाँ से ज्यादा रिक्कम वेव्ह निकल रही है इससे यह मालूम पड़ता है कि जरुर यहाँ पर जिन्दा लोग मौजूद है और हमला करके दुश्मन की फौज को नस्तोनाबूत कर देती है। यहाँ पर भी हमने देखा किस तरह कुरआन की आयतों को समझ कर सायन्सदॉनो ने अमल किया। जंग में काम आने वाली एक नायाब दूरबीन ईजाद के दी।

जिस्म में नूर (Energy) का क्या काम हैं ?

हमने अपनी इसी किताब के पिछले चॅप्टर में नूर या ऊर्जा के बारे में बताया था कि यह ऊर्जा कई लाईट इयर चलने के बाद कैसे मॅटर (पदार्थ) बन जाती है लेकिन इन्सान के अन्दर यह (energy) जो बनती है वह आखिरकार कौन सा रुप (शक्ल) अख्तियार करती है। अब क्योंकि इन्सान तीन स्टेजेस से गुजरता है, सबसे पहले बच्चा, फिर जवान और बुढ़ापा तो सबसे पहले बच्चे का जिक्र करते हैं कि बच्चा जो की अपनी माँ के दूध पर कनाअत रखता है तो इसकी कुल बनी हुई एनर्जी (नूर) किस तरह खर्च हो रही है तो हम अगर इस दूध- मुहे बच्चे पर गौर करें तो वह २४ घंटों में सिंफ कुछ घंटे ही जागता है बाकी ज्यादातर घंटों में वह सोता रहता है। इसी पर गौर किया जाए तो सायन्सदाँ जो अब तक यह मालूम नहीं कर सके की मॅटर (पदार्थ) कैसे बनता है, यह कहाँ से आता है, उन्हें इस बच्चे के से मालूम हो जाएगा। बच्चे का ज्यादातर सोना किस बात को दीखाना चाहता है। दरअसल बात यह है कि बच्चे को माँ के दूध से मिलने वाली १०० फीसदी एनर्जी कंसम्पशन कैसे होता है अगर हमे यह मालूम हो जाए तो मेटर की थ्योरी समझना आसान हो जाएगी। तो बच्चे का ज्यादातर सोना यह बता रहा है कि वह बहुत कम एनर्जी खर्छ करता है यानि तकरीबन २ एनर्जी जो खर्च हो रही सिंफ हाथ-पैर चलाने में और रोने चिल्लाने में बाकी बची १८ इनर्जी उसके जिस्म में सिर्कुलेट करके आखिरकार जिस्म जो की सेल्स (कोश) का बना है और हम यह भी बता चुके है कि हर सेल में एक माइटोकॉन्ड्रि या होता है और इसे का पॉवर हाऊस कहते है तो यह एनर्जी इन सेलॅस के चारों तरफ इकठठा होकर मॅटर का फॉरमेशन करके को मोटा करती रहती है जिससे की बच्चे का वजन और साइज बढ़ता रहता है और यह १८ साल तक लम्बाई और चौड़ाई दोनों में बढता रहता है लेकिन जूँ-जूँ उम्र बढ़ती जाती है जैसे १ महीने से ६ महीने, ७ महीने से १२ महीने फिर १ साल से २ साल फिर ३,४,५,६ इस तरह १८ साल पर पहुँचते – पहुँचते यह एनर्जी का फिसदी अलटा हो जाता है क्योंकि १८ के बाद उसकी लम्बाई बढ़ना रुक जाती है और मोटाई भी रुक जाती है क्योंकि अब यह बच्चा चलता फिरता है बात करता है और बोझ वगैराह उठाता है इसलिए १८ एनर्जी अब इसके इन कामों में खर्च हो रही है और २ एनर्जी सेल को बढ़ाने में काम आ रही है।

इस तरह उम्र के साथ – साथ हमारी सेल भी कम तादाद में बनती है और हमने यह भी देखा की मॅटर कैसे बन रहा है और कौन सी शक्ल अख्तियार कर रहा है इसके अलावा हर सेल की पॉवर हाऊस को अपनी ताकत भी ज्यादा से ज्यादा बढती रही है यानि पॉवर हाऊस की पॉवर कॅपेसीटी भी बढ़ती रहती है जो की जरुरत पड़ने पर काम आती है।

रुह

इस कायनात में जितने भी मजहब हैं सब का एक ही यकीन है कि जब किसी इन्सान को मौत आ जाती है तो उसके जिस्म की रुह परवाज हो जाती है और जिस जिस्म में वह वास रहती थी वह फनाह हो जाता है और रुह वापस आलमे अरवा (बर्जख) में जा पहुँचती हैं मतलब यह हुआ की मरने के बाद भी रुह रौशन रहती है। लेकिन इसी कायनात में दो मजहब ऐसे हैं जिनका कहना है कि इन्सान मर गया सब खत्म हो गया और रुह भी खत्म हो गयी जो कुछ है सब दुनिया में ही हैं कहीं कुछ भी नही, वे मजहब हैं।

१. मानवी मजहब २. बतिनी मजहब

इसके अलावा दुनियाँ का हर मजहब इस रुह को अपनी भाषा के हिसाब से पुकारता है कोई इसे सोल कहता है तो कोई आत्मा कहता है और कोई पखेरु कहता हैं, लेकिन इस सब का इन्टेन्शन रुह ही से हैं। दुनिया में काफिरों का यह कहना की अगर हम किसी इन्सान को नमस्कार करते हैं तो यह नमस्कार उस इन्सान को न करके बल्कि उसमें मौजूद भगवान को करते हैं जब उनसे कुछ और खुलासा करना चाहा तो इन काफिरों ने यह बताया की जिस्म में जो आत्मा रहती है वही भगवान हैं।

आइए देखें मजहब इस बारे में क्या कहता है कि जब ह. ईसा (अ.स) की वालिदा जनाबे मरियम (अ.स.) को फरिश्ते ह. जिबराईल (अ.स.) ने बैतुल मुकद्दस पहुँच कर, जहाँ पर आप रहती थी, खुशखबरी दी की आपके शिकन् से ईसा पैदा होंगे जो कि अल्लाह के भेजे हुए पैगंबर है और अल्लाह की रुह उनमें फूँकी जाएगी और ऐसा

ही हुआ । दुनिया में ह ईसा (अ. स.) तशरीफ लाए और ईसाईयों ने इस लिहाज से ह. ईसा (अ. स.) को अल्लाह का बेटा कहा, कयोंकि अल्लाह की रुह इनमें फुँकी गयी, यह दलील हुई ईसाईयों की।

अब हम इन दोनो मजहबों की थीअरि को कुरआन के हवाले से गलत ठहराते है जैसा की अल्लाह नए हुक्म देकर ह. आदम(अ. स.) का पुतला बनवाया और फरिशतों को हुक्म दिया की गब मै उसे पूरा कर लूँ और अपनी रुह उसमें फुँक दूँ तो तुम सब उसके आगे सजदे में गिर पड़ला। फिर सब ही फरिशतों ने उसे सजदा किया यह आयत ७२ और ७३ है सुरे साँद पारा २३ की इसके आलावा कुरआन के पारा न ९ सुरे एअराफ की आयत न १७२ में अल्लाह फर्माता है और (याद दिलाओ वह वक्त) जब तुम्हारे परवरदिगार ने आदम के बेटों की पीठों से उनकी औलाद को निकाला था और उनके मुकाबले में (अल्लाह ने) उन्ही को गवाह बनाया (और पूच्छा) कया मै तुम्हारा परवरदिगार नही हुँ? सब बोले हाँ हम मानते है यह गवाही हमने (अल्लाह ने) इसलिए ली की कयामत ली की कयामत के दिन कही (यह) न कहने लगे कि हमको इस बात की खबर ही न थी। इसी सिलसिले में करआन में पारा नं.१ सुरे बकरा की आयत नं. २८में अल्लाह फर्माता कि कयो कर तुम अल्लह का इन्कार

करते हो (देखो जब कि तुम बेजान थे, तो उसने तुममें जान डाली, फिर उसी की तरफ लौटाये जाओगे।

अल्लाह तआला ने अपनी आयत ७२ और ७३ में साफ किया कि जिस्मों में रुह डालना मेरे अख्तियार में ही है क्योंकि पुतल-ए-आदम अल्लाह तआला ने खुद नहीं बनाया था बल्कि फरिश्तों को बनाने का हुक्म दिया और फरिश्तों ने ५० साल तक लगातार मेहनत की और यहाँ पर एक बात लिखना जरुरी है कि यह ५० साल दुनियाँ के नहीं थे यह ५० साल अर्श के थे और अर्श का एक दिन दुनियाँ के १००० साल के बराबर होता है मतलब यह हुआ की फरिश्तों ने एक करोंड छयालिस लाख साल तक ह. आदम (अ.स.) के पुतले को बनाते रहे और जब यह तैयार हो गया तो आदम में रुह फूँकी और ह. आदम (अ.स) से अल्लाह पाक ने मुखातिब होते हुए पुछा, तुम कौन? ह. आदम (अ.स) ने जवाब दिया, तुम कौन? अल्लाह पाक और ह.आदम (अ.स) की बात का यह अन्दाज यह बयान करता है कि ह. आदम (अ.स) को कुछ भी इल्म नही था इसलिए कुरआन में अल्लाह का यह फर्माना कि और हमने आदम को कुछ चीजों के नाम सिखाए और आदम ने फरिश्तों को वह नाम गिनवा दिये जोकी फरिश्ते भी नही जानते थे। अब यहाँ पर यह बात बिल्कुल साबित होती है कि अगर ह. आदम (अ.स) और ह. ईसा (अ.स) क जिस्मों में खुदा की ही रुह होती तो ह. आदम (अ.स.) यह न कहते की मैं-मैं हूँ और तू-तू है, इसलिए यह बात बिल्कुल गलत है कि दोनों पैगम्बरों में अल्लाह ही कि रुह थी। क्योंकि अल्लाह का यह

कहना, ह. मरियम (अ.स) से की इसमे मेरी रुह फूँकी जाएगी यानि अल्लाह रब्बुल इज्जत ह. ईसा (अ.स.) की रुह बना चुका तो रिह डाली जाएगी क्योंकि जितनी भी रुहें हैं अल्लाह पाक ने दुनियाँ के बनाने के पहले ही सारी रुहें बना डाली थी और नामों के साथ और लौहे महफूज में उनका जिक्र कर चुके है कि इस रुह के साथ कौन-कौन से हादसे कब होंगे और उसका ईमान क्या होगा वगैरह-वगैरह,,

आयत नं.१७२ में अल्लाह तआला खुद इस बात का खुलासा कर रहा है कि मैनें आदम की पीठ से औलादें निकली। मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआला ने ह.आदम (अ.स.) को दुनियाँ में भेजने के पहले ही सब रुहें तैयार कर दीं और अल्लाह ने सभी रुहों को अपने सामने हाजिर किया और उनसे पूछा की मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ या नहीं सभी रुहों ने जवाब हाँ में दिया, अब कयामत काफिरों को होशियार कर रहा है कि मैं ही तुम्हें जिलाता हूँ और मैं ही तुम्हें मारता हूँ। और जिस तरह तुमको हमने पहली बार जिन्दा किया, दुबारा भी जिन्दा करुगा और तुम्हे हमारे ही पास हर हालत में लौटकर आना है लिहाजा मेरी ही इबादत करो, मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ।

अब काफिर का यह कहना रुह जहाँ से आती है वही वापस चली जाती हैं और रुह फिर अल्लाह में मिल जाती है यह बात कितनी बेबुनियाद है और फिर यह कहना कि वापस भेजी गयी रुह को अल्लाह वापस दुबारा जिस्म देकर दुनियाँ में भेजता रहता है मतलब यह हुआ की ईश्वर के पास रुह की कमी थी माज अल्लाह! इसकी मिसाल हम उस तरह भी देकर काफिरों की बातों को गलत साबित कर सकते हैं कि आज से १०० साल पहले हिन्दुस्तान की आबादी २० करोड़ थी तो आज २००२ में यह आबादी १०० करोड़ कैसे हो गयी। यह बकी की ८० करोड रुहे कैसे बढ़ गई? हिन्दुस्तान ही नही दुनियाँ के हर मुल्क की आबादी बढ़ती ही जा रही है। जहाँ पहले आबादी १ करोड थी वहाँ अब ५ करोड़ हो गयी लिहाजा काफिरों की यह दलील कितनी झूठी साबित हो गयी। इस्लाम तो आज से १४०० साल पहले ही बता चुका है कि अल्लाह ने बेहिसाब रुहें बना रखी हैं और जो रुहें अपना वक्त दुनियाँ में पूरा कर चुकी हैं वह अलमे अरवा (बर्जख) में कैद कर दी गई हैं और कयामत के दिन अल्लाह उनके मिट्टी में मिल चुके जिस्मों को फिर जिन्दा करेगा और उनका फैसला किया जायेगा, लेकिन जो लोग काफिर रहे और काफिर होकर मरे इनकी रुहें कयामत तक भटकती रहेगी। यह काफिर होने की दुनियावी सजा हैं। आखिरत में तो इससे लाख गुना ज्यादा सजा के सजावार होंगे।

क्या रुहों को बना सकते हैं ?

आज के सायन्टिस्टस् पिछले कई साल से इस कोशिश में मशगूल है कि किस तरह इन्सान को बनाया जाए इसके लिए उन्होंने आटिफिशियल (नकली) इन्सानी हिस्से बनाए और उसमें जान डालने की कोशिश में लग गय लेकिन आज तक नाकामयाब है। इन सायन्सदॉनों की एक और कोशिश जारी है की अगर इन्सानी रुह को कैद कर ले तो शायद इस मसनवी बनाए गये इन्सान में जान आ जाएँ। लेकिन लाख कोशिश करने के बाद भी रुह को कैद करने में नाकाम रहे। अल्लाह तआला ने कुरआन में साफ फर्माया की हमने मखलूके इन्सानी को सब मखलूकों पर अफजल किया क्योंकि आदम को जो इल्म था वह फरिश्तों को भी नही है। *कुरआन में पारा नं. १ सूरे बकरा की आयत नं. ३१ और ३२* में अल्लाह पाक ने फर्माया और (फिर) आदम को सब (चीजों के) नाम बता दिये, फिर (उन चीजों को) फरिश्तों के सामने पेंश करके कहा कि अगर तुम सच्चे हो, तो मुझको इन चीजों के नाम बताओ फरिश्तें बोले – तू पाक हैं, जो तूने हमको बता दिया है उसके सिवा हमको कुछ मालूम नहीं। सचमुच तू ही जानने वाला मसलहत पहचानने वाला है और अल्लाह के हुक्कम से आदम ने उन चीजों के नाम बता दिए तो हमने देखा ऊपर दी गयी आयत में अल्लाह ने फरिश्तों से भी ज्यादा इल्म मखलूके आदम को दिया। अगर आज के सायन्स के माहिर कूरआन कि उन आयतों पर तवज्जहु दे जिसमें ये कहा गया कि आदम के पुतले को अल्लाह ने दुनिया से लायी गई मिट्टी से बनाया और उसके बाद इसमें रुह डाली और वैसे ही आदम बोलने लगे इसलिए अगर सायन्टिस्टस् लोग इन्सान का गोश्त से एक नया पुतला बना ले और उसमे इसी तरह के दिल, गुर्दे, फेफड़े, कलेजी, दिमाग, आँखे, कान, नाक वगैराह – वगैराह गोश्त से बनाकर तैयार करे फिर उसमे खून को भर दें तो उम्मीद की जा सकती है कि अल्लाह तआला इस सायन्टिस्टस् बातें तो बड़ी-बड़ी करते हैं लेकिन आजतक इन्सानी खून भी न बना सके जिस्म तो बहुत दूर की बात है। हम यहाँ पर सभी हिस्सों की बात नहीं कर सकते सिंफ अल्लाह का बनाया हुआ एक जरुरी हिस्सा जिसे किड़नी (गुर्दे) कहते हैं अल्लाह ने इस गुर्दे के अन्दर एक आँत बनायी है जिसकी लम्बाई इतनी है कि हम जिस दुनियाँ में रह रहे हैं उसको इस आँत से ६ बार लपेट सकते है। जब हम पानी पीते हैं तो तकरीबन ड़ेढ़ दो घंटे बाद ये पानी इस आँत से गुजरता हुआ पेशाब के रास्ते निकल जाता है। सोचने की बात यही है कि ये पानी दो घन्टे के अन्दर ६ बार दुनिया के चक्कर लगा लेता है और ये गुर्दे इन्सान के जिस्म का एक बेहद जरुरी हिस्सा है। आज तक इस ॲडव्हान्स दुनियाँ में एक गुर्दा तक न बन सका लेकिन अल्लाह ने अपने इस बन्दे को हर तरह के इल्म से नवाजा है अगर

कोशिश करते रहे तो आने वाले दो लाख सालो में कामयाब हो जाएँगे, क्यों कि हमने कुरआन में ये पढ़ा है कि अल्लाह तआला ने ह. ईसा (अ.स.) को यह मौजिजा दे रखा था कि वो मुर्दो को जिन्दा कर दिया करते थ। मतलब ये हुआ की ह. ईसा (अ.स.) ने रुहों पर अपनी पकड़ अपने इल्म के जरिए कर ली थी जो कि मखलूके आदम के एक पैगम्बर थे इसलिए आने वाले दो तीन लाख साल बाद रुहों पर इन्सान की पकड़ हो जाएगी।

अगर हम आज से सौ साल पहले के दुनियाँ को देखें कि एक मामूली बुखार से इन्सान मर जाया करता था, लेकिन आज बुखार का इलाज कितना आसान हो गया । हमने ये भी देखा की पॅलेग, हैजा, मलेरिया, चेचक, टॉईफॉइड, टी.बी. जैसी बिमारियों का कोई इलाज ही न था। इन बिमारियों की वजह से पूरे गाँव और क़स्बा मर जाया करते थे, लेकिन आज इन्सान कि मेहनत से इन बिमारियों से कम ही लोग मरते हैं। इसका मतलब यह हुआ की अल्लाह तआला ने इन बिमारियों का कन्ट्रोल इन्सान के हाथ में दे दिया और अल्लाह खुद चाहता है के इंसान इस काबिल हो जाए के अल्लाह के दिए हुए इल्म को पूरी तरह समझ ले ताकि अल्लाह का वह बयान की इन्सान सबसे अफजल हो पूरा हो जाए।

इस तरह हमने ये देखा कि अगर इन्सान कोशिश करे तो रुहें भी उसके कब्जे में आ सकती हैं।

अल्लाह तआला कुरआन में फर्माता है कि हमने इन्सान की आँखो पर पर्दे डाल रखे हैं और साथ मे ये भी बयान किया हमने जमीन और आसमानों पर मौजूद नेअमतों को इन्सान के लिए बनाया है ताकि वह हमें पहचाने।

ऊपर की दी हुई आयत में अल्लाह का ये बयान की हमने आँखों पर पर्दे डाल दिये हैं पहले हम इस की तशरीह करते हैं। अगर कोई दुनियाँ का माहिर तस्वीर बनाने वाला एक से बढ़कर एक लाजवाब तस्वीरें बनाकर एक नुमाईश में रखे लेकिन किसी तस्वीर पर भी अपना नाम न लिखे और उसकी ये कोशिश हो कि लोग हमें पहचाने हर तमाशाबीन तस्वीरों को देखकर उसकी तारीफों के पूल बनाता रहे और उन तस्वीरों को चूम भिले लेकिन जिस शख्स ने इन तस्वीरों को बनाया है वो ये वोह यह देखे तस्वीर तो हमने बनाई चूमना तो हमे चाहिए था तारीफ़ तस्वीरो की हो रही है लेकिन हमारी कोई तारीफ नहीं , यहाँ तक की कोई मुझे पूछ भी नहीं रहा है।

अब किसी शख्स ने देखा की इतनी नायाब तस्वीरें लेकिन कोई भी इसको बनाने का सेहरा मोल नहीं ले रहा है तो सोचा लाओ क्यों न मैं अपने नाम का ऐलान कर दूँ। जैसे ही वह खड़ा होकर कहता है इसका बनाने वाला मैं

हुँ उसी वक्त एक दूसरा शख्स खड़ा होता है और कहता है मैं इसका मालिक हूँ। इसी तरह तीसरा, चौथा, पाँचवा, छटा और इस तरह करोड़ों की तादाद में इन नायाब तस्वीरों के बनाने वाले वारिस बन जाते हैं लेकिन वह जिसने यह नायाब चीजें बनाई वह देखके मुसकुरा रहा है कि वाह कैसे लोग हैं जो कि आपस में झगड़ कर अपने को इसका मालिक बता रहे हैं। जब इस (कलाकार) ने यह देखा यहाँ तो लोग झूठे मालिकों पर अपना आकिदा रख रहे है तब उसने अपने चुने हुए नुमाईदों को भेजना शुरु किया कि जाओ और इनको समझाओ कि इन नायाब चीजों को बनाने वाला अगर कोई है तो वह एक है। अगर तारीफ करनी है तो उसी की करो, अगर सजदा करना है तो उसी के सामने। इस तरह उस कलाकार ने अपने एक लाख चौबीस हजार नुमाईदे भेजे ताकि सच्चाई को सामने लाया जाँए लेकिन उसके बावजूद आज भी करोंड़ों लोग इस बात को देख नहीं पा रहे हैं

इस लिए यह कहा गया की इन आँखों पर परदे पड़े हुए है कि इतनी नायाब चीजों को बनाने वाला वो सिंफ एक और वह सिंफ अल्लाह है और अगर अल्लाह का मतलब निकाला जाए तो मतलब होता है कुछ भी नही यानि अल्लाह जिसने इतनी बड़ी कायनात, समन्दर, पहाड़, चाँद, सितारे बनाए यह लहलदाती हुई जमीन बनायी और एक मखलुके इन्सान को बनाया, फरिश्तों को बनाया, जिस्मो को बनाया, परिन्दो, जानवरों को बनाया, बागो को बनाया तो फिर हम क्यों नहीं पहचान पा रहे हैं उस नूर को जो इन सब का मालिक है। इसलिए कुरआन में यही कहा गया ये अन्धे हैं, आँखें होते हुए भी, बहरे हैं कान होते हुए भी, गूँगे हैं जबान होते हुए भी। हम यह जानते हैं कि हमारी आखों के अन्दर कोई नूर मौजूद नहीं है जिससे की हम अँधेरे को देख सकें लेकिन अल्लाह ने अक्ल दी है जिससे हम समझ सकते हैं कि जो करोड़ो की तादाद में इस कायनात को बनाने का शर्फ लेते हैं और ये कहते है कि हम इसके मालिक हैं उनसे कोई यह कहे कि आप एक मख्खी बना के दिखा दीजिए तो हम समझें की आप इसके मालिक हैं. लेकिन अफसोस ये नहीं कर सकते फिर भी दावा करते हैं इस कायनात को बनाने का ।

इसके अलावा अल्लाह ने हमारी आँखो पर जो पर्दे डाल रखे हैं उसकी वजह है। सूरज जो करोंड़ो मील की दूरी पर मौजूद है और इसके अलावा एक और अनासीर जिसे ओझोन (O_3) कहते हैं उसकी एक परत अल्लाह तआला ने आसमान पर खीच रही है ताकि सूरज से निकलने वाली, नुकसान पहुँचाने वाली रेज (किरने) हम तक न पहुँच सके कॅयोंकि ये रेज आँखो के सीस्टम को खराब कर देगी। इन आँखों के अन्दर भी अल्लाह ने पर्दे रखे हैं जो कि कितनी ही खतरनाक वेव्ह को अन्दर आने से रोकती हैं। यानि अल्लाह तआला ने इन पर्दो

को बनाकर आँखो की हिफाजत की जब अल्लाह तआला ये देख लेता है कि बन्दे पर ईमान और नूर की रोशनी की एक मजबुत परत आँखो पर बन चुकी है और अब उसको किसी भी तरह की वेव्ह नुकसान नहीं पहुँचा सकती तो उसकी आँखों के पर्दे उठा लेता है और अब वह अल्लाह की गैंबी ताकतों को बखूबी देख सकता है और यह उसी तरह है कि जब सूरज पर पूरा गहन लगा हो तो उसको सही सही देखने के लिए एक खास किस्म का काला चश्मा पहनना पवता है ताकि आँखे भी न खराब हो और सूरज गहन अच्छी तरह देख भी सकें।

हम यह जानते हैं कि ऑक्सीजन एक भारी गैस है जो अगर अलहदा हो तो जमीन पर उगने वाली छोटी – छोटी घास को जला दे लेकिन अल्लाह तआला ने इसे हवा में मिला कर ऐसा करने से रोका, लेकिन इसी ऑक्सीजन (O2) में एक और ऑक्सीजन (O3) बन गयी लेकिन यह अब इस हालत में पहुँच गयी की आसमानों में एक परत बनकर इस दुनियाँ को सूरज से निकलने वाली नुकसान दायक रेज (किरनों) को रोक रही है जब की ओझोन का वजन बढ़ चुका लेकिन अल्लाह ने इसे इतना हल्का कर दिया की यह आसमान पर तैर रही है।

कलाकार का मतलब अल्लाह से है और तस्वीररों से मतलब उन पहाड़ो, झरनों, परिन्दों, परियों, जानवरों, समन्दर और मखलूकों से है जो अल्लाह ने बनाई और जिन लोगों ने यह कहना शुरु किया (झूठ का सहारा लेकर) और करोड़ों की तादाद में इसके मालिक यानि काफिरों के भगवान अल्लाह ने अपने चुने हुए नुमैन्दो यानी पैगम्बरों को भेजा इस पैगाम के साथ जाओ इन लोगों को समझाओ और इस कायनात को बनाने वाले की पहचान करवाओ ताकि यह कयामत के दिन असली मालिक को समझे और सीधे रास्ते पर चले। ताकि कयामत के दिन इनके साथ भलाई का सूलूक किया जाए और इस दुनियाँ से भी खुबसूरत अल्लाह की बनाई हुई और दुनियाँ से भी खूबसूरत अल्लाह की बनाई हुई और दुनियाँ है जिसको अल्लाह दिखाना चाहता है लेकिन पहले अपने अल्लाह को तो सही तरीके से समझो ताकि तुम्हारी आँखों पर पड़े हुए पर्दो को हटाया जा सके की तुम दूसरी दुनियाँ को देखने के लायक हो जाओ। इन गैर मजहबों ने अपने खुदाओं को अलग – अलग शक्ल दे रखी थी जैसे की एक भगवान जिनको शेषनाग कहते है, इनकी पूरी शक्ल साँप की थी एक जिस्म लेकिन उनके घड़ से पांच़ साँप के फन जुड़े हुए दिखते हैं और ये इनको बड़े भगवानों में मानते हैं इनके हिसाब से पूरी दुनियाँ इनके ऊपर ही ठहरी हैं।

अब हम आपको इन साँपो की एक बिल्कुल ताजा जानकारी दे रहे हैं, मुम्बई के एक अखबार जिसका नाम नवभारत है एक खबर थी कि स्वीडन नाम के एक मुल्क में एक, दो सरों वाला साँप मिला है लेकिन यह दोनों एक दूसरे को अपना दुश्मन समझ रहे हैं इसलिए एक-दुसरे को काँटते रहते हैं यहाँ तक की अगर एक फन यह चाहे की मैं पहला शिकार करुँ तो दूसरा कुछ और शिकार करना पसन्द करता है इस वजह से यह दो फन वाला साँप भूखा रहता है इनको बचाने के लिए साँप के डॉक्टर इन्जेक्शन के जरिए उनको खुराक पहुँचा रहे है लेकिन ज्यादा दिन तक यह नहीं जी सकेगा।.

तो इस तरह अल्लाह तआला ने इन गैर मजहबों के लोगों की आँखें खोलने के लिए दो फन वाले साँप को पैदा किया ताकि हम उस पाँच सर वाले साँप को समझ सके जिसको की ये अपना खुदा मानते हैं और जिसको शेष नाग के नाम से पुकारा करते हैं। अखबार की खबर ने हमें जो बताया दो सर वाला साँप आपस में एक दूसरे को अपना सबसे बड़ा दुश्मन समझ रहे हैं तो हम ये कैसे यकीन कर ले कि जो शेषनाग जिसके पाँच सर थे तो वह जिन्दा रहा होगा, जरुर उन पाँचो में भी दुश्मनी होगी अगर वह इस दुनियाँ में शायद आये भी होंगे लेकिन भूख की वजह से मर गये होंगे। क्योंकि खबर ने यह भी कहा कि दोंनो साँपो की अलग-अलग ख्वाहिश रहती है अगर एक ने कुछ खाने की कोशिश की तो दूसरा फन उसको ऐसा करने से रोकता है जिसकी वजह से उनके पेट में खुराक नही पहुँच पा रही है। तो फिर तो पाँच मुँह वाला था शायद पाँच दिन भी न जी सका होगा क्योंकि आज की तरह उस दौर में इस तरह के डॉक्टर वगैरह नहीं हुआ करते थे। इसमें कोई दो राय नहीं इसलिए इस पाँच मुँह वाले साँप को अपना खुदा मानना कहाँ की अकलमंदन्दी है जो आपस में ही झगड़ा करके मर गये और जिस अल्लाह ने इस इन्सान के बस में बड़े- बड़े खतरनाक किस्म के जानवर, परिंदों को कर दिया जो की मजबुर है इन्सानी हुक्म मानने के लिए क्योंकि अल्लाह ने इन्सान को सारी मखलुकों में अफजल किया है। हमारा ये लिखना किसी मजहब के दिल को ठेंस पहुँचाना नही है बल्कि हम यह चाहते हैं हमारी तरह हमारे इस्लामी भाईयों की तरह और सायन्स की दुनियाँ जिसमे हम जी रहे हैं और इस तरक्की आफता दुनिया में हमारे जो आने वाले बच्चे हैं हमारी इसतरह की मान्यताओं का मजाक न उड़ाएँ क्योंकि इस २१ वी सदी में पैदा हुई पौद बेहद होशियार और अकलमन्द है ये पौद हर मान्यताओ को सायन्स के तराजू में तोलकर देखती है। इस लिए इस कलाकार (अल्लाह) ने अपनी बेहतरीन कारीगरी को पेश किया है चाहे वो दो फन वाला साँप या पाँच फन वाला साँप या फिर दो सिर वाला बछड़ा हो या किसी इन्सान के पीछे दुम लगी हो। ये सब उसकी कलाकारी के नमूने हैं

ताकि हम उसको (अल्लाह) को पहचान सके और उसकी तारीफ करे और ये कहे कि एक तु ही इबादत के लायक और उसका कोई भी शरीक नहीं और ह. मोहम्मद (स.अ.स) उसकी (अल्लाह) पहचान करवाने वाले पैगमबर और रसूल हैं जो उस पाक परवरदीगार की नुमैन्दगी कर रहे हैं।

हमने हिन्दुओं के अन्दर एक और कहानी सुन रखी है जो कि इस तरह है एक बार इनके (हिन्दुओं) भोलेनाथ नाम के एक भगवान जिनको ये लोग महादेव के नाम से पुकारते हैं एक बार इनकी बीवी जिनका नाम पार्वती था उन्होनें कुछ देर के लिए चुपके से अपने शौहर की आँखों को बन्द कर दिया तो ये जमीन हिलने लगी जैसे भूकम्प आ गया हो तो फौरन उन्होने अपनी तीसरी आँख खोल दी तब कहीं जाकर जमीन संभली।

एक और कहानी इन्हीं भोलेनाथ नाम के भगवान की बतायी जाती है कि एक बार शनि के देवता ने भोलेनाथ को परेशान करने के लिए एक वक्त मुकर्रर कर लिया। जब भोलेनाथ को, जो इनके भगवान कहे जाते हैं, शनि की इस हरकत का इल्म हो गया तो इससे बचने के लिए अपने जिस्म को हाथी की शक्ल में बदल लिया और एक जंगल में जाकर घास फूश वगैराह खाकर उस मुकर्रर वक्त तक अपनी जिन्दगी गुजारी और जैसे ही वह वक्त पूरा हो गया तो भोलेनाथ अपनी असली शक्ल में आकर शनि नाम के देवता के सामने हाजिर हुए और कहने लगे – देखा तुम मेरा कुछ भी बिगाड़ नहीं पाये, तो शनि नाम के देवता ने जवाब दिया क्या यह कम हुआ कि मेरे प्रकोप से बचने के लिए तुम्हें कुछ वक्त तक हाथी बनकर जंगलो में भटकना पड़ा; फिर भोलेनाथ इसका जवाब नहीं दे सके।

हमने ऊपर इन दो कहानियों को आपके सामने पेश किया जो की पहली कहानी मे अपने को इतना बड़ा भगवान बता रहें हैं कि उन की नजर पडी है तो दुनिया संभाली हुई है नहीं तो ये तहस-नहस हो जाए तो इतने बड़े भगवान को एक शैतान से डरकर जंगलों में भगाना पड़ा। जिस शनि की बात की जा रही है यह सूरज के ईर्द-गिर्द घुमने वाला एक ग्रह है जिसे शैतान कहते है और इसके अन्दर शैतानों की दुनियाँ है यह शैतान जिस पर सवार हो जाए तो उसका बहुत कुछ नुकसान कर सकते हैं। तो इतने बड़े भगवान को शैतान से डर कर भागना पड़ा, जिस दिन भगवान शैतान से डर जाए तो उस दिनइस दुनिया को कौन काबू में रख सकता है। कितनी अजीब बात है यह दोनों किस्से अपने आपको खुद-बखुद झूठा साबित कर रहे हैं। लिहाजा यह कहना कि भोलेनाथ की नजरों की वजह से ये दुनिया संभली हुई है कोई मानने को तैयार ही नही, ये सब मनगढ़त बातें हैं

क्योंकि इन्ही भोलेनाथ के बारे में एक और भी कहानी है कि एक बार भोलेनाथ ने भांग का इतना नशा कर लिया कि अपनी सुध बुध गँवा बैठे और उसी वक्त एक माँगने वाला इनके घर पहुँच गया तो इनकी बीवी पार्वती ने इनको उठाने की काफी कोशिश की लेकिन ये नहीं उठे और माँगनेवाला खाली हाथ लौट गया । अब यह बताया जाए कि जो इन्सान नशे में हो और बेसुध हो कि उसका दिमाग शन्य पर पहुँच चुका हो और इसे अब अपनी भी खबर नही की वो कहाँ है, तो इस वक्त तक ये दुनियाँ कैसे संभली रही इस पर कोई भूकम्प क्यों नही आया। कहाँ गया वह तीसरा नेत्र (आँख)।

अब कौनसी ताकत है जो इस दुनियाँ को संभाले हुए है ? कोई जवाब नही जिस तरह इन हिन्दुओं ने अपने भोलेनाथ की तस्वीरे शाया की है कि उनका रंग नीला है। उनके हाथ में एक लोहे का त्रिशुल है और त्रिशूल पर एक डमरु बना हुआ है, और इस त्रिशूल से बड़े-बड़े शैतान खौफ खाते हैं, गौर से देखो इस त्रिशूल को तो वहाँ अल्लाह लिखा दिखायी देगा। गले पर पहने हुए साँप का तरीका देखो तो साफ दिखता है जो साँप की कुण्डली बैठी हुई वह मोहम्मद लिखा हुआ है और बायें हाथ को देखो जिससे एक नूर निकल रहा हैं यह वही हाथ है जिसे यदे बैज़ा कहते हैं जो अल्लाह तआला ने ह. मुसा (अ.स) को अता फर्माया था, सिर के ऊपर देखो तो एक चाँद और एक तारा बना हुआ है जो कि इस्लामी निशानी है इस तरह इन हिन्दुओं ने भगवान की शक्लें बना ली लेकिन यह नहीं देखा कि इस भोलेनाथ का रंग रुप तो महजबे इस्लाम का है, इससे इन्हें सबक लेना चाहिए ताकि सीधे रास्ते पर चल सको। अल्लाह चाहता है कि कयामत के दिन सबके साथ भलाई की जाए इसीलिए अल्लाह ने अपने बन्दों से कहा मूझे पुकारो मैं तुम्हारा मालिक हूँ और हमें याद आ रही है सूरे बकरा की वह आयत नं. १८६ जिसमें अल्लाह ने अपने पैगम्बर को हिदायत देते हुए कहा ऐ पैगम्बर, जब मेरे बन्दे मेरे बारे में तुमसे पूछे तो (उनको समझा दो की) मैं तो पास ही हूँ। जब कोई कभी मुझे पुकारता है तो हाँ,मैं पुकारने वाले की दुआ को कुबुल कर लेता हूँ तो (उनको) चाहिए कि मेरा हुक्म माने और मुझपर ईमान लाए ताकि वह नेक राह पर रहे। अल्लाह ने पूरी मखलूफ को मौका दिया है कि अपने रब से जो चाहे माँगे मैं देने वाला हूँ उसके अलावा और कोई कुछ नहीं दे सकता जो पूरी दुनियाँ को बनाने वाला भी वही और कयामत के दिन इस दुनियाँ को तहस- नहस करने वाला भी वही, सब उसके मोहताज और वह सबसे आला है।

हमने यह देखा की भ़गवान जो कि इन्सानी जिस्म से हाथी बन जाता है सायन्टिफीकली इसे किस तरह साबित किया जा सकता हैं क्योंकि भोलेनाथ नाम के भगवान भी एक माँ के पेट से पैदा हुए और आज तक सायन्स में

ऐसा कहीं नहीं हुआ इसलिए मेरा यह सवाल है उन सायन्स के माहिरों से की अगर ऐसा मुमकीन है तो मुझे जरुर बताऐं ताकि मैं अपने इल्म को दुरुस्त कर सकूँ और मैं उनका शुक्र गुजार हूँ। दुसरी बात यह कि भोलेनाथ की आखों से पृथ्वी स्थिर रहती है जबकी आज के सायन्स ने यह साबित कर दिया कि आँखो से कोई भी नूर या प्रकाश या तरंग नहीं निकलती जो कि इस सूरज के चारों तरफ चक्कर लगाती हुई (पृथ्वी) को अपने कंट्रोल में कर सके क्यों कि इस्लाम के पैगम्बर ने एक बार ये करिशमा कर दिखाया था कि एक बार सूरज डूब गया तो आप की नमाज जाती रही इसलिए आपने पहली और आखरी बार अल्लाह के दिये हुए वरदान को याद किया कि ऐ नबी ये दुनिया हमने तुम्हारो काबू में दी उसी वक्त आप ने उस कंट्रोल की जगह पर हाथ रखा जिसे हम घुरी कहते है और उसको अन्टीक्लॉर्क वाइज घुमा दिया इसलिए सूरज की रौशनी अर्थ को फिर मिलने लगी आपने नमाज अदा कर दी जो कि सायन्स के माहिर साबित कर चुके हैं। अब बात बिल्कुल साफ हो चुकी है इन दोनो थीअरियों में कौन सच है और कौन झूठ, दोनो को सायन्स के नजरिए से तोला जाए क्योंकि इस्लाम में कभी अन्धविश्वास पर यकीन नहीं किया। पहले चीज को बनाई हैं फिर उसकी बनाने की थीअरि लिखी ताकि प्रूफ (साबित) करने में कोई दिक्कत पेश न आए।

इस कायनात को बनाने वाले ने कभी अपनी तारीफ नहीं की। उसने इस दुनियाँ में एक से बढ़कर एक खूबसूरत चीजें बनाकर लोगों को खूब सोचने पर मजबुर किया कि वह खुद समझ जाँए कि इसका असली मालकि कौन है, लेकिन जब उसने देखा यहाँ तो उलटा ही हो रहा है इस कायनात के एक मालिक नहीं करोड़ों की तादाद में मालिक बन बैठे हैं। तब उसने इन भटके हुए और गुमराह हुए लोगों को समझाने के लिए अपने चुने हुए नुमाईदों को (पैगम्बरों) भेजकर लोगों के आँखों पर पड़े पर्दे को हटाने की कोशिश की ताकि इन्हें सीधा रास्ता मिल सके और कुदरत ने ये भी कर दिखाया कि जो ऑक्सीजन इतनी भरी थी कि जमीन पर बैठ जाए लेकिन इस ऑक्सीजन में एक और जर्रा डाल दिया अब इसका वजन और बढ़ गया लेकिन अल्लाह ने अपनी कुदरत से इसको इतना हलका कर दिया की अब यह आसमानों पर तैर रही है।

रुह क्या है ? और इसकी शक्ल है या नहीं ?

रुहो (आत्माओं) के बारे में गैर महजबों की तहरीर को पहले बयान करते हैं । गैर मजहबो के मुताबिक अगर कोई शख्स मर जाता हैं तो उसकी आत्मा को फौरन उसके आमालों के हिसाब से दूसरी मखलूको के जिस्म में भेज दिया जाता है जैसे उसकी आत्मा को जानवरों के जिस्म में डाल दिया जाता है मसलन गाय, बिल्ली, छिपकली, चूहा, वगैरह – वगैरह और लाखों करोड़ो जिस्मों ने गुजर चुकने के बाद जब उसके अच्छे आमाल हो जाते हैं तो फिर उसको इनाम के तौर पर इन्सान की शक्ल में पुनर्जन्म होता है। अगर इनकी इस तहरीर को माना जाए तो सुबूत के तौर पर किसी साधू-सन्यासी के बयान पर समझाते हैं जैसे किसी साधू ने गवाही दी की कल एक चुहे ने हमसे आकर कहा की मैं पहले मनुष्य यौनि में था। लेकिन हमने इस यौनि में रहकर चूहों को बहुत नुकसान पहुँचाया था इसकी वजह से भगवान ने हमें चूहे की शक्ल में पैदा कर दिया तो साधू जी ने एक फर्मान जारी कर दिया की चूहों को मत मारो यह पाप है चाहे चूहे हमें कितना ही नुकसान पहुँचाए लेकिन किसी आम इन्सान ने आज तक यह नहीं कहा की फलाँ दिन एक बन्दर मेरे पास आया और उसने कहा हो की पहले जन्म में मै एक इन्सान था लेकिन मेरे खराब कार्मे की वजह से ईश्वर ने मुझे बन्दर की यौनि में भेज दिया। लेकिन अगर कोई हनुमान का हिमायती हो तो वह यही कहेगा की खबरदार बन्दरों पर जिल्म मत करना वरना तुम्हारा अगला जन्म बन्दर योनि में होगा।

आतमाओं (रुहों) के बारे में एक और तहरीर भी इनकी लिखी हुई है कि अगर कोई शख्स किसी हादसे में मर गया हो और अगर उसकी पूरी उम्र ६०साल थी लेकिन ४० साल की उम्र में ही एक हादसे में मर गया हो तो बचे हुए २० साल तक वह आत्मा भटकती रहेगी फिर उसके बाद किसी और यौनि में भेज दी जाती है।

गैर मजहब के लोग यह कहते हैं कि मैंने फलाँ आदमी को देखा जो कई साल पहले मर चुका था लेकिन अब वह एक खौफनाक भूत हो गया। अकसर किसी घर में एक बच्चा पैदा हुआ और वह यह कहता है कि यह मेरा पुनर्जन्म है और मैं फलाँ जगह का रहने वाला हूँ और फलाँ औरत मेरी बहु थी यानि ५० – ६० साल के बाद यह आत्मा फिर से पैदा हो गयी, मतलब यह हुआ की लाखों – करोडो योनियों मे जन्म लेने वाली बात गलत हो गयी

या फिर यह लड़का यह कहने के लिए मजबूर किया गया हो यानि पुनर्जन्म की तहरीर ही गलत है, या कोई एक तहरीर तो गलत हैं।

आज भी जयपुर में एक किले में एक औरत जिसने अपनी आबरु बचाने के लिए खुदकुशी कर दी थी आज भी उसके चिखने चिल्लाने की आवाज आती है जबकि इस हादसे को आज से ७०० बरस हो गये। अब यहाँ फिर अलग तस्वीर मिली क्योंकि किसी भी इन्सान की उम्र उस दौर में १३० साल के ऊपर नहीं होती थी अब अगर उसने ३० साल की उम्र में खुदकुशी की होगी तो उसे १०० साल और भटकना पड़ता लेकिन यह तो ७०० साल से आज तक मौजूद है। ईश्वर ने दूसरी योनि में क्यों नही भेजा? इस तरह हमने यह देखा की इनकी सभी तहरीरें एक – दूसरे को झूठा साबित कर रही हैं। अब इस्लाम क्या कहता है रुह के बारे में? मज़हबे इस्लाम में अपनी तहरीर में बयान किया की रुहों को अल्लाह पाक ने दुनियाँ को बनाने के पहले ही बना लिया था और नाम के साथ। इसके अलावा इनका दुनियाँ में रहने का वक्त भी मुकर्रर कर दिया था। किस रुह को किस मकसद के लिए बनाया यह तक अल्लाह तआला ने लौहे महफूज में लिखा रखा है । जब किसी ईमान वाले का दुनियाँ मे वक्त पूरा हो जाता है तो अल्लाह पाक अपने हुक्म से मलकुल मौत को भेजकर उस इन्सान की रुह को कैद करवा लेता है और इन्सान का जिस्म बिना रुह के बेजाना हो जाता है लेकिन रुह को अभी तक आलमे अरवाह में नहीं भेजा गया बल्कि ४० दिन तक अल्लाह के हुक्म से यह अपने रहने वाली जगह पर आती जाते रहती है और जब ४० दिन की मिआाद पूरी हो जाती है तो अब इसका मुकाम **आलमे अरवाह** है। अब यह कयामत तक कैद रहेगी और कयामत के दिन अल्लाह तआला इन रुहों को फिर आजाद कर देंगे और कब्र में मिट्टी में मिल चुके जिसमों को फिर दुबारा उनको हुक्म दंगे बन जाओ तो यह मिट्टी में मिले हुए जिस्म फौरन जुड़ कर पहले वाले जिस्म जैसे ही हो जाँएंगे और यह आजाद रुहे दुबारा अपने जिस्मों में समा जाएँगी और कब्रो से बाहर निकल कर हशर के मैदान में दौड़ती दिखायी पड़ेगा। इन जिस्मों पर कोई कपड़ा वगैरह नहीं होगा और यही कहेगी की हमको किसने जगा दिया लेकिन आज हशर के दिन अल्लाह इनकी जबान को बन्द कर देंगे और इनके हाथ और पैर की चमडी अपने गुनाहों का बयान करेगी क्योंकि इनके हाथ और पैर की चमडी में छिपे हुए ट्रान्समीटर जिसने इनके गुनाहों आवाजे रेकॉर्ड की है आज के दिन यह खोल खोल कर बयान करेगी। क्योंकि मुँह पर तो इन जिस्मों का कंट्रोल होगा और यह अपना गुनाह छिपाएँगे लेकिन ट्रान्समीटर का कन्ट्रोल अल्लाह के दफ्तर में

है जैसा की क़ुरआन में लिखा है। अब यह देखना है कि क्या रुहों की अपनी अलग – अलग शक्लें होती हैं? थो सवाल यह उठेगा की क्या गैस की कोई शक्ल होती है जवाब में नहीं आएगा जिस तरह गैस को जिस बरतन में रखिये वह उसकी ही शक्ल में बन जाएगी अगर गिलास में रखिये तो गिलास, बोतल में रखिये तो बोतल और खुले में छोड़ दि तो हवा मतलब यह हुआ की रुह की कोई शक्ल नही होती। यह मॅटर (पदार्थ) की बनी होती है। रुह के बारे में और जानना है तो हम यह कह सकते है कल तक एक अमजद नाम का आदमी चल फिर रह था और आज उसका जिस्म बेजान हो क्यों? क्यों मालूम हुआ की इनकी रुह निकल चुकी हैं। मतलब बिल्कुल साफ है कि जिस्म में रुह बिल्कुल उसी तरह है जिस तरह बॅटरी से चलने वाला रेडियो, जैसे ही उस बजते हुए रेडियो से अचानक बॅटरी (सेल) निकाली तो रेडियों मुर्दा हो गया और जैसे ही उसमें सेल दुबारा डाला वह फिर से बजने लगा। मतलब यह हुआ कि रुह जिस्म के लिए एक सेल का काम कर रही है। अब यह देखना है कि यह सेल क्या है, तो हमने देखा इस सेल के अन्दर दो छेड़े मौजूद है और दोनों ही अलग अनासिरो की बनी है। एक छेड़े को ताँबा कहते है और एक छेड़े को जस्ता कहते हैं और इन दोनों के बीच में एक पानी मौजूद है जिसे डायल्यूट सल्फयुरिक ॲसिड कहते हैं, अगर हम यह चाहे की दोनो छेडों को एक ही अनासिर का किया जाए तो सेल का सर्किट पूरा नही होता हैं। अब हम इसमें देखते हैं कि जास्ते से निकलने वाली इलेक्ट्रॉन तांबे के छेड़े इकट्ठा हो रही है और यह ताम्बे का छेड़ा अपने ऊपर मौजूद इलेकॅट्रॉन की वजह से नूर में तब्दील हो रहा है और यह नूर सेल की ताकत बनकर रेडियों में रुह का काम कर रहा है।

अब अगर हम एक सिरे पर तांबे को त्वाबो (अल्लाह) एक अनासिर कहे और दूसरे सिरे पर जस्ते को जव्वादो (मोहम्मद स.अ.स.) दुसरा अनासिर कहे और इन दोनो अनासिरों के बीच मौजूद पानी जिसमे बहुत कम तादाद में H_2SO_4 मिला है यहाँ पर अल्लाह यानि तव्वाबो की जलाली (गर्म) निगाहें जैसे ही जव्वादों (मोहम्मद स.अ.स) पर पड़ी और पानी बना यानि मीडियम बना और फौरन यानि मीडियम बना और फौरन इलेकट्रॉन निकल कर ताँबे (तव्वाबों) पर जमा होकर नूर पैदा करने लगे यानि रुह बनना शुरु हो गयी।

मतलब बिल्कुल साफ है कोई भी बन्दा और उसकी रुह अल्लाह और मोहम्मद (स.अ) के बीच में ही है और उसके एक हाथ में अल्लाह की इबादत की तौल और दुसरे हाथ में अल्लाह के हबीब की इबादत की तौल बराबर

से रखना है और यही इस रुह का आमालनामा है, जो मोहम्मद (स.अ.स) की बताई गयी हिदायतों पर अमल करेगा तो उसको पानी की शक्ल में मौजूद पुल सिरात (वह पानी जोकि ताँबे और जस्ते के बीच में मौजूद है) को पार करने में कोई दिक्कत नही आऐगी और अल्लाह तक आसानी से पहुँच जाएगा और अल्लाह की इबादत में लग जाएगा और अल्लाह हमें नूरानी शक्ल देकर जन्नत में जमा करेंगे।

ऊपर हमने रुहों की शक्लों की बात की थी। रुहों की कोई तो शक्ल होगी। चाहे रुहों को नापने (माप) वाल पैमाना करोंड़ों में न होकर सैकड़ो में हों। अब हम काफिरों की रवायतो को देखें इनके मुताबिक जब यमराज आत्मा को कैद करने आते है तो उनको सर पर दो सिंगें होती है और नाक से धुँआ निकल रहा होता है उनकी शक्ल काली और एक काले भैसे पर बैठकर आते है और आत्मा (रुह) को निकाल कर ले जाते है तो इस तरह जितने भी काफिर और मुशरिक है उनकी रुहों को इस डरावने किस्म की शक्ल में कैंद होना है। यानि यह काफिरों और मुशरिकों की शक्ल हो गयी थी। इन्हें इस हाल में तड़पते रहना है तब ही काफिरों और मुशरिकों की डर के मारे शक्ल सिराह और आँखे ढटी दिखायी पड़ती हैं क्योंकि उनको मालूम हो जाता है कि खुदा ने हमारा फैसला ऐसा ही किया है।

मजहबें इस्लाम में जब किसी मोमिन की रुह को अल्लाह के हुक्म से मलकुल मौत लेने आते है तो उनकी शक्ल नूरानी होती है और उनके पास से खुशबू निकलती रहती है इसलिए वह मोमिन इन्सान घबराता नही क्योंकि उसको मालूम हो गया की अल्लाह ने हमारी रुह को इतना खूबसूरत पैमाना भेजा है जिसमें वह रहेगा, इसलिए वह घबराता नहीं उसकी ऑखे नहीं फटती, उसका मुँह नहीं खुलता बल्कि वह मुसकुराता है कि अल्लाह पाक ने हमारे लिए क्या ही खुभसूरत शक्ल चुनी है, क्योंकि अल्लाह ने पहले ही फरमा दिया है कि जन्नत मं सभी की शक्ले एक जैसी होगी और उनका कद ह. आदम (अ.स) के बराबर, खुबसूरती ह. युसुफ (अ.स) की और डील डौल ह. मोहम्मद (स.अ.सा) का किरदार ह. ईसा (अ.स.) का। तो जब मोमिन देखता है कि अल्लाह ने हमारे लिए इतना खुभसूरत जिस्म भेजा है तो वह क्यों न खुशी – खुशी रुख्सत हो।

इस तरह अल्लाह ने रुहों के लिए दो शक्ले बनाई है, नं. १ जन्नत वाली नं.२. दोजख वाली। इस तरह रुहो को कयामत के आने तक अच्छे और बुरे बर्ताव का सामना करना पड़ता रहता है। अच्छी रुहें खुशी – खुशी सारे कामो में मश्गूल रहती हैं, और अपने मालिक की याद में सजदा करती रहती है आसमानो से उसके लिए बेहतरीन रिज्क उतरता रहता है और इन्ही में से अल्लाह पाक कुछ को चुनकर तब्लीगों कामों में लगा देते हैं ताकि पुख्ता

ईमानवाले बन जाएँ, क्योंकि तौबा के दरवाजे कयामत से पहले नही बन्द होंगें। जिन रुहों को दोजखी पैमाना (जिस्म) अता किया गया है उनके साथ बदसुलूकी से पेश आया जाता है। जितने भी सख्त काम है इन्ही रुहों से करवाऐ जाते हैं और इन्हें भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है। यह दुनियाँ वालों के बीच ही भटकते रहते हैं और शैतान को पुरी छूट है इस बदकिरदार रुहों पर वह इन्हें अपने कब्जे में रखता है और जितने भी गैर इस्लामी अकायद हैं उनको करने के लिए कहता है और यह मजबूर है करने के लिए जब की कोई शैतान की इबादत करता है और उससे अपने दुश्मनों को बर्बाद करवाना चाहता है तो शैतान इन्ही दोजखी रुहों को देकर उस शख्स के पास भेज देता है जिसे बर्बाद करना होता ह। इस तरह जितने भी उल्टे काम हैं सब इन रुहों को शैतान के हुक्म के मुताबिक करने पड़ते हैं।

क्या ही बुरा हाल हैं इन गुनााहगारों का जब कि कयामत के दिन इससे हजारो गुना ज्यादा अजाब इनके लिए तैयार है। हराम मौत मरने के बाद इन रुहों को शैतान एक खास तरह का इल्म इन्हें देता है ताकि इनकी ताकत बेहद बढ़ जाए और यह जिन्दा इन्सानो को परेशान करे। इसलिए अक्सर हमने देखा और सुना की फलाँ औरत या मर्द जिसने खुदकुशी कर ली थी वह लोगो को उसी जगह पर भटकती हुई दिखायी पडी और उस जगह पर कितने ही लोगों की जान ले चुकी है अब वह एक भूत या भूतनी की शक्ल अखतियार कर चुकी है। तो जब यह रूहे शैतान के कब्ज़े में पोहंच जाती है ताकि यह एक कुवतवर और खूंखार, डरावनी रुह बन जाए और शैतान उससे अपने मन मुताबिक गलत काम करवाए और वह इन रुहो को मखलूके इन्सानी को खत्म करवाना चाहता है। वह तो यही दिखाना चाहता हैं कि मैने खुदा से वादा किया था कि मैं इस आदम जात को सही रास्ते से भटका दुँगा और दोजख में मुकाम दिलवाऊँगा, इस तरह कभी भी रुहों को सूसरे जिस्म नही मिलते। अल्लाह ने सभी मखलीको की रुहें दुनिया बानाने से पहले ही बना दी थी। कभी भी इन्सानी रुहों को जानवरों में और जानवरों की रुहों को इन्सानों में नहीं भेजता यानि पुनर जन्म जैसी वाहियात बात नहीं होती। हाँ, यह मुमकिन है कि यह ताकतवर शैतानी रुहे कभी – कभी माँ के पेट में पलने वाले बच्चे के जिस्म में घुसकर अपना मुकाम बना लेते हैं और बच्चे पर हावी होकर अपने शैतानों की तारीफ करते हैं और अपनी पिछली जिन्दगी का बयान करते हैं और यह गुमराह काफिर इस पर यकीन करके पुननर्जन्म जैसी तहरीरों को बयान कर के भोल – भाले हिन्दु भाईयों को गुमराह करते हैं ताकि इन्हें सीधा और सही रास्ता न मिले।

पुले सिरात क्या है ?

हजरत मोहम्मद (स.अ) के दुनियाँ में तशरीफ लाने से पहले मिस्त्र नाम के मुल्क में एक ऐसा निजाम बनाया गया था कि जिसमें मिस्त्र के मशरिकी हिस्से और मगरीबी हिस्से को एक पुल के जरिए मिलाया था और इस पुल का नाम चन्दवन था इसके नीचे एक दरिया बहती थी। मशरिकी हिस्से में सिंफ कब्रस्तान ही था जब कि मग्ररिबी हिस्से में आबादी थी और जब किसी इन्सान की मौत हो जाती थी तो इसी पुल से होकर इसकी लाश को गुजारते थे और दफ्न करते थे। अगर कोई पुल को पार करते वक्त इत्तेफाक से दिरया में गिर जाता था तो लोग कहते थे यह शख्स गुनाहगार था इसलिए यह पुल नही पार कर सका और यह सिलसिला चलता रहा।

जब दुनिया में ह. मोहम्मद (स.अ.) तशरिफ लाए और अल्लाह ने उनपर कुरआन की आयतें उतारनी शुरु की और जब यह आयत उतरी थी पुले सिरात को पार करने में आसानी हो तब मिस्त्र के मुशरीको ने यह कहना शुरु किया कि ह. मोहम्मद (स.अ) पर कुरआन नहीं जिक्र किया गया है वह तो मिस्त्र में मौजूद है और हमारा भी यही मानना है कि जो गुनाहगार होगा वह यह पुल पार नही कर पाएगा और कुरआन में मिस्त्र के ही पुल के बारे में बताया गया है।

थोड़ी देरके लिए हम यह मान लें कि उस दौर में जो पैगमबर आए होंगे तो उन्होने लोगो को समझाने के हिसाब से इस पुल की मिसाल पुल सिरात से दी होगी लेकिन यह मुशरिक इस बात को मानने को तैयार नहीं हुए। अब इनकी दलील को किस तरह नकारा जाए यह हमें कुरआन से ही मिलेगी।

कुरआन में नील दरिया का जिक्र कई बार आया है। आइए हम इसकी तहकीकात करें की दुनियाँ में और भी बड़े – बड़े दरिया जैसे गंगा, जमुना, कावेरी, अमेजन, हवोक, वगैरह – वगैरह हैं। किसी और दरिया का कोई जिक्र नहीं हैं लेकिन दरिया –ए- नील का जिक्र कुरआन की सूरे बकरा की आयत नं. ५० और पारा नं. १ में अल्लाह फर्माता है कि और (वह वक्त भी याद करो) जब हमने तुम्हारी (ह. मुसा (अ.स)) वजह से नदी को फाड़ दिया फिर तुमको (ह. मुसा (अ.स.)) को खैर के साथ पार लगाया और फिरऔन के लोगों को तुम्हारे देखते डुबो दिया अगर हम इस आयत को पुल सिरत के रास्ते से मिलाए तो कुछ समझ में आयेगा क्योंकि पुल सिरात का रास्ता गुनाहगार पार नहीं कर पाएँगे और इस जहन्नुम की शक्ल जिसमें आग के दरिया बह रहे हैं गर्क हो जाँएगे, जैसे की ऊफर की आयत में अल्लाह फर्मा ता हैं कि हमने दरिया –ए – नील में मूसा को पार लगा दिया और

जैसे ही फिरऔन के लोग इसी दरिया में घुसे ताकि पार कर सके अल्लाह तआला ने इन लोगों को डुबो दिया यानि फिरऔन और उसके साथी पुल सिरात के रास्ते को नहीं पार कर सके। हम यह कह सकते हैं कि यह हश्र के दिन की पुल सिरात की शबी हो सकती है। जैसे की आसमानी काबे की शबी मक्के में मौजूद है जिसे अल्लाह का घर कहते हैं। हमने कुरआन में यह भी पढ़ा की जन्नत दोजख के मुकाबले काफी छोटी है अगर हम जन्नत को अल्लाह का घर समझे जैसे की कुरआन में पारा नं. १ सूरे बकरा की आयत नं. १२५ में अल्लाह फर्माता है कि और जब हमने काबे के घर को लोगो के जमा होने और अमन की जगह बनाया और (लागों को हुक्म भेजा) की इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज की जगह बनाओ और हमने इब्राहीम और इस्माईल दोनो को हुक्म दिया कि मेरे घर का तवाफ करने वालों और एतेकाफ़ करने वालो रुकुअ और सजदा करने वालों के लिए पाक साफ रखो।

इस आयत में अल्लाह ने काबे को अपना घर बताया और काबा दुनियाँ के मुकाबले साइज में भी बहुत छोटा है। हम यह भी गौर करें जब ह. आदम (अ.स.) को अल्लाह तआला ने काबा बनाने का हुक्म फरिश्ते ह. जिब्राईल (अ.स.) के जरिए भेजा और मक्का जिसकी उस वक्त कोई हद नहीं खिची थी और अगर ह. आदम (अ.स.) चाहते तो काबे को बहुत बड़ा बना डालते ताकि अपने रब को खुश कर सके, लेकिन अल्लाह ने ह. जिब्रईल (अ.स) को काबे की मिसाक (हद) मुकर्र करने को कहा और चार पत्थरों के जरिऐ काबे की हद मुकर्र कर दी और यह चार पत्थर अलग अलग २ जगहों से लाए गए थे। एक पत्थर सफा पहाड़ से, एक पत्थर मरवा पहाड़ से, एक पत्थर तूर पहाड़ से और एक पत्थर नजफ अशरफ से और जब ह. जिब्राईल (अ.स.) ने काबे की हद खींच दी तो ह. आदम (अ.स.) ने इसी हद के अन्दर चारों तरफ से दीवार उठाकर इसमें दाखिल होने के लिए एक रास्ता बना दिया।

अब हम यह कह सकते है कि जिस तरह अर्श पर बनी जन्नत बहुत छोटी और दोजख काफी बड़ी हैं उसी तरह दुनियाँ जो की जहन्नुम है और काबा इसमें अल्लाह का घर यानि जन्नत है तो यह दोनों मिसालें काफी है मिस् के बने उस चन्दनवन नाम के पूल को जिसे यह पुल सिरात से जोडते हैं, इसके अलावा अर्श पर जो पुल सिरात बनी है अगर एक बार कोई इसे पार कर गया तो जन्नत पहुँच जाता है और फिर वहाँ से वापस आने की तमन्ना नहीं रखता।

खुदा (परमात्मा)

गैर मजहब जैसे हिन्दु मजहब का यह कहना की इस पूरी कायनात में कोई भी पूरा (पूर्ण) नही सभी अपूर्ण है क्योंकि कोई भी ऐसा इन्सान नहीं जो की यह कह सके मुझे इस कायनात की हर चीज की जानकारी (मालुमात) है, लेकिन परमात्मा (ईशवर) सम्पूर्ण है यानि इस मजहब ने सम्पूर्ण कहकर अपने खुदा को हदों में बाँध दिया।

जबकि मजहबे इस्लाम का कहना कि खुदा सब कुछ जानता है, उससे कुछ भी नहीं छिपा है, उसे हर तरह की मालूमात है और उसकी खुदाई की कोई हद नहीं। अब हम. खुदा को सब कुछ मालूम है और हिन्दुओं के मुताबिक ईश्वर सम्पूर्ण है। दोनो का मुतालआ करते है।

अगर कोई शख्स मेरे घर पर खाने के लिए आए और दस्तरख्वान पर रखी हुई किस्म – किस्म की चीजों को देखकर यह कहे की हम सम्पूर्ण खा जाँएगए यानि पूरा खा जाएँगे तो यह उस दस्तरख्वान पर बैठे मेहमान की हद खिच गयी की बस हम यही खा सकते हैं क्योंकि उसने सम्पूर्ण खा सकता हैं क्योंकि उसने सम्पूर्ण खा जाएँगे कहा है यानि इसके आलावा वह और कुछ नहीं खा सकता है।

अब अगर एक दूसरा मेहमान आये और उससए खाने के बारे में पूछा जाए कि आप क्या – क्या खाएँगे और उसका जवाब हो सब कुछ, यानि अब इसकी कोई हद नही है उसी तरह जैसे की इल्म (ज्ञान) नकी कोई सीमा नहीं है कोई यह नही कह सकता की मुझे पूरा ज्ञान हो चुका है और अगर कोई शख्स यह कहे की मुझे सम्पूर्ण ज्ञान है तो इसका मतलब यह हुआ की उस शख्स के मुताबिक जो उसने सिखा या पढ़ा बस वही ज्ञान (इल्म) है और इसके आलावा कोई इल्म नहीं है तभी उसने सम्पूर्ण ल्फज का इस्तेमाल किया। लिहाजा हिन्दु धर्म का यह मानना है की ईश्वर सम्पूर्ण है इल्म के लिहाज से निहायत गलत है। जब किसी इन्सानी बच्चों को पहले दर्जे में दाखिल दिलाया जाता है तो उस दर्जे में उसे अलीफ, बे या,ए,बी,सी, और एक, दो, तीन की तालीम दी जाती है क्योंकि अभी उसका जेहन इतना ही बोझ उठा सकता है और बच्चों के लिए र्सिफ यही इल्म होता है इसके अलावा कुछ नहीं, लेकिन जब बच्चे का जैसे जैसे दर्जा बढ़ता है उसका इल्म भी उसी तरह बढ़ता जाता है और उसके बाद जब बी.ए. फिर एम.ए. पास कर चुकता है तो सोचता है चलो अब पी.एच.डी. कर ली जाऐ और जब वह आर्ट के सब्जेक्ट में पी.एच.डी. कर चुकता है तो उसे मालूम पड़ता है अभी तो और कितने कोर्स बाकी हैं, जिसका इल्म हासिल करते करते उसकी उम्र खत्म हो जाएगी लेकिन इल्म पूरा नहीं हो पाऐगा और अल्लाह

रब्बुल इजॅजत से वह कितनी ही उम्र क्यों न माँग ले फिर भी इल्म पूरा नहीं सीख पाऐगा यह वही इल्म है जैसा की ह. नूह (अ.स.) का तश्त जो हजारों साल पहले समन्दर में गिरा और आज तक समन्दर के बॉटम (तल) तक नहीं पहुँच सका । लेकिन खुदा को और उसके पैगम्बरों को सब कुछ मालूम है। अल्लाह पैगम्बरों से भी ज्यादा इल्म रखता है, उसकी खुदायी में कहाँ क्या मौजूद है, कौन सी दुनियाँ में कैसे बन्दे है। वह सब क्या करते है और किसकी इबादत करते है। अल्लाह तआला ने जुबूर उतारी और कई सौ साल तक जुबूर को ही लोग सारा इल्म समझते रहे फिर उसके बाद तौरेत उतारी और जुबूर को अल्लाह ने वापस लिया और तौरेत सैकड़ो साल चलती रही, लोगो ने समझा बस सब कुछ यही है फिर कई सौ साल के बाद अल्लाह ने इन्जील उतारी और तौरेत को वापस लेलिया। दुनियावी लोगो ने समझा अब इल्म पूरा हो चुका है और सब कुछ इन्जील में ही है और यही इल्म है लेकिन सैकड़ो साल के बाद अल्लाह ने ह. मोहम्मद (स.अ) पर कुरआन उतारा और इन्जील वापस ले ली और आज कुरअअन को उतरे हुए १४०० साल हो चुके हैं अब ह. मोहम्मद (स.अ) के बाद कोई और नबी नहीं आने वाला और यह कुरआन हम पर एक शरीयत है हर इन्सान को यकीन होना चाहिए और बताऐ हुए रास्ते पर चलना चाहिए।

हमें अपने बुजुर्गो से मालूम हुआ कि आसमानी किताब कुरआन के अन्दर हर किस्म के इल्म छुपे हुए हैं, जैसे पूरी सायन्स, कला, कॉमर्स, नफसीचाती सायन्स, भूगोल, इतिहास, गणित न जाने कितने और आने वाले जमाने में होने वाली तरक्कीयों की बाते और हर दानिश्वर अपने मतलब की हिदायतों को ढूंढ़ता रहेगा। दुनियाँ खत्म होने को आ जाएगी लेकिन इस कुरआन में मौजूद इल्म की खासियत बढ़ती जाएगी। यह आने वाले हजारों सालों में भी कोई शख्स ऐसा न होगा जो यह कह सकेगा कि मैने कुरआन पूरी तरह से समझ लिया है यह वोह अल्लाह की आखरी किताब है जिसकी गहराई को मापने के लिए आज तक आज तक न तो कोई पैमाना बना है और न बन पाऐगा, इन्शाअल्लाह ! ये गैर मजहबों के चार वेद नहीं जिस अगर कोई इन्सान एक वेद पढ़ ले तो पंडित की डिग्री मिल जाएगी और अगर कोई दो वेद पढ़ ले तो द्विवेदी और कोई तीन वेद पढ़ ले तो त्रिवेदी और अगर कोई चार वेद पढ़ ले तो चतुर्वेदी हो जाता है और इनके हिसाब से अब कुछ भी नही बचा इनके शास्त्रों में जो उनके और काम आ सके।

ह. मोहम्मद (स.अ.स) ने अफने दौर में कहा था की कुछ इल्म ऐसे हैं जो दूसरि दुनियाँ के लोग जानते हैं और वह काफी फायदेमन्द हैं लेकिन इस दुनियाँ के लोग वह इल्म हासिल ही नहीं कर सकते, मतलब यह हुआ कि

उन दूसरी दुनियाँ के लोगों का इल्म हमसे ज्यादा तरक्की आफ्ता है। इस तरह बे- हिसाब दुनियाँ की जानकारी र्सिफ खुदा को है और उसके जरिऐ भेजे गये पैगम्बरों को ही है, लेकिन अल्लाह की पूरी मालूमात है कि यह दुनिया कब तैयार हुई और कब इसमें कयामत आऐगी। पैगम्बरों को सब मालूम है लेकिन जब इनसे यह पूछा गया की कयामत कब आएगी तो पैगमबरों ने यही जवाब दिया, खुदा बेहतर जाने, पैगम्बरों के इस तरह के बयान से दो बातें साबित होती हैं या तो इनको वकाई नहीं मालूम था या मालूम तो है लेकिन अल्लाह ने मना कर रखा है कि कही मखलूक को एक मुकर्रर दिन बता दिया जाए तो कयामत के कुछ साल पहले वह अपने को सुधारना शुरु कर दे की चलो भाई अब तो दुनिया फना होनी है आओ कुछ अच्छे काम कर लें। इसलिए खुदा सम्पूर्ण इल्म वाला है यह कहना निहायत गलत है, अल्लाह सब कछ जानने वाला है यह कहना निहायत गलत है, अल्लाह सब कुछ जानने वाला है उसकी कोई हद नहीं है।

खुदा और वक्त की उम्र करोड़ों भगवान का राज.

हम कहते हैं कि मेरी उम्र ३७ साल है, हमने देखा हमारे बेटे की उम्र ७ साल है इस वक्त मेरी वालिदा की उम्र ७४ साल है मैंने अपनी वालिदा की ७४ साल की पूरी उम्र को तो नहीं देखा क्युकी मैं तो वालिदा की उम्र के ३७ साल बाद आया इसी तरह मेरा बेटा मुझे मेरी पूरी उम्र से ही नही देख रहा है, लेकिन मैं अपने बेटे को पैदा होने से लेकर अब तक देख रहा हूँ और कब तक मैं उसे देखता रहूँगा इसकी कोई समय सीमा तय नही है। इसी तरह यह अन्दाज लगाना की इस दूनियाँ को बनाने वाले खुदा की क्या उम्र होगी? अगर किसी ३० साल के शख्स को कोमा (बेहोशी) हो जाए शाम के वक्त और ६० साल की उम्र में उसे यह पूछा जाए की अब तुम्हारी उम्र क्या है तो वह जवाब देगा ३० साल और यह भी कहे कि मैं शाम को सोया था और रात को मैं उठ गया, यानि मैं चार – पाँच घंटे सोया था बस। यानि बेहोशी के ३० साल उसकी मेमोरी में दर्ज नहीं हुए जिस तरह हम वक्त पर और

उसकी उम्र पर नजर रखते है उसी तरह जानवर भी उम्र का हिसाब रखते होंगे, लेकिन किसी भी जानवर या परिन्दे में ऐसी खासियत नही मिली। जानवर या परिन्दा सुबह सूरज को निकलते हुए देखते हैं और शाम को सूरज डूब जाता है यही इनकी मेमरी बॅक्स में दर्ज रहता है। इनके पास उम्र का रेकार्ड दर्ज नही होता। इसी तरह जिस खुदा ने यह पूरी कायनात बनायी उसने कभी भी इसकी उम्र जाहिर नही की उसी तरह जिस तरह एक आदमी ३० साल कोमा में रहने के बाद भी उसे कुछ घंटो का ही हिसाब मालूम पड़ता है यानि वह साल उसके लिए कॉन्स्टन्ट रहे, दुनियाँ और उस खुदा की उम्र भी कॉन्स्टन्ट है, इसमें किसी भी तरह का बदलाव नहीं होता। वक्त को अगर हम अनासिर (तत्व) मान कर चले तो इसके मॉलिक्युल्स जिस हालात में कही पर बैठे रहे या उड़ते रहें तो इन दोनो कॅण्डीशन में ना यह घटने वाले हैं और न यह बढ़ने वाले है। इनपर वातावरण का कोई भी असर नहीं होनेवाला यानि यह कॉन्स्टन्ट है। इसी तरह खुदा के नूर पर कोई भी किसी भी तरह का असर नही पड़ता नाही इसकी उम्र बढ़ने वाली है और ना ही इसकी उम्र घटने वाली, इस तरह खुदा की उम्र भी कॉन्स्टन्ट रहने वाली है।

आज से एक लाख साल पहले लोगों का यह कन्सेप्ट था कि भगवान होने में ३ शर्ते जरुरी थी:

१. बहुत पैसे वाला २. अच्छी सेहत वाला

३. दौलत का सही ईस्तेमाल करने वाला

अगर जिस किसी भी इन्सान में यह खुबियाँ मौजूद होती तो सभी लोग कहने लगते की यह मेरा भगवान है और यही एक थीअरि मशरिक से मगरीब और शमाल से जुनूब तक एक इसी थीअरि पर लोग कायम रहे और जब इनके कबीले टूटने लगे तो इन्होने यह देखा की भगवान सिंफ अमीर ही क्यों हो सकते हैं, गरीब क्यों नहीं। इन लोगों ने अपनी अक्ल से एक नई थीअरि बनाई की सब भगवानों का एक ईशवर होता है और ईश्वर के करीब वही आता है जो सभी तरह के ऐश को छोड़ दे और बिना कपड़े के रहे और गरीब जीवन बिताए, तो सबसे अच्छा वही भगवान होगा। तो बुध्द ने ऐसा ही किया और लोगो ने बुध्द को अपनाभ्गवान मानना शूरु कर दिया। इनका देखा देखी जो गरीब तो थे लेकिन अकल्मन्द भी, तो बुद्द की थीअरि को अपनाने लगे और अपनी पूजा करवाने लगे। अब जितने भी बड़े – बड़े राजा महाराजा थे सबने इन्हें अपना भगवान मानना शुरु कर दिया, इसलिए हर कबीले का सरदार इनका भगवान बन गया। इसलिए एक के बाद दूसरे भगवानों का सिलसिला चलता रहा तब

भी उस वक्त के भगवान थे लात, मनात,उज्जा, वगैरह – वगैरह। इन लोगों ने अपने अपने भगवानों के मरने के बाद उनके बूतों को पत्थर से तराश कर बनवाना शुरु किया। फिर जब इनके कबीले टूटना शुरु हुए तो हर टूटे हुए कबीले ने अपने सरदार को भगवान माना और जिन्दगी भर उसको अपना भगवान माना और जब वह मर गया तो उसका बुत बनाकर उसकी पूजा करने लगे और कोई भी कबीला टूटे तो कम से कम १० टूकड़ो से कम में नहीं टूटता था और उस वक्त हजारों की तादात में कबीले थे अगर शुरु में इनकी तादाद १०००० गिनी जाए कम से कम जब यह टूटे तो एक लाख हुए और जब इनकी तादाद बढ़ी तो दस लाख हुई और इस तरह टूटते – टूटते यह संख्या करोड़ों में हो गयी इस तरह इन हिन्दु कौम में भगवान करोड़ो की संख्या में हो गये। और इसीलए हर दौर में भगवान बदलते रहे लेकिन जब ५७१ ई में हजरत मोहम्मद (स.अ.स) तशरीफ लाए और उन्होने ४० साल की उम्र यानि ६११ ई. में खुदा के बारे में लोगों को बताना शुरु किया तो लोगों के समझ में आने लगा की वाकई ह. मोहम्मद (स.अ) जो बता रहे हैं वही सही है और अब मुझे खुदा मिल गया और वही सारे जहां को बनाने वाला वोही पैदा करने वाला वोही मौत देगा और एक सिंफ वही इबादत के लायक है और ह. मोहम्मद (स.अ) उसके भेजे हुए पैगम्बर हैं और इनसे (ह. मोहम्मद स.अ.स.) पहले हमारा खुदा १,२४,००० और भी पैगम्बर भेज चुका है ताकि हम सीधे रास्ते पर चले। अल्लाह के रसूल अरब के लोगों में सन ६३४ ई. के. सफर के महीने तक तब्लीग करते रहे और लोगों को जब पूरा यकीन हो गया की हमारा खुदा तो एल नूर है, न उसकी कोई शक्ल है, न उसे नींद आती है और न ही उसे भूख लगती है, न तो वह किसी से पैदा हुआ न ही कोई उसका शरीक। जब ह. मोहम्मद (स.अ) दुनियाँ से पर्दा कर गये तो अल्लाह ने ये काम खलीफाओं को सौपा और जब खलीफाओं का दौर खत्म हो गया तो इमामों के जरिए दीन की तब्लीग करवाते रहे उसके बाद इमामत का दौर भी चला गया तो अल्लाह ने यह काम वलियों को सौंपा और जिस दौर में जी हैं य वलियों का ही दौर है। अल्लाहतआला वक्त के हिसाब से वलियों को भेजता रहता हैं।

जब कौमे हिन्दुओ ने यह देखा कि ऐसा मुम्किन नहीं है कि एक मजहब में करोड़ो भगवान हो जब कि मजहबे इस्लाम, मजहबे ईसाई, मजहबे यहुद जैसे सभी मजहबों में एक ही खुदा है और सब इसकी इबादत करते हैं तो फिर हिन्दु मजहब में करोड़ों की तादाद में भगवानों का होना कुछ अटपटा लगता है। तो मजहबे हिन्दु के दानिशवरों ने अपनी गलती को सुधारने के लिए ई. सन ८०० से मजहबे इस्लाम की थीअरि अपनाना शुरु कर

दी और कहने लगे सब भगवानों का एक ईश्वर है और जो राम, हनुमान क्रृष्ण, गणेश , ये सभी ईश्वर के भेजे हुए पैगम्बर हैं इस तरह उन्हों ने अपनी गलती को सुधारने की कोशिश की लेकिन हमने मजहबे इस्लाम में यह देखा की जितने भी पैगम्बर अल्लाह ने दुनिया में भेजे सब के सब इंसानी जिस्म से पैदा हुए थे उन सभी के अन्दर हम जैसे इंसानों की तरह जिस्म थे वोह सभी अल्लाह की नेमतो का इस्तेमाल किया करते थे । सभी को दो हाथ, दो पैर, दो आँखे, दो कान यानि एक सेहतमन्द जिस्म था, लेकिन अगर हम हिन्दु मजहब के पैगम्बरों पर नजर पालें तो सभी अलग – अलग शक्लों के साथ उतरे जैसे कि शंकर जी का रंग नीला था, हनुमान जी के दुम थी और शक्ल बन्दर जैसी। गणेश जी के मुँह में एक हाथी की सूँड़ लगी है, काली माता के बारह हाथ है, जबान इतनी लम्बी के मुँह के बाहर लटकती है, शंकर जी शेर की खाल लपेटे हुए गले में साँप और एक डमरु अपने साथ लिए हुए। बाल इतने लंबे के जटाधारी कहलाने लगे, इस तरह जितने भी दूत हिन्दु मजहब में उतरे सब के सब अलग- अलग शक्लों को एखितयार किए हुए थे।

इसके अलावा हिन्दु मजहब के सरबराहों का यह कहना कि इन सभी लोगों ने जिसका जिक्र ऊपर किया गया है यह सभी ईश्वर का अवतार लिए हुए थे अब उनकी इस बात पर यकीन किया जाए कि ईश्वर एक है तो यह अवतार कहाँ से आ गये? या तो आप उन्ही करोड़ों भगवान की थीअरि को सही कहें। इस तरह ये मजहब आजतक पशोपेश में है कि अखिरकार हमारा खुदा कौन है ? अपने को सबसे पहले पुराने मजहब कहने वाले क्यों सिमटते चले जा रहे हैं? तकरीबन हजारों की तादाद में लोग हिन्दु मजहब को छोड़कर इस्लाम कुबुल कर रहे, हैं क्योंकि वह समझ चुके है कि हमारी रहनुमाई इस्लाम में ही हो सकती है और कहीं नही हो सकती।

आज का हिन्दु सायन्स के माहौल में रह रहा है इसलिए वह हर बात सायन्स के दायरे में देखना चाहता है और साबित करना चाहता है। आज का हिन्दु दानिश्वर तुल्बा है, उसे हनुमान चालिसा की उन पंक्तियों को जैसे:

युग सहस योजन पर भानु
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

जिसका मतलब यह हुआ की हजारों कोस की दूरी पर चमकने वाले सूर्य को अपनी बाल- बुध्दि के कारण मीठा फल समझ लिया और उसको निगल गये को नही मानता क्योंकि सूरज करोंड़ों कोसो की दूरी पर है और आज के इस नये जमाने में जो सायन्स के पढ़ने वाले हैं वो तो यह जानते ही है कि सूरज हमारी पृथ्वी ग्रह से बड़ा है

और जिसके अन्दर हाइड्रोजन के करोड़ों की तादाद में पहाड़ मौजूद है इसके अलावा एक आम इन्सान यह समझ सकता है कौन ऐसी गलती करेगा की सूरज को फल समझ बैठे तो यह कैसे मुमकिन है के हनुमानजी ने सूरज को अपने मुँह में निगल लिया। इन्ही सब बेबुनियाद बातों की वजहसे हिन्दु कौम के लोग इस धर्म को छोडकर इस्लाम धर्म को अपना रहे हैं। अब अगर अवतार वाली थीअरि पर वापस आया जाए कि ईश्वर अवतार लेता है तो हम यह भी जानते हैं कि ईश्वर ही ने सूरज को बनाया है तो क्या ईश्वर ऐसी गलती करेगा की अपनी बनाई हुई चीज को भूल जाए और सूरज जैसे चमकते हुए तारे को फल समझ बैठे। ईश्वर की अक्ल को इस तरह बयान करना ईश्वर का अपमान नहीं तो क्या है ? यह अवतार वाली कहानी तो बिल्कुल गलत साबित हो गयी।

नशा और मजहब

आज के सभ्य समय में कौन यह कहता है कि नशा करके भगवान को खुश करो शायद कोई भी नहीं सिवाय हिन्दु कौम के और कोई मजहब ईश्वर की पूजा करते वक्त नशा करने को नहीं कहता। यह गुमराही सिर्फ एक सीधी सादी कौम और जो अहिसावादी थी उसको अंधेरे में रखने के लिए इस धर्म के पंडितों ने गलत खयालो को बनाया ताकि ये लोग नशे की हालत में ही रास्ता भटकते रहे और हम जिस तरह चाहे इस कौम के लोगो को गुमराह करें। इसकी रिवायत भी ऐसी है कि इनके एक भगवान जिनका नाम शंकर है वो भाँग खाकर अपना नशा पूरा करते थे इसलिए इसको एक त्यौहार की शक्ल में जिसका नाम शिवरात्री रखा जिसका मतलब होता है शिव की रात (ऐसी मान्यता भी है के इस दिन शंकर भगवान की शादी पारवती से हुई थी) और क्योंकि इस दिन शिवजी ने नशा करने के लिए उकसाया जो कि इस सिव्लिाइज्व् सिस्टम में किसी तरह भी अच्छा नही क्योंकि ये नशा दिमाग को बंद कर देता है और हमारे सोचने की ताकत को कमजोंर करता हैं। सायन्सदानों ने भाँग की पूरी जाँच कर ली है और इसे एक नुकसान देय नशा करार दिया है क्योंकि ये हमारे जिस्म में मौजूद आँतो को बेहद बढ़ा देती है जो कि एक आम हाजमे की रिऐक्शन से बहुत ज्यादा है क्योंकि हमारी ऑते रबर की तरह हैं जिसे जीतना खींचे बढ़ती जाती हैं।

कुछ लोग हमसे सवाल करते हैं कि आपने सिर्फ हिन्दु मजहब को ही क्यों चुना और कोई मजहब को क्यों नही चुना। तो वह इसलिए कि जब से मजहब इस्लाम की बुनियाद पड़ी उसी वक्त से ईसाइयों और यहूदियों` इस्लाम की मुखलिफत की और इस लिए उनके दौर में जितने भी जंगे लडी गई ईसाई, यहुदी, नसारा, पारसी वगैरह – वगैरह से हुई थी क्योंकि इन कम अक्लों ने ह. ईसा (अ.स.) को खुदा का बेटा कहा और ह. मूसा (अ.स.) को अपना खुदा माना इसके आलावा ये किसी को नही मानते थे जब कि हजरत ईसा (अ.स.) ने खुद इंजील में बयान दिया कि मैं खुदा का भेजा हुआ रसूल हूँ और मेरे बाद एक और आखरी रसूल आने वाले हैं जिनका नाम अहमद है (आसमानो में ह. मोहम्मद स.अ.स. का नाम अहमद है) कुरआन ने इसकी तस्दीक की है।

इसके बावजुद इन ईसाईयों ने ईसा को खुदा का बेटा कहा और नबीऐ करीम की मुखलिफत की इसी वजह से इन लोगों से जंगे हुई और इन्हें हर वक्त हर जगह मैदान छोड़कर भागना पड़ा और ये इतने गुमराह हो चुके थे कि इन्होंने इंजील के साथ, तौरेत के साथ छेड़कानी शुरु कर दी इसीलिए अल्लाह तआला ने इन दोनो कितबो को वापस लेलिया। अब इन यहुदियों और नसारा ने बाईबल नाम की किताब लिख डाली और कोशिश की कि उसमे इंजील का कुछ जिक्र आ जाए, इसके आलावा दुनियाँ में जितने भी मुल्क हैं उन सबकी बाईबल नाम की किताबों में अलग – अलग रिवायते लिखी हैं। यही इसकी वजह है और दलील है असली किताब अल्लाह ने इनके पास से उठा ली वरना हर एक की बईबल अलग न होती जब कि कुरआन अरबी में उतारा गया और आज पूरी कायनात में अपनी उसी १४०० साल पहले की शक्ल में मौजूद है। हमसे पहले इस्लाम के बड़े – बड़े औलियों ने यहुदियों, ईसाईयों और पारसियों की गलत रिवायतों को कई बार आईने की तरह साफ किया है और इनके गन्दे अकायदों के खिलाफ हजारों किताबे लिखी जा चुकी हैं। जब इन्होने देखा इस्लाम से बहस करके टिकना नामुम्किन है और इनसे लड़ना भी इतना आसान नहीं तो इन लोगों ने मिस्र एक आलिम के दौर में एक नयी तरह की चाल चली। इन यहुदियों और ईसाईयों ने कुरआन को हिफज करना शुरु किया और मुसलमानों के अकायदों को अपने अन्दर पूरी तरह से उतार कर मुसलमान जैसे बन गये और अपने ही धन दौलत से मास्जिदों की तामीर करवाई और खुद ही इबादत करने लगे। हर आने वाले नामाजी के साथ बहुत अच्छा सुलुक करते थे और उनकी माली मदद भी किया करते थे। इस तरह इनका पूरा एक गिरोह इस काम में लग गया। जब इन लोगों ने देखा कि अब मुसलमान हमारी बातों को मानते हैं और हमारे बताए हुए तरीकों पर चल चुके हैं तो इन लोगों ने सोचा कि इससे अच्छा मौका और क्या हो सकता है क्यों ना अब मुसलमानों को हिन्दुओं से लड़वाया जाए, बस इसी मौके का इंतजार था। इन ईसाईयों ने और यहुदियो ने भोले भाले मुसलमानों को जेहाद का गलत तरीका

बताया और बेवजह हिन्दुओं को मारने का फरमान जारी किया और इसी तरह हिन्दु कौम जो अहिसावादी थी साग सब्जी खाने वाली इनको किसी से कोई मतलब ना था सिर्फ अपने बुतों में लगे रहते थे उनको भड़काना शुरु किया कि मुसलमान तुम्हारे कट्टर दुश्मन हैं और एक वक्त ऐसा आयेगा कि हिन्दु कौम नहीं बचेगी लिहाजा ए हिन्दू कौम मुसलमानों से जंग करो और इनके धर्म को गलत साबित करो यह काम इन इसियो ने हिन्दू मज़हब के ज्ञानी लोगो से मुलाकात करके और उन्हें किस तरह अपने मज़हब को बचाना है इसकी तरकीबे शुरू की आखिर में यह सब वहाँ के बादशाह के हाथों पकडे गए लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी और ईसाईयों की साजिश अपने रंग में रंग चुकी थी । हिन्दु कौम के पंडित ईसाईयों के जाल में बुरी तरह फँस चुके थे तब उन्होनें मजहबे हिन्दु की नई भाषा तैयार कि जो इस तरह है हिन्दु वह मजहब है जिसमे कई गिरोहों के लोग शामिल हैं इन गिरोहों ने इसकी ईमानदारी और सच्चाई को देखते हुए यह मजहब बनाया इस मजहब में सिर्फ जैन, बौध, के मानने वाले शामिल हैं। इस तरह हमने देखा इन पंड़ितों ने सिर्फ उन्ही धर्मो को अपने में शरीक किया जो कि मूर्ति पूजते थे और करोंड़ों भगवानों कि तहरीर को मानते थे। इसीलिए बौध और जैन मजहबों मे काफी फर्क होने के बावजुद इन हिन्दुओं ने अपने मजहब में शरीक किया। अब इनको लगने लगा कि हमारा मजहब काफी मजबुत हो चुका है ता इन लोगों ने इस्लाम पर हमले करने शुरु कर दिए और हर तरह से मुसलमानों को परेशान करने लगे, लेकिन इसके बावजूद इस मजहब के लोगों ने इस्लाम कुबुल करना बन्द नहीं किया क्योंकि हिन्दु मजहब में जो लोग पढ़े लिखे होते थे और उनका इल्म जाग जाता था तो अपने मजहब की करोंड़ों भगवानों की रिवायतों को न मानते हुए एक सच्चे मजहब की तलाश में लग गये और जैसे ही उन्हें मजहबे इस्लाम के तौर तरीकों की मालूमात हुई तो इन लोगो ने इस्लाम कुबुल कर लिया। जब हालात हाथों से निकलते दिखने लगे तो इन्होंने मजहबे इस्लाम की किताब कुरआन को अपना निशाना बनाना शुरु किया और जिसकी पहली कड़ी थी कि मुसलमानों को चाहिए कुरआन की चौदह आयतों को हटा दिया जाऐ जबकि आज तक किसी मुसलमान ने महाभारत, गीता और रामायण के किसी भी अल्फाज पर एतराज जाहिर नहीं किया क्योंकि उन्हें इन किताबों से क्या सरोकार जिस मजहब में कुरआन जैसी नायाब किताब मौजूद है जिसमें हर तरह का इल्म हो उसे क्या जरुरत है गैर मजहबों की किताबों को पढ़ने की, और कुरआन किसी इन्सान ने तो नही लिखा जो कि किसी के ऐतराज करने पर हटाया जा सके जब कि रामायण को लिखने वाले वाल्मिकी गीता के लिखने वाले कृष्ण थे। उन्होनें अपनी सोच समझ और नसीहतों को इन किताबो के जरिए जाहिर किया था और इन किताबो में भी एक नहीं काफी बार

काफिरों का जिक्र हुआ है। हिन्दी में काफिर को नास्तिक कहते है। तो फिर कुरआन की इन आयतों को क्यों हटाया जाए जब की इनकी किताबों मे ही काफिर को नास्तिक कहकर पुकारा गया है। अगर ये नास्तिक नहीं हैं। तो फिर ये अल्फाज इन के लिए नही इसतेमाल किया गया है तो अगर ये एक ईश्वर के मानने वाले है तो इनका कोई सरोकार नही और अगर मान लिया जाए कि इन चौदह आयतों कों एक तरफ कर दिया जाए तो कया हिन्दु लोग कुरआन को पढेंगे और अपने घरो में रखेंगे। अगर इस बात का यकीन दिलाया जाए तो इस्लाम के आलिम इस पर गुफ्तगू कर सकते है और साथ में उन चौदह आयतो को हटाने की वजह सच के आईने में और सायन्स की तौल से होना चाहिए, नही तो इन हिन्दु ज्ञानियों को कोई हक नही कुरआन पर उगँली उठाने का।

मैने जब ये देखा कि इस्लाम के आलिमों ने गैर मजहबों का उनकी रिवायतो को उनके अकीदों को गलत साबित कर चुके है तो अब हम कयो न उस मजहब के आलिमो की रिवायतो को सायन्स के तराजू मे इस्लामीक खियातों और हिन्दु खियातों को तोल कर देखे किस का पलडा भारी है और ऐसा होना मुम्किन भी है या नही। जैसे कि एक और रिवायत मशहुर है इन गैर मजहबो में कि दधिची नाम के एक संत ने एक चिडिया को रोते हुए देखा तो उससे पूच्छा कि तुम कयों रो रही हो? उस चिडिया ने जबाब दिया इस समन्दर ने हमारे अण्डें निगल लिए है। ये सुनते ही दधिची ने समन्दर का पुरा पानी पी लिया और अण्डो को निकालकर चिड़िया के हवाले कर दिया। अब आप ही बताइए कि ऐसा मुम्किन हो सकता है या नही? अब तक तो हमने यही देखा कि समन्दर की कोई हद नहीं होती और एक इन्सान कया समन्दर पी सकता है कैसी अजीब बात है, कोई यकिन कर सकता है और कया इसे सायन्स साबित कर सकती है, नही कभी नही, इसलिये आज यह मुतालबा है उन हिन्दु गिराहों से कि पहले अपनी किताबों से इन बच्चो को बहलाने वाली कहानीयों निकालें, नही तो हिन्दु समाज की आने वाली पीढी अपने पूर्वजों को बेअकल कहने में कोई मुरक्कत नहीं करेंगे।

हमारी किताब के जरिए अपनी बात रखने का आसान मक्सद यही है कि आने वाली पीढी सही रास्ते पर चले और खुदा और उसके रसुल पर ईमान लाए ताकि उसकी ही इबादत की जाए जो इबादत के लायक है न की उनकी जो न तो हमें नुक्सान पहुँचा सकते है और न ही फायदा। हिन्दुओं के कुछ सन्तो का ऐसा बयान आना की जब वह साधना (इबादत) में मशगूल रहे और कई - कई महीनों एक टाँग पर खडे रहे तो ईश्वर उनके सामने हाजिर हुआ और ईश्वर ने कहा कि मै तुमसे बहुत खुश हुआ। इन संतो ने यह बताया की ईश्वर के चेहरे पर

बहुत नुर था और मुँह पर सफेद बाल मौजुद थे और चेहरे पर झरीयाँ। इस तरह उन संतो ने ईश्वर (खुदा) क हुलिया बयान किया। अगर इन हिन्दु संतो पर थोडा सा यकीन किया जाए तो ईश्वर के बालो का सफेद होना और चेहरे पर झुरीयों होना इस बात को बता रहा है कि इतने साल गुजर चुके तो ईश्वर (खुदा) बूढा हो चुका। इसका मतलब यह कि आज से कई सौ हजार साल पहले जवान होगा। मतलब उसके बाल वगैरह उस वक्त काले होंगे और चेहरा कितना खूबसूरत होगा इसका मतलब यह भी निकलता है के कई लाख साल पहले इश्वर बच्चा होगा और जब यह बच्चा हुआ तो ज़रूर इसके माँ बाप शायद बेहन भाई चाचा मामा दादा नाना वगैरह वगैरह इस तरह इन संतो ने इश्वर को पैदा हुवा वा बता ही दिया यानी घूम फिरकर बात वहीं अटकी की इश्वर के शरीर थे माज़अल्लाह इन लोगो की साड़ी दलीले घूम फिरकर इश्वर को अकेला ना कहना इन्हें गुमराही के दलदल में घसीटता है और इस दलदल में यह रहने के आदि हो चुके हैं और इसका फैसला तो अब क़यामत में ही होगा.

बिमारियों की रौशनी निकलती है

नबी – ए- करीम (स.अ) ने सहाबियों को बताया की रौशनीयाँ बहुत किस्म की होती हैं और यह बिमार जिस्मों से निकलकर सेहतमन्द जिस्मों तक पहुँच कर उन्हें भी बिमार कर देती है, लेकिन किसी भी सहाबी ने यह नही पूछा कि यह किस तरह की होती हैं और कैसे निकलती है ? तो आप ने फिर उसका जिक्र ही नही किया।

हजरत इमाम जाफर सादिक (अ.स.) जो कि इमाम थे और सायन्स के माहिर भी। आपने ही आजसे १२०० साल पहले नबी-ए-करीम की रौशनी वाली तहरीर को खुलकर बयान किया। आपके बारे में यह भी कहा जाता है कि आपने अपने मुकाम पर लैब भी बना रखा थी और तहरीर लिखने से पहले खुद प्रॅक्टिकल्स भी किया करते थे।

आपने कहा कि इन्सान के जिस्म में कुछ ऐसी बिमारियाँ हैं जिनसे रौशनी निकलती है और अगर किसी तन्दुरुस्त इन्सान तक यह रौशनी पहुँच जाए तो उसमें भी वैसी बिमारी हो जाती है जैसी बिमारी उस इन्सान में थी। इनका मतलब यह कतई नहीं था की हवा के जरिए यह बिमारियाँ फैलती हैं। हवा से फैलने वाली बिमारियाँ है प्लेग, टी.बी. वायरल फीवर वगैरह – वगैरह। वैसे तो हर बिमारी से रौशनी निकलती है। यहाँ पर रौशनी का मतलब है दिखने वाली शुआएँ (किरणे) लेकिन यह हमारे जिस्म को नुकसान नहीं पहुँचा पाती। जनाब जाफरो सादिक (अ.स.) ने इस रौशनी का नाम **नवाए बनी फशी** रखा और यह भी कहा की यह सिलिकॉन को भी पार कर जाती हैं, लेकिन काँच को नही पार कर पाती।

१८ वी शताब्दी में सायन्स के माहिरों ने हजरत इमाम जाफर सादिक (अ.स) की थीअरि को पढ़ा और समझा फिर इस थीअरि को आजमाने के लिए एक जार सिलिकॉन का लिया और एक जार काँच का लिया और इन दोनों जारो के अन्दर अच्छे और ताजें गोश्त के टुकड़े रखे फिर एक बिमार गोश्त का दुकड़ा इन दोनों के सामने रखा और कुछ देर के बाद काँच के जार के अन्दर रखे टुकडे की जाँच की तो पाया की यह गोश्त के यह गोश्त तो बिलकुल अच्छा है फिर सिलिकॉन के जार में रखे गोश्त के टुकड़े की जांच की गई तो इस गोश्त में वही बीमारी पाई गई जो कि बाहर रखे बिमार गोश्त के टुकड़े में थी। इस प्रक्टिकल से एक बात बिल्कुल साफ हो गयी की यह बिमारी हवा के जरिए नहीं हुई क्योंकि दोनों टुकड़े के जार को एयर टाइट बंद किया था और सिर्फ सिलिकॉन वाले जार का टुकड़ा बिमारी में मुफ्तिला हुआ। इसका मतलब यह हुआ कि यह रौशनी सिलिकॉन को भी पार कर सकती हैं लेकिन काँच को नही पार कर सकती। फिर इन साइंसदानो ने इसकी गहरी छानबीन की और तब कही जाकर इसलामी दानिश्वर की थीअरि को बिल्कुल सही करार दिया और आँखों में होने वाली बिमारी को इसके सुबुत के तौर पर पेश किया कि आँखे मे कंजंक्टिवाइटिस (conjunctivitis) नाम की बिमारी जिससे आँखें लाल और तकलीफ पैदा करती हैं जिसे आँख दुखना कहते हैं यह एक वेव्ह की शक्ल में निकलती हैं जो सामने मौजूद आदमी की आँखों से टकराते ही (आँखों में तस्वीर के बनते ही) फौरन सेहतमन्द आँखों को भी बिमार कर देती है, लेकिन काँच का चश्मा पहनने से इनकी रोक थाम की जाती है क्योंकि बीमार आँखों से निकलने वाली तरंगो की रफ़्तार फोटोन के ज़रिये होती है। फोटॉन इस रौशनी को ले जाने का काम करती है मतलब यह हुआ फोटॉन

कैरियर का काम करते है। अब क्योंकि एलेक्ट्रॉन के चलने के तरीके और फोटॉन के चलने में फर्क होता है और कॉच के अन्दर इलेक्ट्रॉन्स की वेव्ह होरीझोन्टल की तरह चलती रहती हैं जबकि फोटॉन की वेव्ह व्हर्टिकल की शक्ल में चला करती है इसी वजह से आँखों की बिमारी जिसे सायन्सदानों ने कंजंक्टिवाइटिस (conjunctivitis) नाम दिया वह फोटॉन पर बैठकर होरीझोन्टल वेव्ह को पार नही कर पाती।

इस तरह इन्सानी जिस्म में और भी बिमारियाँ हैं उनकी रौशनी निकलकर सेहतमन्द आदमियों को बिमार कर देती हैं। जैसे कि कॅन्सर के रोगी के साथ अगर कोई शख्स चार-पाँच महीने लगातार साथ रहे तो ये रौशनी इस शख्स को भी कॅन्सर की बिमारी से मुब्तिला कर देती है।

पहले के जमाने में इतनी मशीन वगैरह मौजूद न थी कि बिमारिया की जाँच करके उसकी तस्दीक की जाती तो इस्लाम के दानिशवर ने अपनी पारखी आँखों से लोगों को जाँचते रहे और बिना नाड़ी को देखे हुए उनके जिस्म में होने वाली बिमारियों को बता दिया करते थे। अब ये बात बिल्कुल साफ हो गयी कि इन दानिशवरों को किसी भी बीमारी का इल्म बिमारी के अंन्दर से निकलने वाली सभी बिमारियों की रौशनी से ही होता था यह ज़रूरी नहीं है के जिस्म में होनेवाली सभी बीमारियों की रोशनी एक सेहतमंद शक्श को भी बीमार करदे क्युकी हर रौशनी में इतनी ताकत नही हुआ करती।

इस तरह आज कल बहुत सी एंटीबायोटिक दवाइयाँ निकल आई हैं जो कि इन रौशनीयों को कॅट्रोल में रखती हैं जैसे की चेचक ॲन्ट्रीडॉप्ट बच्चों को पहले से ही लगा दिया जाता है। और अब इस की रौशनी और बिमारी दोनों ही कन्ट्रोल में आ गयी। आजकल तो टाईफॉईट और लिवर की बीमारी जिसे हेपाटिटिस – बी कहते है इस के भी व्हैक्सिन्द बन चुके हैं। यह सब इस्लाम के आलासानिश्वर हजरत इमाम जाफर सदिक (अ.स.) की तहरीर पर ही बनाये गये हैं। आजकल एक और बीमारी जिसे ऍडस् कहते हैं और जिसका मतलब होता है लाइलाज बिमारी। यह बहुत तेजी से फैल रही है लेकिन इस बिमारी से निकलने वाली रौशनी इतनी ताकत वर नही होती कि सामने मौजूद शख्स को बीमार कर दे। ऐसे मरीजों से हाथ मिलाने से, बात करने से, उनके पास बैठने से कोई हर्ज नहीं है। लेकिन ऐसे मरीजों का खून दूसरे मरीजों में नही डाला जा सकता है क्योंकि यह वायरस खून में मिल जाता है। इसके अलावा ऐसे मरीज के किसी भी जख्म पर हाथ नही लगाना चाहिए क्योंकि यह वायरस

जिसमें मौजूद है और हमारे जिस्म पर हलका सा भी जख्म है तो आसानी से ये हमारे अन्दर बस जायेगा। ऐसे मरीजों को होठो के जरिए बोसा नही करना चाहिए और ना ही इनके साथ जिसमानी तआलुकात करने चाहिए। यह बिमारी कुछ बरस डपहले ही सामने आई और इसकी वजह भी साऊथ आफ्रिका में रहने वाली आदीवासी औरतें जिन्होने यहाँ के रहने वाले काले बन्दर जिसे गोरिल्ला कहते हैं इनकी जिस्मानी शक्ल सूरत और तरीका इन्सानों जैसा ही है और इसके अलावा जँगली भालू जो कि थोडी बहुत इन्सानों जैसी ही हरकतें करते हैं तो इन आदिवासी औरतो ने इन बन्दरो और भालू के साथ जिस्मानी तआलुकात कायम कर लिए तो इन जानवरों की बीमारी इन औरतों में समा गयी और अब इसी औरत ने दुबारा इन्सान से जिस्मानी तआलुकात कायम किए तो ये बिमारी उस इन्सान को भी लग गई और जब इस इन्सान ने किसी दूसरी औरत से तआलुकात कायम किए तो ये बीमारी उस औरत तक पहुँची। इसके अलावा इन इन्फॅक्टेड औरतों और मर्दो का खून किसी दूसरे इन्सान में चढ़ाया गया इस तरह जानवरों की बिमारी इन्सानों ने ॲडॉप्ट कर ली जिसका नतीजा है आज करोडो लोग इस बीमारी की चपेट में आते रहते हैं जबकि इस्लाम ने पहले ही इन बीमारियों से बचने की हिदायतें जारी की थी कि जब भी किसी दुसरे घर में शादी की बातचीत चलायी जाती तो उसके शजरे देखे जाते थे कि कही कोई किसी अजनबी बीमारी से मरा तो नही, और इसके अलावा अल्लाह के रसूल (स.अ) मुसलमानों को हिदायते दी की शादी आपस में ही किया करो क्योंकि आपस से शादी करने से इस तरह की बिमारियों से बचा जा सकता है क्योंकि लडके और लड़की का चाल चलन घर के बुजूर्गो को अच्छी तरह मालूम रहता है और इसीलिए आपने अपनी बेटी फातिमा ज़ेहरा की शादी अपने चचेरे भाई ह.अली (र.) से की ताकि (र.) की शादी अपने अपनी बेटी ह. फातिमातुज्जोहरा (र.) की शादी अपने चचेरे भाई ह. अली (र. अ) से की ताकि लोगों के लिए रास्ता साफ हो जाए। अल्लाह के नबी (स.अ) ने दूसरों को नसीहत देने से पहले खुद अमल किया। इससे एक बात जाहिर होती है कि आपको इस बात का गैब था कि मुस्ताक्बिल में इस तरह की बिमारियाँ आने वाली है इसीलिए आपने अपनी उम्मत को रिश्तेदारी में ही शादी करने की हिदायत दी और खुद आपने अमल भी किया ताकी लोगों को ऐसा करने में कोई झिझक महसूस न हो।

खुदा के निज़ाम के मुखालिफत करने का अंजाम

अल्लाह तआला ने इन कायनात में जिन चीजों को बनाया उन सब का एक मक्सद है और वही बेहतर जानने वाला है कि इस जमीन को बनाया तो किस मक्सद के तहत् इन आसमानों को बनाया तो उसका भी मक्सद है फिर चाँद को बनाया तो उसका भी कोई मक्सद है और चमकते हुए सूरज को बनाया तो उसका अपना मक्सद है । इसी तरह इस कायनात को तरह-तरह के जानवरों से भर दिया और इन जानवरों में भी इतनी किस्में की आज तक इसकी सही गिनती सायन्सदाँ नही मालूम कर सके। इसी तरह इस कायनात कि खूबसूरती बनाने के लिए एक से बढ़कर एक पेड़ और पौधे उगाए गये, यहाँ तक की इस जमीन को रोकने के लिए उसपर कीले ठोक दीए जो कि पहाड़ो की शक्ल में मौजूद है और इन पहाड़ों से पानी के चश्मे रवां कर दिए ताकि इन्सान और जानवर इनसे फायदा उठा सके और अल्लाह ने इन सबके काम करने का तरीका मुकर्रर कर दिया है, जैसे कि सूरज को हुक्म है कि सुबह को निकले और अपनी रोशनी से मालामाल करे ताकि इन्सान अपना कारोबार करे ताकि अपनी इस जिन्दगी को सही तरीके से चलाने के लिए माल और असबाब कमा सके। हमें जितनी भी रोशनी चाहिए अल्लाह ने उसका इंतज़ाम करदिया है इस रोशनी के अन्दर अल्लाह की सभी मखलूक अपने जीने का सामना तैयार करते रहते हैं और जब उसने देखा की ये इन्सान सुबह के बाद काफी थक चुका होगा तो अब इसको आराम की जरुरत है, इनके लिए मालिक ने रात का इन्तेजाम कर दिया ताकि इसके थके हुए जिस्म को आराम मिल सके। तो इस तरह परवर दिगार ने हमारे लिए क्यों यह खुबसूरत नियमतें अता फर्माई। अब यह दुनियाँवाले अल्लाह की बनाई हुई इस रात और दिन को अपने तरीके से काम में लाना चाहे तो इसका अंजाम क्या होगा? शायद ये नादान इन्सान नहीं समझ रहा है जैसा की मालूम पड़ा हैं कि आजकल सायन्टिस्टस् इस थीअरि पर काम कर रहे हैं कि सूरज से मिलने वाली बारह घंटे की रौशनी हमें चौबीसो घटे मिलती रहे, जिसका मतलब यह होता है कि इस दुनियाँ पर सूरज की रोशनी की मौजूदगी में २४ घंटे कामकाज चलता रहे जिससे की बिजली का इस्तेमाल बहुत कम हो जाए क्योंकि आजकल सोलर इनर्जी से कई तरीको के कामें में इस्तेमाल की जा रही है, इसके लिए इन सायन्सदानों ने दुनियाँ भर के मशहुर और मारुफ सायन्टिस्टस् की एक मिटिंग बुलाई और उसमें यह बात रखी गयी कि किस तरह सूरज से मिलने वाली रोशनी को चौबीसों घंटों इस दुनियाँ में रखा जाए।

सायन्टिस्टस् ने अपनी तरकीबे बयान करना शुरु की और ज्यादातर लोगों ने चाँद को ही चुना कि हमारे इस काम चाँद काफी मददगार हो सकता है।

इन सायन्टिस्टस् के मुताबिक अगर चाँद में बहुत आला किस्म के पालिश किये हुए शिशे रख दिये जाए तो जब सूरज पृथ्वी की ज़द से बहार हो कर चाँद पर इसकी किरणे पड़ेगी तो हमारे लगे हुए शीशे सूरज की रोशनी को रिफ्लेक्ट कर के पृथ्वी पर भेज दिया करेगी और सूरज की रौशनी हमें मिलती रहेगी। इन सायन्टिस्टस् ने अपनी कॉन्सेप्ट तो बना ली और इसकी कामयाबी के लिए अपने – अपने कामों में लग गये कि किस तरकीब से चाँद पर शिशे फिट किये जाएँ कि पूरी की पूरी चाँद से निकलने वाली रौशनी दुनियाँ वालों को मिलती रहे। फिलहाल अभी तक प्रॅक्टिकल किये जा रहे हैं उसी डायरेक्शन में कामयाबी इनके हाथ लगेगी या नहीं खुदा ही बेहतर जाने। इस तरह इन सायन्टिस्टस् की खुदा के निजाम के खिलाफ कोशिश चल रही है। अब हम इस्लाम की उन तहरीरों को देखे जो कुरआन की आयतों में मौजूद है, सूरे यासीन आयत न. ४० पारा नं. २३ में अल्लाह फर्माता है न तो सूरज ही से बन पड़ता है कि चाँद को पकड़ ले और न रात ही दिन से आगे आ सकती है, और हर कोई एक मुकर्रर घेरे में तैर रहा है इसके अलावा कुरआन के पारा न.२७ सूरे रहमान की आयत १६ में अल्लाह फर्माता है और (जाड़े वागर्मी में अलग अलग) सूरज के निकलने की दोनो जगहों का मालिक है और डूबने की दोनों जगहो का मालिक है।

अल्लाह ताआला ने ऊपर की दोनों आयतों से साफ जाहिर कर दिया कि हमने सूरज को किस मक्सद से बनाया और कुरआन में आगे ये भी फर्माया कि चाँद को एक जैसा नहीं रखा और हम उसकी लम्बाई को घटाते बढ़ाते हैं, सिर्फ १३ और १४ तारीख में चाँद एक जैसा ही रहता है। अब अगर हम चाँद पर गौर करें तो जब चान पहले दिन निकलता है तो इतना बारीक होता है के दिखाई नहीं देता दूसरी तारिक को देखे तो बोहत पतला नज़र आता है इसी तरह हरदिन चाँद बढ़ता है और चौदवीं के बाद घटता है और आखरी दो दिन चाँद दिखता ही नही। इस चाँद के बनाने वाले मालिक में कामयाब हो जाएँगे ? कतई नहीं, अब अगर हम यह सोच ले कि चाँद के ऊपर शिशे वगैरह लगा दिए जाए और सूरज की पूरी रौशनी दुनियाँ पर पहुँचने लगे तो कुछ भी फर्क न होगा, क्योंकि इन्सान ने अपने सोने की जगहों को अपने हिसाब से बना रखी है, लिहाजा अगर वह दिन में सोना चाहे तो सो सकते लेकिन अल्लाह की और मखलूक भी तो हैं जिनसे उसका वादा है रिज्क और आराम देने का, जैसे पेड़ और जानवर इन

पेड़ो का क्या हशर होगा अगर चौबीसो घंटे सूरज की रौशनी इस पर पड़ती रहे। जैसे की हम जानते हैं कि पेड़ सूरज से मिलने वाली रौशनी में क्लोरोफिल पैदा किया करते हैं और ऑक्सीजन को बनाते रहते हैं लेकिन रात के वक्त जब सूरज की रोशनी नहीं मिलती तो यही पेड़ कार्बन ड्राईऑक्साइड निकलते हैं ताकि ऑक्सीजन की मौजुदगी हद से ज्यादा न होने पाए। अगर यह पेड़ सूरज की रोशनी में चौबीसों घंटे सिर्फ ऑक्सीजन ही पैदा करते रहे तो इस पृथ्वी पर ऑक्सीजन की तादाद बढ़ जाएगी जिसका नुकसान हमें मालूम है कि हमें प्योर ऑक्सीजन मिलती रही तो इसमें इतनी हीट मौजूद है कि ये हमारे फेफ्डों को जला देगी और जब ऑक्सीजन की तादाद हद से ज्यादा बढ़ जाएगी तो जमीन पर उगने वाले छोटे छोटे पौधों पर बैठ जाएगी जिससे के ज़मीन पर मिलने वाली हरियाली जल कर राख हो जाएगी । वह जानवर जिन्हें रात में आराम की जरुरत पड़ती है उन पर कितना बुरा असर पड़ेगा। इस तरह अल्लाह के निजाम के खिलाफ जाने के नतीजे हमारे सामने मौजूद हैं।

आजकल हम ये गौर कर रहे हैं कि इस दुनियाँ पर आज से तीस साल पहले भूकम्प बहुत कम आया करते थे, लेकिन आज के दौर में हम यह देख रहे हैं कि महीने में एक बार तो कहीं न कहीं जलजला आता है और इन सायन्सदाँ से और जमीन की जानकारी रखने वाले दानिश्वरों की राय ली जाती है कि क्या वजह है कि आजकल इतने भूकम्प क्यों आ रहे है तो इन लोगों ने इसकी वजह बताई कि इस दुनियाँ में आबादी पहले के मुकाबले ज्यादा बढ़ गयी है उसी के हिसाब से जमीन पर बड़ी बड़ी ऊँची – ऊँची इमारतें खडी की जा रही हैं जिससे जमीन पर दबाव बढ़ रहा है और इसी वजह से जलजले वगैरह बराबर आ रहे हैं। अब अगर इनकी बातों पर गौर किया जाए तो बड़ा अटपटा दिखता है कि हम ये जानते हैं कि यह दुनियाँ एक ग्रह है और इसके अलावा भी दूसरे ग्रह हैं जैसे ज्यूपिटर,प्लूटो, मार्स, सॅटन, मर्कयुरी, वगैरह – वगैरह तो दुनियाँ में रहने के लिए बिल्डिंग बनाने का साजा सामान क्या दूसरे ग्रहों से आ रहा है। अगर आप इसकी दलील दें या इस पर हाँ कीजिए तो हम जरुर कह सकते हैं की आबादी के बढ़ने और ऊँची इमारतों को बनाने की वजह से भूकम्प हो सकता है। हमारी इस तहरीर को कोई भी गलत नहीं कह सकता क्योंकि हमने यह देखा जितने भी पेड़ पौधे हैं वे जमीन से उग रहे हैं लेकिन इन पौधों से निकलने वाले फल मिट्टी जैसे नहीं होते। उनके अन्दर मिनरल और अनासिर मौजूद रहते है। अगर हमने किसी पेड़ से तोड़कर सेब खाया जिसका वजन १०० ग्राम था तो सेब का २५ ग्राम हिस्सा हमारे जिस्म में ताकत के काम आया बाकी ७५ ग्राम हिस्सा फुजूला बनकर फुजूलगाह से बैतुलखला में बाहर निकल गया और

फिर ये मिट्टी में मिलकर मिट्टी बन गया। इस तरह पृथ्वी पर ही मौजूद चीजों का हम इस्तेमाल करते हैं और वह आखिरकार फिर मोट्टी में मिल जाता है न तो इस पृथ्वी का वजन बढ़ता है और न ही घटता है।

तो इस तरह जलजले का बढ़ना इनकी दी हुई दलीलों पर खरा नहीं उतरता। अब हम आपको यह बताना चाहते है कि इनकी वजह क्या है ? आजकल सायन्स तरक्की के दौर से गुजर रही है इसीलिए उसने अपने अरांइश की चीजों को चलाने के लिए जमीन के अन्दर मौजूद तेलों को नकिालना शुरु किया और इस जमीन के अन्दर जो गैस भरी है उसको भी अपनी अराईश की जरुरतो के लिए बे हिसाब निकालते जा रहे हैं क्योंकि हम ये जानते हैं कि अल्लाह तआला ने इस दुनियाँ के निचली परतों में गैस छोड़ रखी है जिससे की ये ऊपरी परतों मे मौजूद बोझ को सँभाल सके। जब ये गैस किसी एक हिस्से से ज्यादा निकल जाती है तो वह जगह खाली हो जाती है और खाली जगह को भरने के लिए ऊपरी परतों को नीचे की तरफ घसना पड़ता है, इसीलिए हम देखते हैं कि जब जलजले आते है तो बीस बाविस मंजिलों की बिल्डिग्स् और पूरे के पूरे गाँस मिट्टी में इस तरह मिल जाते हैं कि मानो यहाँ कोई आबादी ही नही थी और इसकी वजह यह है कि कुदरत की भरी हुई इन बॅलन्स सँभाले हुए गैस का जमीन से लगातार निकलते रहना।

अगर इस दुनियाँ में इसी तरह जमीन में मौजूद गैसस् और तेलों को निकला जाता रहा तो वह दिन दूर नही जब इस दुनियाँ के ऊपर सिर्फ पानी ही पानी होगा और लोग मुर्दा पड़े पानी के ऊपर तैर रहे होंगे, क्योंकि इन लोगों ने अल्लाह की बनाई हुई हदों को तोड़ने की कोशिश की है। इसी तरह आज भी बड़ी बड़ी बीमारियाँ अल्लाह के बताए हुए तरीकों के खिलाफ चलने के नतीजा है जैसे की एडस वगैरह, क्योंकि इन्सान अल्लाह के बनाए हुए मुकामों का गलत इस्तेमाल करता है और अल्लाह ने जो तरीके बताये उनपर अमल नही करता। इसलिए जब जब इन्सान अल्लाह के बनाए हुए निजामों के खिलाफ काम करेगा उसका अंजाम भी खतरनाक होगा। सायन्स ने यह सब माना है लेकिन इस्लाम ने ही आने वाली बिमारियों से बचने के लिए १४०० साल पहले ही इससे खबरदार कर दिया था लेकिन यह नादान इन्सान अपने मौज के नशे में भूल गया कि जब कभी भी निजामें खुदा के खिलाफ काम किये जाएँगे तो इसका अंजाम सिर्फ तबाही और बर्बादी है।

इसलिए हमारी यह गुजारिश है इन सायन्टिस्टस् से अगर वाकई आवाम के लिए सुकुन पेश करना चाहते हैं तो जमीन से छेड़ छाड़ न करें और अपनी अराइशो के सामानों को चलाने के लिए एनर्जी के दूसरे जरायत खोजे इसके लिए उन्हे कुरआन में मौजूद आयतों से पूरी मद्द मिलेगी और जो उनकी सोलार एनर्जी की कॅन्सेप्ट है

उसको और गहराई से जाँच करे कि मोटर गाडियों और हवाई जहाजों को चलाने वाली ताकत अल्लाह के बताये हुए सूरज में मौजूद है सिर्फ थोड़ी और मेहनत करने की जरुरत है और वह दिन दूर नही जब की बड़ी – बड़ी मोटर गाडियाँ और हवाई जहाज सूरज की ताकत से चलेंगे।

सायन्टिस्टस् की खोज कुरआन के वजन में

कुरआन के पारा न. २७ के सूरे रहमान में ७८ आयते हैं। इन ७८ आयतों में अल्लाह तआला ने एक आयत को ३१ बार इस्तेमाल किया है, जो इस तरह है फाबीअय्यिआला – ए- रब्बिकुमा तुकज्ज्बान तरजुमा तुम आपने परवरदिगार की कौन – कौन सी निअमतों को झुठलाओगे।

इस सूरे में अल्लाह ने १२ आयतों में अपनी बनायी हुई नेअमतों का जिक्र किया और १३ वी आयत में कहा तुम अपने परवरदिगार की कौन – कौन सी नेअमतो को झुठलओगे, फिर १६ वीं, १८ वीं, २१ वीं, २३ वीं, २५ वीं, २८वीं, ३० वीं, ३२ वीं और फिर हर दूसरी आयत में इसी आयत का जिक्र आया। हम कह सकते हैं कि लगातार एक के बाद दूसरे का जिक्र आता गया तो हम यह बताने की कोशिश कर रहे है कि इसकी वजह क्या हो सकती है और क्या जिन चीजों को अल्लाह पाक बना चुका है तो क्या ये (अपने को तरक्की आफ्त दुनिया वाले) इसकी नकल भी सही तरीके से कर सकते हैं या नहीं ? इसके लिए हम सबसे पहले अल्लाह उस कीड़े का ज़िक्र करते हैं जिसे अल्लाह ने ऑक्सीजन से सीधे तौर से जोड़कर हवा में उडती हुई इमर्जन्सी लाइक बनाई जिसे हम जुगनू कहते हैं। सायन्सदाँ ने कहा हॉ हमने पवन चक्की (जोकी हवा से चलती है) बनाई है। अब हम इस मशीन के बारे में बताते है, इस मशीन में खुली हवा में एक पंखा लग रहता है और इस पंखे से एक छेड़ा चाकरी के ज़रिये

जुडी रहती है और छेड़े का निचला हिस्सा डायनमो से जुडा रहता है और डायनमो का वायर बाहर निकलते हुए एक सर्किट को पूरा करता है। अब जैसे ही ये पंखा हवा के चलने पर घुमता है तो छड़ भी घूमती है और डायनमो जो इससे अॅटॅच है वह घूमने लगता है और मेग्नेटिक फील्ड पैदा करता है। इस फील्ड का कनेक्शन तारों से किया जाता है ताकि पैदा हुई बिजली तारों के जरिए सॅर्केट में पहुँच जाए। इस तरह जुगनू की नकल से पवन चककी बनाई गयी। जुगनू जब चाहे जहाँ उडता रहे और अपनी रौशनी बिखेरता रहे जब कि पवन चक्की एक जगह पर फिक्स रहती है और इसके अलावा जुगनू से निकलने वाली रौशनी डायरेक्ट ऑक्सीजन से लेती है और पलों के अन्दर रौशनी की शक्ल में अफने पिछले हिस्से के जरिए निकलती रहती है और अगर अब इन सायन्सदाँ की जुगनू थीअरि को देखें तो इन के हिसाब से जुगनू ऑक्सीजन लेने के बाद अपने पेट के मुकाम के पास मौजूद थैली से रोशनी निकलती है और ये भी बताया कि इस थैली के अन्दर रेडियम मौजूद है। हम सब ये जानते है कि कोई भी जानदार चीज ऑक्सीजन को अपने फेफड़ो में लेती है और फेफड़ोसे पेट का कोई कनेक्शन नही मिलता तो फिर यह कैसे मुमिकिन है कि ऑक्सीजन पेट में पहुँचे। यह थीअरि गलत है। अल्लाह तआला ने अपनी इस मखलूक को एक अनोखे स्विच के जरिए ऑक्सिजन की सप्लाई अता की है जब जूगनू अपने फेफडो में ऑक्सीजन लेता है और रेडियम इससे मवाद की शकल में मौजूद रहता है जैसे ही फेफड़े में ऑक्सीजन आयी तो फेफडा फूल गया और फूलने के बाद ये अपने दोनों तरफ मौजूद टयुब के किनारो से जुड जाता है इस टयुब के अन्दर मवाद भरा रहता है जिसमे रेडियम मौजूद रहता है इस टयुब में छेड़ होते हैं, जब फेफड़ो की ऑकडसीजन इन छड़ो से होते हुए बाहर निकल जाती है तो इस टयूब में पहुँचकर ये रौशनी पैदा करती है,इस तरह इस कीड़े के अन्दर अल्लाह ने हवा के जरिए एक स्विच बना रखा है जो कि हमेशा चौबीस घंटे और उसके हर मिनट के हर सेकण्ड में रवाँ रहता है उसको समझने के लिए एक से लेकर तीन तसवीरें दिखा रहे हैं किस तरह ये रिअेक्शन पूरा होता है।

इस तरह जुगनू की मॅकॅनिजम् में फेफडा स्विच का काम कर रहा है जो सीधे ऑक्सीजन से ऑन ऑफ हो रहा है। अभी तक दुनियाँ वाले इस तरह का स्विच नहीं बना सके हैं इसलिए कुरआन में अल्लाह का ये कहना की कौन – कौन सी नेअमतो को झुठालाओगें बिलकुल सही है। इन सायन्सदाने ने आँखो की तरकीब पर कॅमेरे को ऐजाद किया। जैसा की हम जानते है कॅमेरे के अन्दर जब भी रील में फोटो उतारे जाते है तो वह फोटो हमेशा

उलटे बनते हैं और बादमें उनको मशीनों के जरिए सीधे फोटो तैयार करते हैं और ये कहते है कि आँखों में रेटीना के ऊपर उलटे चेहरे बनते हैं और बादमें उसे दिमाग से मिलने वाले मॅसेज सीधा करते हैं। जबकि हम जानते हैं आँखों के कॅमरे की रौशनी घट्ती और बढ़ती रहने के हिसाब से ऑटमॉटिक अैड़जस्टमेन्ट पर रहते हैं। जबकि इनके लाखों रुपयो के कॅमरों में भी ये ऑटोमॅटिक लेन्स नहीं लगा सके। जब कि आँख जो हमारा कैमरा है वोह एक ही लेंस का है और उसके अन्दर रोशनी के हिसाब से घटने बढ़ने का सिस्टम मौजूद है जब की हमारी आँख में जो फोटो बनती है वो दिमाग में मौजूद रील में शीधी उतरती है और रेटीना पर पलों के अन्दर लाईव टेलीकास्ट कर देती है अगर सायन्टिस्टस् की यह थीअरि माने की हमारे दिमाग की रील में उलटी तस्वीरे बनती है तो फिर ऐसा क्यों नही होता कि हमारे मेमरी बॉक्स में कोई भी बात जब भर जाती है तो हम उसे सीधा ही क्यों बयान करते है उलटा क्यों नहीं, इनके अलावा कॅमेरे में रील तो बदलनी पड़ती है जबकि हमारे दिमाग में भरी रील सिर्फ एक बार भरी जाती है बार बार नहीं, तो हे इन्सान क्या तुम में हैं इतना दम कि ऐसा कॅमेरा बना सको जिसमें सिर्फ एक ही बार रील भरी जाये? हमने ये भी देखा है कि अक्सर लोग अपनी जिन्दगी में अपनी आँखों को दान कर दिया करते हैं, इसके अलावा और कोई जिस्मानी हिस्से दान नहीं कर सकते वह इसलिए कि आँखों को छोड़कर जिस्म के बाकी हिस्सों में खून की सप्लाई सीधे तौर पर की जाती है। इसलिए जैसे ही किसी इन्सान की मौत हो जाती है तो कुछ देरके अन्दर खून फट कर जम जाता है और जिस्म के उन जरुरी हिस्से जैसे दिल, फेफड़े, गुर्दे, दिमाग की नालियाँ जाम हो जाती हैं, आँखों में खून की सप्लाई नहीं होती इसलिए मरने के ३ घंटे बाद भी यह दूसरे इन्सान के काम आती है और अगर मरने वाले की आँखों पर ठण्ड़ा कडड़ा रख दे तो यह ६ घंटे तक खराब नहीं होती। हमने यह देखा है कि साँप की आँखो में मारने वाले की तस्वीर खिच जाती है और अगर १५-२० मिनट के अन्दर उसका साथी साँप पहुँच जाए तो वही तस्वीर वह अपनी आँखों में कैद कर लेता है और ढूँढ कर उस इन्सान को मारने की कोशिश करता है, इसीलिए साँप को मारने के बाद उसकी आँखों को जला दिया जाता करते हैं। इसी तरह अगर इन्सान का किसी दूसरे इन्सान ने कत्ल कर दिया है तो उस कातिल की तस्वीर मरने वाले की आँखों में खिंच जाती है अगर हमारे सायन्सदाँ इस पर अपना वक्त खर्च करे की कौनसा ऐसा मशीन बनायी काएँ ताकि कत्ल हुए इन्सान की आँखो से कातिल की मौजूद तस्वीर हासिल की जा सके लेकिन यह अभी इनके बस की बात नही। लेकिन मुस्तक्बिल में ऐसी मशीन बनेगी। हमने यह भी देखा की जैसे ही किसी इन्सान का कत्ल हो जाता है उस जगह पर अलॅलाह की बनाई हुई मख्खी सबसे पहले पहुँचती

है यानि यह अल्लाह के कितने माहिर जासूस है कि उनको सबसे पहले खबर पहुँचती है है इन नारुक इन्सानों के बस की बात की वह भी इतने माहिर जासूस बना सके ? नहीं । इसलिए कुरआन में अल्लाह का कहना कौन-कौन सी नेअमतों को झुठलाओंगे ? ऐ इन्सान कितना सही अल्लाह ने फर्माया है। कहते हैं कि हमने हॅलीकॉप्टर बनाया और उसकी मिसल देते है भमेरी का कि जिस तरह भमेरी हवा में रुकी रहती है और पंख फड़फड़ाती है लेकिन यह नकल भी सही नाकर सके क्योंकि भमेरी के पर बाजुओ में होते है जबकि हॅलीकॉप्टर के पंख पीठ पर हो कर गोल-गोल घूमते है इसलिए यह बात भी दुरुस्त नहीं।

चमगादड की मिसाल रड़ार से देते हैं जब कि रड़ार नीचे उडने वाले जहाजों को कैच नहीं कर पाता, जबकी चमगादड़ को एक बंद कमरे में रखा जाए और उस कमरे में धागे से सैंकड़ो बार जाल बनादे लेकिन एक बार भी चमगादड़ उन धोगो के जाल में न फंस सकेगा, जबकि चमगादड की आँखे नही होती है वह अपनी रौशनी फेकता है और जैसे ही कुछ रुकावट आडे आती है तो माइक्रो सेकण्ड़ के अन्दर वह रौशनी पलटकर वापस आ जाती है जिससे मालूम हो जाता है कि आगे रास्ता बन्द है और कभी भी वह रुकावटों से नहीं टकराता। अगर बनाना है तो ऐसी मशीने (रड़ार) बनाओ तो जाने, जो खुद बखुद दुश्मन के प्लेन को देखते ही अॅटेक कर दे। जब हुमायुँ के घर अकबर पैदा हुए तो खुशी के मारो हुमायुँ ने लोगों को हिरन की कस्तूरी बाँटी ताकि इस कस्तूरी की तरह अकबर की खुश्बू फैले लेकिन वह भूल गया कि जिस कस्तुरी को इतनी कीमती समझ रहा है वह तो हमारे रब ने गन्दे खून से बनाई, वाह इस गन्दगी को इतना आला समझा इन्सान अपने लुत्फ की सबसे अच्छी चीज औरत के हैज के मुकाम को कहता है जबकि यह औरत की सबसे गन्दी चीज है। ऐ इन्सान वाकई तू ना समझा है और कब तक तू अपने परवर दीगार की नेअमतों को झुठलायेगा कब तक ?

दुनियाँ वाले अपने को बड़ा अक्लमंद और तरक्की आफता कहते हैं तो बना ले अपने लुफ्त के लिए कोई और चीज जो औरत से बेहतर हो । कभी भी यह इसमे कामताब नही हो सकते चाहे दुनियाकी उम्र लाखो साल ही क्यों न हो लेकिन अल्लाह की नेअमतो की ना तो बराबरी ही कर सकते है और ना ही इससे बेहतर, तब ही तो अल्लाह ने इस सूरे में बार बार यही कहा कि अपने परवर दिगार की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओंगे।

आज के सायन्सदाँ दम यह भरते है कि हमने भी आज वह जहाज तैयार कर रखे हैं जो समन्दर की सतह पर चल सकते है और सतह के नीचे भी और समन्दरी रास्तो को बखूबी समझते हैं और कहते है कि हमने कितनी

बड़ी ऐजाद कर दी लेकिन वह भूल गये कि जिस तरह पानी के अन्दर चलने वाली मशीन पर इतरा रहे हैं वह तो अल्लाह तआला ने आज से तकरीबन ५० हजार साल पहले एक नायाब मशीन मछली की शक्ल में बनाकर ह. युनुस (अ.स) को सवार करके समन्दर की पूरी मखलीफ का दीदार करवाया। वाकिया कुछ इस तरह है कि जब अल्लाह के भेजे हुए पैगम्बर ह. युनुस (अ.स.) अपनी कौम की बुराईयों से परेशान हो गये तो आप अपनी कौम को बद्दुआ देकर शहर छोडने के इरादे से एक नाव पर सवार हो गये। जब यह नाव समन्दर के बीच पहुँची तो भवर में फँस गयी तब नाविक ने कहा की लगता है नाव का वजन एक शख्स की वजह से बढ़ गया लिहाजा अगर एक शख्स इसमें से उतार दिया जाए तो बाकी लोगो की जान बच सकती है। अब सवाल यह था कि कुर्बानी कौन दे, कोई भी इसके लिए तैयार नहीं था लिहाजा सबकी राय से कुर्रा डाला गया और यह कुर्रा ह. युनुस (अ.स.) के नाम का था लिहाजा उन्हें समन्दर में फेंक दिया गया।

अल्लाह ने एक बड़ी मछली को हुक्म दिया की इस बन्दे को अपने पेट में कैद कर लो और खबरदार अगर इसको अपनी गिजा (खुराक) बनाया और तुम (मछली) इसे (ह. युनुस) (अ.स) हमारी समन्दर की दुनियाँ की सैर करवाओ और इस तरह ह. यनुस (अ.स.) ने अपन` रब की समन्दरी कायनात देखकर अल्लाह से माफी माँगी और अल्लाह तआला ने आपको मुआफ कर दिया और मछली ने ह. यनुस (अ.स.) को समन्दर के किनारे छोड़ दिया (उगल दिया)

इस तरह इन ना शुक्रे इन्सानो से बेहतर मशीन अल्लाह पहले ही बना चुका है अगर वाकई यह इस तरह की पनडुब्बी बना ले तो यह इल्म कुरआन में पहले ही बताया जा चुका है।

अल्लाह तआला ने इन बन्दों के लिए एक से बढ़कर एक गिजा बनाई चाहे वह सांग सबजी हो या बैहतरीन जानवरों और परिन्दों का गोश्त और दुधारु जानवरों का दूध जो कि हमारे जीने की जरुरी गिजाएँ है। क्या इन्सान इनके मुकाबले में अपने इल्म का इस्तेमाल करके कुछ भी पैदा कर सकता हैं ? जवाब है नहीं, फिर किस बात पर ये इतनी अकड दिखाता है तु हमारे परवरदिगार की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाऐगा कुरआन की इस सूरे ने यह साबित किया की इन्सान आजतक इल्मे कुरआन से पीछे है और पीछे रहेगा क्योंकि इतनी तरक्की करने के बावजूद आजतक कुरआन में छिपे हुए इल्मों का १ % भी इस्तेमाल नहीं कर पाया है।

आज का इन्सान बड़े- बड़े दावे कर रहा है और इन्ही दावों के सिलसिले में एक नई ऐजाद को नुमाया करने वाला है कि जिस पेड़ को कुदरत सालों (बरसों) के बाद तैयार कर सकती है उसे आज के सायन्टिस्टस् ७ ही दीनों में

तैयार कर सकते है क्योंकि आज इन्होने इतना इल्म हासिल कर लिया है कि एक तैयार पेड़ की बीज के बोने से लेकर फल आने तक का कुल वक्त गिन लिया और वक्त तक मिलने वाली कुल सूरज की रौशनी पानी और मिट्टी में मौजूद कुल अनासिरों की तादाद की जानकारी हासिल करके सालों में तैयार होने वाले पेड़ों को एक साथ यह सभी चीजों मुहय्या करके महीनों मे पेड़ से फल निकाल सकते हैं अभी तक यह कामयाब नहीं हो पाये हैं, लेकिन आने वाले सालों में यह काम होना मुम्किन हो जायेगा तब यह इन्सान अपनी ऐजाद का नाम देकर कहेगा की जो पेड़ और फल कुदरत सालों में तैयार करती थी हमने उसे महीनों में ही पैदा फर्मा दिया, लेकिन यह भूल रहा है कि अल्लाह तआला ये काम पहले ही आज से तकरीबन २००० साल पहले ही कर चुका है और कुरआन गवाह है पारा न. १६ में सूरे मरियम की आयत न.२२ से २६ में इस तरह है ह. मरियम अ.स. बच्चे की विलादत के लिए मैदान में लगे एक सूखे खजूर के पेड़ की जड़ से ठेका लगा कर बैठ जाती हैं और कुछ ही पलो में इस सूखे खजूर के तने से बड़ी बड़ी शाखाऐ निकलना शूरु हो जाती है जो कि जमीन की तरफ झूककर ह. मरियम(अ।स.) को घेर लेती है और उसमें खजूरें निकल आती है जिसे खा कर आप गुजारा करती है इस तरह यह इन्सान अपने परवर दिगार की कौन-कौन सी नेअमतों को झुठलायेगा।

आज के दौर में बाँझ औरतों के लिए सायन्स के माहिरों नें एक नई तकनीक के जरिए बाँझ औरत को भी माँ का दर्जा दिलवा देते हैं। इस तकनीक के जरिए औरत और मर्द के अंड़ो को हासिल करके उन्हें टेस्ट टयूब में रखा जाता है फिर इस टेस्ट टयूब को एक खास टेम्प्रेचर पर रखकर फर्टिलाइज किया जाता है, फिर इस फर्टिलाइज्ड़ अंड़े को माँ की बच्चेदानी में रख दिया जाता है और फिर ये एक बच्चे की शक्ल अख्तियार करके ९ महीने के अन्दर दुनियाँ में तशरीफ लाता है इस तरह एक बाँझ औरत भी माँ बन गयी इस तकनीक का नाम रखा टेस्टयुब बेबी।

अब हम आपको यह बताते हैं कि अल्लाह की किस मखलूक को देखकर यह नकल की गई है और हम आपको यह बताएँगे की इन सायन्सदाँनो की यह नकल भी अधुरी रही। अगर आपने मधुमख्खी को और उसके बच्चे को देखा हो तो सही है नही तो हम बयान करते हैं मधुमख्खी अपने छत्ते को हेक्सागॉन की शक्ल में तैयार करती है और इस छत्ते की हर सेल लम्बाई, चौड़ाई और गहराई में बराबर की बनी होती है। यह एक तरह की टेस्ट टयूब है जो गोलाकर न हो षटकोन (६ कोने) की होती है, मधुमख्खी अपनी सँड से फूलो और फलों का रस चूसती है, ये रस इसके पेट में पहुँचने के बाद पेट में मौजूद कुछ दूसरेऑसिडस में मिलकर रिअेक्शन करता है जिनकी वजह से यह उल्टी की शक्ल में मुँह के बाहर निकलते वक्त शहद की शक्ल अख्तियार किए हुए होता हैं। जब

यह छत्ता शहद से भर चुका होता है तो रानी नाम की मख्खी इस छत्ते में अंड़े देती है। फिर छत्ते की सभी छेदो को मोम से सील कर दिया जाता है। अब यह अंड़े बच्चे में बदल जाते हैं और सवाल अब यह उठता है की इन एअर टाइट सेल्स में परवरिश पा रहे बच्चे अक्सीजन कैसे लेते है ? इनकी सेल्स में चर्बी मौजूद होती है यह चर्बी सेल्स में मौजूद ऑसिड से रिअेक्शन करते है और चर्बी को ऑक्सीजन और कार्बोहाइड्रेड़ में बदल देते है इसके अलावा बच्चे मौजूद शहद को खाकर बड़े होते है और जब बच्चे बड़े हो जाते है तो अपने सेल्स से बाहर निकल कर फिजा में परवाज करते हैं।

इस तरह अल्लाह तआला हजारों लाखों साल पहले ही टेस्ट टयूब बेबी की तकनीक बता चुका है जो कि कमॅप्लीट तहरीर है लेकिन सायन्सदाँ को फर्टिलाइज्ड़ अंडो को वापस माँ के बच्चे दानी में डालना पड़ता है जब की मधुमख्खी में ऐसा नही होता। अल्लाह की तकनीक कितनी कासगार है और अेडव्हान्स जबकी सायन्सदानों की तकनीक आज भी ओल्ड मॉडल पर चल रही है। अगर टेस्ट टयुब बेबी की सही तकनीक बनानी है तो अल्लाह के मॉडल की नकल कर के बताओ तो समझे की सायन्स ने नकल ही सही, कुछ तो कर के दिखाया और कहा जाए की कुरआन के इल्म के करीब तो पहुँचे, लेकिन यह इन्सान ना शुक्र है और देखने के बावजूद अल्लाह की नेअमतो को झूठला रहा है। आज दुनियाँ के हर गोशे में शहद का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल, बिमारियाँ और दवाइयों को बनाने में किया जाता है और इसको बड़े शान से खाया जाता है लेकिनइस शहद का मिआर देखा किसी ? कि वह तो अल्लाह तआला की एक छोटी सी मखलीक की उलटी है जिसको अल्लाह ने इन्सानी फायदो के लिए तैयार किया ताकि बिमारी के हालात में इसका (शहद) इस्तेमाल कर के इन्सान सेहतमन्द हो लेकिन फिर भी यह जमीन पर इतराने वाला अपने को तरक्की आफता कहने वाला इन्सान आज तक अल्लाह तआला की नेअमतो को झुठला रहा है।

आजकल एक और तकनीक बनाई है इन सायन्स्दानों ने कि अपने जिस्म को टेकडनीकली तौर से कसरत और दवाईयाँ खाकर इतना ताकत वर कर लेते हैं कि अपने वजन से दो से तीन गुना ज्यादा वजन उठा सकता है और इसी तक्नीक की बदौलत सायन्सदानों ने बाला कुप्पी (क्रेन) की एजाद की जो की अपने वजन से ढाई तीन गुना ज्यादा वजन उठा सकती है और इसके लिए एक बोहत लम्बा पाइप लगा होता है होता है जो पहले सीधा खडा होता है और अपने से ज्यादा वजन को उठाकर एक जगह से दुसरी जगह रखता है और अपनी ऐजाद पर इतना इतरा रहा है लेकिन इसने यह नही देखा की अल्लाह तआला ने पहले हि अपनी एक मखलूक को बाला कुप्पी की शक्ल देकर कई गूना ज्यादा वजन उठाने वाला बना चुका है और इसकी मिसाल है चिँटी जिसके आगे के एँटीने

जो कि दोनो बाजुओं से जुडे होते है और अपने वजन से ५० गुना ज्यादा वजन उठा लेती है। इसीलिए कहा गया है कि इन्सान अल्लाह तआला की इन नेअमतों को देख चुकने के बावजुद उसकी सही नकल नहीं कर पाया और क्रेन को बनाकर अपने को भड़ा अक्लमन्स समझ रहा है। इनकी बनाई हुई क्रेन सिर्फ आगे, पीछे, दाँए और बाएँ ही घूम फिर सकती है जबकि अल्लाह की बनाई हुई क्रेन अपने से ५० गुना ज्यादा वजन लेकर दीवारो, पहाड़ो, पेड़ों पर चढ़ सकती है और उतर सकती है।

अल्लाह की बनाई हुई क्रेन कितनी अेडव्हान्स है फिर भी यह नाशुक्र इन्सान समझ नहीं सकता और अल्लाह की बनाई हुई नेअमतों की नकाल को अपनी ऐजाद का नाम दे रहा है। इसीलिए कुरआन में सूरे रहमान की इस आयत (कोड़) कब तक झुठलाओगे अल्लाह की नेअमतो को अल्लाह तआला ने इसीलिए बार बार इस्तेमाल किया है ताकि इन्सान सही रास्ता और सीधे रास्ते पर चले।

लोग सवाल करते हैं कि अंड़ा जो की कॉल्सियम कॉर्बोनेट के से बना होता है तो उसके अन्दर विकसित हो रहे बच्चे को ऑक्सीजन कैसे मिलती है? अंड़े में मौजूद अेलब्यूमिन (सफेदी) में फॅट (चर्बी) मौजूद रहती है और यही चर्बी केमिकल रिएक्शन करके कार्बोहाइड्रेड़ और ऑक्सीजन पैदा करते है कार्बोहायड्रेट इसका आहार बनती है और ऑक्सीजन सांस लेने में काम आती है । इसी तरह सर्दी के मौसम में मढ़क और छिपकली छ:छ: महीने तक छिप- जाते है, मैढ़क तो जमीन के नीचे देढ़ दो मीटर नीचे रहता है तो इसे भी चर्बी होने वाली रिशेक्शन की बदौलत ऑक्सीजन और कॉर्बोहाइड्रेड मिलता रहता है। इस पर एक सवाल किया जा सकता है कि मेढ़क तो मिट्टी के नीचे पड़ा रहता है उसका दिमाग बेहोश रहता है, वह कोई काम वगैराह नही करता है तो अब हम ऊँट को लेते है जो कि रेगस्तिान में रहता है १५-१५ दिनों तक उसे पानी नहीं मिलता लेकिन फिर भी जिन्दा रहता है और चलता फिरता भी बराबर है। लोगों का ऐसा कहना है कि ऊँट के अन्द एक पानी की थैली होती है जिसमे वज पानी स्टोअर कर लेता है और तकरीबन १० से १५ लीटर पानी एक बार में पीता है और आगे यह भी कहना है कि यही पानी १५ दिन तक चलता है और अकसर रेगिस्तान में जब इन्सान को पानी नही मिलता तो ऊँट की पानी की थैली पर वार करके पानी निकाल कर इन्सान अपनी जान बचाता है। लेकिन यह थीअरि गलत है, हाँ पानी मिल सकता है अगर ऊँट ने एक या दो दिन पहले ही पानी पिया हो। लेकिन अगर इससे ज्यादा चार पाँच दिन हो चुके हो तो पानी नहीं मिलता। अब सवाल यह उठता है कि फिर ऊँट को पानी कहाँ से मिलता है जो बिना पानी के १५ दिन तक चलता फिरता रहता है? इसका जवाब भी वही है कि ऊँट की पीठ पर एक उभार

रहता है। यह अगर चर्बी से भरा होता है और जब ऊँट को पानी की जरुरत पड़ती है तो यह चर्बी केमिकल रिएक्शन करके पानी और कार्बोहाइड्रेड़ पैदा करते है जो कि ऊँट के काम आती है लेकिन फिर एक सवाल खड़ा होता है के ऊंट को आहार तो मिल जाता है तो फिर कार्बोहाइड्रेड़ किस काम आती है ? रैगिस्तान इलाकों में एक और जानवर मिलता है जिसे दुम्बा कहते जब इसके दुम के निचले हिस्से में मौजूद सैको में चर्बी जमा हो जाती है तो यह खाना बन्द कर देता है। अब चर्बी मे ंहोने वाली रिअक्शन से पैदा हुआ पानी और काबोहाइड्रेड़ का इस्तेमाल करता है तो अब हमारा यह कहना है कि सायन्सादानों इन्सानी जिस्म में मौजूद चर्बी को क्यों नही काम में लाते ताकि मुशकिल जगहों पर चर्बी का सही इस्तेमाल किया जाए तो कितनी अच्छी बात होगी लेकिन आने वाले वक्त में यह मुम्किन है कि सायन्सदाँ नकल करने में कामयाब हो जाए।

हमने अल्लाह की इस नेअमत को भी देखा फिर भी उस रब्बुल आलमीन का शुक्रिया अदा नहीं करते तब ही तो खुदा फर्माता है कि तुम अपने परवरदिगार की कौन – कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे कुरआन की इस सूरे ने क्या ही खूब फर्माया है, सुबहानल्लाह!

आज के इन्सान बड़े-बड़े दावे करते है कि हमने एक ऐसी मशीन तैयार की है जो कोई भी पेपर या फोटो मशीन के जरिए एक मुल्क से दूसरे मुल्क कुछ ही मिनटों में भेज देते हैं, उसकी शक्ल व शूरत में कोई तब्दीली नही आती और अपनी इस ऐजाद का नाम रखा फॅक्स, लेकिन हमने देखा कि मशीन से ओरिजिनल पेपर तो नही पहुँचता वह तो यही मौजूद रहता है सिर्फ उसकी झेरोक्स ही पहुँचती है और अक्सर काफी वक्त लग जाता है,., फॅक्स करने में कभी टेलीफोन की लाइन नहीं मिलती तो कभी सही शक्ल फैक्स नहीं पोहंचाता तो दुबारा या तिबारा फैक्स करना पड़ता है पड़ता है लेकिन खुदा ने यह करिशमा आज से १४०० साल पहले ही कर दिखाया जब अल्लाह ने नबी – ए- करीम (स.अ) को फॅक्स की तर्ज पर कुछ ही पलों में अर्श पर बुला लिया और वह भी ओरिजिनल् अपने हबीब को ना की झेराृक्स की शक्ल में उनकी रुह का फॅक्स करवाया और जब अल्लाह पाक अपने हबीब को देख चुके और बातें कर चुके तो पलों के अन्दर उनको वापस अपने मुकाम पर भेज दिया उसी कण्डीशन में जिस कण्डीशन में उठाया था। अब आप खुद ही तय करे की कुरआन में मौजूद इल्म आला है या ये जो कर रहे हैं और कुरआन और अल्लाह से बढ़कर दावे कर रहे हैं। अब अगर यह सयन्सदाँ अल्लाह की तरह बनाए फॅक्स की नकल कर सके तो समझे कि जिस तरह अल्लाह के फॅक्स से ओरिजिनल डॉक्यूमेन्टस भेजे

गये और फिर ओरिजनल शक्ल में डॉक्युमेन्टस् वापस भेज गये और ऐसी लाइनों से कन्टेकट करे जो कभी एगेज ना हो। इस सदी मे ंतो यह नामुम्किन है, लेकिन आने वाली सदियों में एजाद कर सकता है लेकिन पहले अल्लाह के बताए हुए सीधे रास्ते पर चले और अल्लाह की नेअमतों का शुक्रिया अदा करे और खुदा पर ही कनाअत रखे तो जिस तरह दूसरी चीजे अल्लाह ने इन्सान के अख्तियार में दे रखी है उसी तरह अल्लाह पाक ये भी इन्सान के बस में कर देगा।

आज दावा इस बात का हो रहा है कि हमने खुफिया तौर पर छूपाई गयी चीजे जैसे असलाह, बारुद वगैरह को ढूँढ़ लेने वाली मशीन ऐजाद की है लेकिन अल्लाह तआला पहले ही हजारों साल पहले कुत्ते में वह सिस्टम भर चुका है जो कि मशीनों से बेहतर काम करता है यहाँ तक की अगर सेकड़ो फिट नीचे कोई इन्सान दबा है तो भी अल्लाह की यह मखलीक पता कर लेती है और कुत्ते की पहचान कभी गलत नहीं होती जबकि इन्सान मशीनो को चक्मा देकर असलाह और बारुद को पार कर जाते हैं तो अल्लाह तआला की बनाई हुई नेअमतों से यह क्या मुकाबला करेंगे।

आज का इन्सान एक और मशीन की ऐजाद में लगा हुआ है कि किस तरह ऐसी मशीन बनाई जाए जो कि भूकम्प के आने के पहले खबर दे सके लेकिन अभी तक सिर्फ कोशिश ही कर रहे हैं लेकिन यह कोशिश नाकाम ही रहेगी, क्योंकि यह अल्लाह के उन लातादाद हाथियारों में से है जिसका कोई सानी नहीं और उन नाफरमान कौमो के लिए है जो कि अल्लाह और उसकी रहमतो को झुठलाते थे और कलयामत के दिन को झूठा कहकर हँसते थे और लोगों को बहकाते थे। लेकिन अल्लाह पाक ने भूकम्प आने के पहले सचेत करने का सिस्टम परिन्दो और कुत्तो में दे रखा है जैसे की हमने देखा की जब जलजला आने वाला होता है तो परिन्दे अपने पर फड़फड़ा के भूकम्प की खबर दे रहे होते हैं और इसी तरह कुत्ते आसमान की तरफ मुँह करके रोने के अन्दाज में आवाजे निकालते हैं।

मेरे साथ भी यह हादसा हुआ और वह इस तरह है मैं गहरी नींद में सो रहा था अचानक मेरे घर में पालतू चिडियाँ जिसको लाल कहते हैं जो कि एक पिंजरे में कैद थी और उनकी तादाद तकरीबन १२ थी इनके फडफडाने की आवाजें आने लगी और मेरी नींद टूट गयी। मैं समझा की शायद बिल्ली कमरे में घुस आयी है जिसे देखकर इनमें डर आ गया है, लेकिन मैने देखा कमरा अन्दर से बन्द है फिर बिल्ली अन्दर कैसे आ सकती है इसी दरमियान मैने देखा कि मेरा बेड हिलने लगा और पास रखी हुई चीजें भी हिलने लगी और तकरीबन ५-६ सेकण्ड ऐसा

हुआ और फिर बन्द हो गया। इसके बाद घर सभी लोग घबरा कर उठ गए और हमारे पास के घरो से भी लोग अपने घरों से बाहर निकल-निकल कर रोड पर जमा होने लगे और सब यही कह रहे थे, अल्लाह रहम करे, जलजला (भूकम्प) आया था, और फिर इसकी तसदीक ऑल इन्डिया रेडियो ने की ५.४ तीब्रता का भूकम्प आया था। इस तरह हमने देखा की अल्लाह पाक ने अपने जानवरों और परिन्दों में भूकम्प को परखने की कुवत दे रखी है। या इसे हम इस तरह भी कह सकते हैं कि भूकम्प के आने के पहले ही या भूकम्प आने वाला है इससे आगाह करने वाली इस तरह की कोई चिप्स इन परिन्दो और जानवरों में खुदा ने लगा रखी है ताकि ये बेगुनाह परिन्दे और जानवर अपनी जगहों को छोड़कर किसी महफुज जगह पर पहुँच जाए और सिर्फ अल्लाह की ना फरमानी करने वाली कौम ही इसका मजा चखें।

हाँ आज के दौर में सायन्सदानों ने इस भूकम्प की तीव्रता नापने वाली मशीनें बना ली है जिसे रिअेकटर स्केल कहते हैं। उसका काम है आए हुए भूकम्प की तीव्रता दर्ज करना लेकिन यह भी माकूल नही है क्योंकि अभी जब २६ जनवरी २००१ में गुजरात में जो भूकम्प आया था उसकी तीव्रता अलग-अलग दिखाई पड़ रही थी जैसे की जापान में मौजूद स्केल पर ८.३ का माप बता रहा था और भारत का स्केल ७.८ का माप बता रहा था। इस तरह इनकी बनाई हुई मशीनों में भी सही जानकारी देने की कुवत नहीं है और दावे कर रहे हैं कि हमारा इल्म कुदरत से अच्छा है माज अल्लाह !आज के दौर में सायन्सादानों ने मौसम और बारिश की जानकारी हासिल करने के लिहाज से करोड़ों रुपयों की लागत से तैयार किए गये सॅटेलाइट को खलाँ (स्पेस) में भेजा जो कि मौसम की जानकारियाँ जैसे बारिश, तेज हवाएँ, ठण्ड़ी, गर्मी, तूफान वगैरह की जानकारियाँ मुहैय्या करता है लेकिन बारिश की दी गई जानकारियाँ ज्यादातर गलत साबित होती है। अब अगर हम बारिश होने वाली है या नहीं इसकी मालूमात करना चाहें तो कितना आसान काम है, अल्लाह तआला ने मौसम की तब्दीलियों को बताने के लिए मेंढ़क में यह कुवत डाल रखी है जो इस तरह है-घर कर किसी भी जगह पर एक जार में पानी भरकत उसमें एक मेंढक छोड़ दे जो कि उसमें आसानी से तैर सके और उसकी खुराक भी डाल दें। जब यह तैरता मेंठक अचानक तल पर दुबक कर बैठ जाए तो समझ लीजिए आने वाले ३-४ घंटो में बारिश होने वाली है। इस तरह मेंढक जो दुनियाँ वालो के लिए एक छोटा सा जन्तु है अल्लाह तआला ने उसमें यह कुवत दे रखी है कि मौसम में होने वाली

तब्दीलियाँ ३-४ घंटे पहले मालूम हो जाती है तो इन्सान करोडो रुपये खर्च करके भी सही जानकारी नही हासिल कर पा रहा है जबकि अल्लाह ने अपने एक अदना से मेंढक में मौसम की सही जानकारी देने वाली मशीन लगा दी है लेकिन यह ना शुक्र इन्सान अपने रब की तेअमतों को समझ नहीं पा रहा है और सूरे रहमान की आयतों (कोड़स) में एक ही आयत को बार बार दोहराने का यही मतलब है कि इन्सान सही रास्ते पर आ जाए और जाग जाए। आमीन सुम्मा आमीन!